ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

सर्वाधिकार सुरक्षित

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ।

"ब्रह्म सरोवर प्रसाद"

प्रस्तुत पुस्तक स्थान शिव आश्रम जस्सा राम रोड (हरिद्वार) तिथी ज्येष्ठ शुक्ला १ गुरुवार सम्वत् २०१७ तदनुसार २६ मई १९६० प्रातः समय प्रभु प्रेरणा से लिखनी आरम्भ की



लेखक

श्री० पूज्य पाद स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

प्रकाशक

श्री सत्संग सभा वडाला बम्बई न० ३१

भाद्रपद सम्वत् २०१७

पहली बार १०००

अथर्ववेद सामवेद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म

विषय सूची

संख्या विषय — पृष्ट

१—आवश्यक सूचना — १

२—समर्पण-धन्यवाद — ४

३—भूमिका-साधक की पुकार — ६-७

४—ब्रह्म सरोवर-वेद मन्त्रों का संग्रह — ९

५—ब्रह्म सरोवर प्रसाद-पहला उपदेश-मनुष्य धर्म कर्तव्य — २१

६—दूसरा उपदेश-वर्तमान गृहस्थावस्था और इसकी उन्नति के साधन। — ५५

७—तीसरा उपदेश-भूत-वर्तमान देश की अवस्था और इसकी उन्नति के साधन — ९८

८—सन्त समागम-प्रश्न उत्तर के रूप में — ११७

९—सन्तों की बाणी का संग्रह—प्रेम, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार पर — १३७

१०—कविता-सेवा धर्म सब से उत्तम धर्म है — १४९

मुद्रक—सुरेन्द्र कुमार कपूर के अधिकार में पञ्च-नद प्रैस. (प्राईवेट) लिमिटिड दुर्याना आबादी अमृतसर में छपी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म्

आवश्यक सूचना

यह "ब्रह्म सरोवर प्रसाद" पुस्तक कुछ प्रेमी सज्जनों की श्रद्धा, सात्विक भावना से की गयी सेवा से प्रकाशित हो रही है। यद्यपि प्रायः उन की यह इच्छा नहीं कि उन का नाम लिखा जाय और होना भी ऐसा ही चाहिए परन्तु लोक विचार से उन की सद् भावना को प्रकट करना कोई दोष भी नहीं है। अतः निम्नलिखित महानुभावों के शुभ नाम जिन्होंने प्रभु प्रेरणा उदारता श्रद्धा तथा निष्काम भावना से आर्थिक सेवा की है प्रकाशित किए जाते हैं। प्रभुदेव इन सब को अशीर्वाद दें कि वे सदा ऐसे निष्काम ज्ञान यज्ञ में अपनी कमाई का भाग डाल कर अपनी कमाई को पवित्र करते हुए प्रभु का अशीर्वाद प्राप्त करते रहें।

नोटः—बम्बई से चलते समय सत्संग सभा वडाला बम्बई न० ३१ रेलगाड़ी पर जब मुझे पहुंचाने आये तो चलती गाड़ी में प्रेमियों ने मेरी जेब में एक लिफाफा डाल दिया जब मैं ने उसे रास्ते में खोला तो उस में १०१ रु० थे। उन की श्रद्धा युक्त निष्काम भावना को देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ अतः यह पुस्तक श्री सत्संग सभा वडोला के नाम प्रकाशित की जाती है और जो सेवा वहां पर मेरी श्री ला० गिरधारी लाल जी तथा उन के परिवार ने श्रद्धा भक्ति भाव से की मेरे पास वह शब्द नहीं जो प्रकट कर सकूं मैं उन का बहुत आभारी हूं। प्रभु देव सदा उन्हें श्रद्धा भावना से भरपूर करते रहें।

(१) सत्संग सभा वडाला बम्बई नं० ३१ — १०१) रु०

(२) डा० नारायण दास जी आई स्पैशलिस्ट ड्रगस्टोर फैन्सी बजार गोहाटी। (आसाम) — ५१) रु०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(३) ला० गिरधारी लाल ला० हरबंस लाल जी गुप्ता वडाला बम्बई नं० ३१ — ५१) रु०

(४) ला० कुन्दन लाल जी व श्रीमती विद्यावती जी पेराडाईज़ हौज़री लुध्याना — ४१) रु०

(५) श्रीमती सुशीला देवी धर्मपत्नि ला० दीवान चन्द साहनी जवाहरनगर गोरेगांव हौस २७५ बम्बई ६२ — २५) रु०

(६) श्रीमति हंसरानी जी धर्मपत्नि डा० दीवानाथ जी बधावान चंदौसी जि० मुरादाबाद — २५) रु०

(७) ला० काहनचन्द जी अगरवाल बम्बई नं० ३ — २५) रु०

(८) ला० शान्तिनाथ जी हिमालय बूट हौस कनाट प्लेस नियू देहली — २५) रु०

(९) ला० राजा राम जी कपूर आनन्द भवन बडाला बम्बई ३१ — २१) रु०

(१०) श्रीमति सत्यवती जी धर्मपत्नि ला० संतरामजी बाग मुज़फ़रखां, आगरा शहर — २१) रु०

(११) श्रीमति कैलाशरानी धर्मपत्नि ला० गुरबखश राय जी भल्ला बाटा शू सैक्टर २२ A चण्डीगढ़ — २०) रु०

(१२) धर्म पत्नि ला० ओंकारनाथ मटौंगा बम्बई — १५) ,,

(१३) श्री जैसाराम जी डावर शू कम्पनी शू मारकीट आगरा — १५) ,,

(१४) ला० ज्ञान चन्द जी वर्मा छोटी अथाई नाई की मण्डी आगरा शहर — ११) ,,

(१५) ला० जागीरी लाल जी माडल टौन अमृतसर — ११) ,,

(१६) ला० नारायण दास जी हींग की मण्डी आगरा — १० ,,

(१७) ला० अर्जुन देव जी मेनेज़र दिल्ली क्लाथ मिल्ज़ आगरा शहर — १०) ,,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१८) धर्मपत्नि श्री हंस राज जी कपूर तेज वाटिका माडल टौन अमृतसर १०) ,,

(१९ ला० दौलत राम जी प्रधान आर्य समाज पटियाला १०) ,,

(२०) श्रीमति सरला देवी धर्मपत्नि श्री भीम सेन जी आर्य लुध्याना १०) ,,

(२१) श्री मती देवी धर्म पत्नी ला० मेघराज जी बंबई १०) रु०

(२२) श्री महेन्द्र कुमार जी गुप्ता मुज्ज़फ़र नगर १०) ,,

(२३) श्री मती परमेश्वरी देवी धर्म पत्नी ला० बिहारी लाल जी अबोहर मण्डी १०) ,,

(२४) श्री पं० राजेन्द्र देव जी शर्मा भूत पूर्व हैडमास्टर सैक्टर नं० २१ A चण्डीगढ़ १०) ,,

(२५) श्री मती विद्यावती जी तालवाड़ धर्म पत्नी B. N तालवाड़ इन्जनियर मुज्ज़फ़र नगर १०) ,,

(२६) श्री महेता राम चन्द जी अरजी नवीस नूरपुर (कांगड़ा) ११) ;,

(२७) श्री ओम प्रकाश जी श्री मती राम कली जी जम्मू १०) ,,

(२८) श्री सत्य पाल जी चन्दौसी ज़ि० मुरादाबाद १०) ,,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समर्पण

त्वदीयं वस्तु गोविन्द । तुभ्यमेव समर्प्यते

परम पिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से इस शिव आश्रम जस्साराम रोड हरिद्वार ज़िला सहारनपुर में चातुर्मास के पुण्य दिनों में यह पुस्तक तैयार हो सकी। यह वेद मन्त्रों के आधार पर लिखी गयी है। और वेद ब्रह्मवाणी है। अतः इस पुस्तक का नाम "ब्रह्मसरोवर प्रसाद," रखा गया है। इसी लिये प्रभु की प्रेरणामयी रचना भी उसी ब्रह्म स्वरूप परमात्मा के पवित्र चरणों में समर्पित है।

धन्यवाद

मैं उन महानुभावों का धन्यवाद करता हूँ कि जिन की पुस्तकों के स्वाध्याय से इस पुस्तक के निर्माण में कुछ सहायता मिली है। मेरे इस पवित्र कार्य अर्थात् पुस्तक के अनुवाद करने में सहयोग देने वाले सर्व श्री प० राजेन्द्रदेव जी शर्मा तथा पं० रत्नचन्द्रजी पं० अमर नाथ जी पं० रामकृष्ण जी पं० भगवान् दत्त जी शास्त्री तथा प्रकाशकों को प्रभुदेव आशीर्वाद दें मैं उन की इस निष्काम सेवा का हार्दिक धन्यवादी हूं।

मेरे इस व्रत में श्रद्धा, त्याग तथा सात्विक भावना से श्री ला० राम लाल जी चीफ इञ्जिनियर पावर हाऊस चंदौसी श्री ला० राम कुमार जी तथा उन की धर्म पत्नी श्रीमती जनक दुलारी जी श्री राम पाल जी खाण्ड सारी मुहल्ला रामनवमी श्रीमती हंस रानी धर्म पत्नी डा०दीनानाथ जी बचावान ला० परमेश्वरी दास जी चन्दौसी श्रीमती विद्यावती जी धर्मपत्नी बी० एन० तलवाड़ इन्जिनियर मुजफ्फर नगर श्री ला० विद्यारत्न जी,भारत स्टोर सैक्टर २२ चण्डीगढ़ तथा श्रीमती देवकीजी धर्मपत्नी राय साहिब श्री कृष्ण लाल जी रिटायर्ड S. D. O

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

एस डी०ओ०सैक्टर 7सी चण्डीगढ़ श्री ला गिरधारीलालजी अगरवाल तथा श्री ला०महेन्द्रकुमारजी कपूर वडाला बम्बई न०३१ मेरी आवश्य-कताओं को जान कर सहायता करते रहे हैं। मैं इन सब महानुभावों का अत्यन्त आभारी हूँ। प्रभुदेव से प्रार्थना करता हूँ वे सदा इन परिवारों की धर्म कार्यों में प्रवृति बनाये रखें और आनन्दित रखें।

इस पुस्तक से पहिले रचित पुस्तकें

भी स्वाध्यायशील सज्जनों को प्राप्त हो सकती हैं।

नाम पुस्तक	संख्या प्रतियों की जो छप चुकी हैं
(१) ब्रह्म यज्ञ प्रसाद	३०००
(२) देव यज्ञ प्रसाद	७०००
(३) पितृ यज्ञ प्रसाद	४०००
(४) अतिथियज्ञ प्रसाद	२०००
(५) नारी कर्तव्यप्रसाद	१०००
(६) नारीधर्म कर्तव्यप्रसाद	१०००
(७) प्रेम सुमन प्रसाद	२०००
(८) ब्रह्म प्रसाद	२०००
(९) भगवत यज्ञप्रसाद	१०००
(१०) अमृत प्रसाद	१०००
(११) ब्रह्म सुमन प्रसाद	१०००
(१२) ब्रह्म सोम प्रसाद	१०००
(१३) ब्रह्म पथ प्रसाद	१०००
(१४) ब्रह्म प्रकाश प्रसाद	१०००
(१५) यज्ञ प्रसाद	४०००
(१६) मौन यज्ञ प्रसाद	२०००
(१७) पारिवारिक सत्सङ्ग प्रसाद	३१०००
कुल	६५०००

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भूमिका

पाठक गण। मैं सदा प्रभु कृपा से प्रत्येक वर्ष शिमला या सोलन ही चौमासा के दिनों में मौन व्रत किया करता था परन्तु गत वर्ष व्रतकाल में (सोलन में) मुझे हृदय की धड़कन हो गयी थी । बहुत चिकित्सा करायी गयी परन्तु आराम न आने पर मुझे व्रतावस्था में ही चण्डीगढ़ पहुंच कर व्रत पूर्ण करना पड़ा। इस वर्ष भी व्रत सोलन ही करने का प्रबन्ध हो चुका था परन्तु डाक्टरों की सम्मति-कि पहाड़ पर व्रत इस वर्ष न करें क्योंकि पहाड़ की चढाई-उतराई के साथ वहां के जलवायु के अनुकूल न होने से वायु वेग बढ़ कर धड़कन अधिक हो जायेगी-को ध्यान में रख कर इस वर्ष मौन व्रत शिव आश्रम जस्सा राम रोड हरिद्वार जि० सहारनपुर में ही प्रभु-कृपा से ११-५-६० से चार मास के लिए आरम्भ किया गया।

सदैव व्रत में प्रभु-कृपा से एक नई पुस्तक प्रभु प्रेरणा से लिखा करता हूं और छप जाने पर भगवत्प्रसाद रूप में प्रेमियों की सेवा में भेंट की जाती है। इस वर्ष भी प्रभु की प्रेरणा से नई पुस्तक लिखी है। मैं सदैव व्रत काल में वेदों का पाठ करता हूँ। इस वर्ष व्रत में ऋषि दया नन्द कृत ऋग्वेद भाष्य का पाठ किया गया। ऋषि दया नन्द महाराज ने आर्य समाज के नियम बनाते हुए लिखा है कि वेद सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेदों का पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है, क्यों कि मेरा इस नियम पर अटल विश्वास है। इस वर्ष मैंने ऋगवेद भाष्य का पाठ करते हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित संग्रह किया है। पुस्तक के आरम्भ में इन मन्त्रों को ही लिख दिया है ताकि प्रेमी पाठक पहले पहल ब्रह्म सरोवर में डुबकी लगा लें अर्थात् वेद की अमृत वाणी कल्याणी ज्ञान यज्ञ का अध्ययन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करें। तदनन्तर वेद मन्त्रों के आधार पर कुछ उपदेश लिखे गये हैं। उन के पश्चात् सन्तों की वाणी का संग्रह करके लिखा गया है जो कि प्रेम, भक्ति, ज्ञान वैराग्य तथा सदाचार का प्रदर्शक है सन्त ही सच्चे कवि, सच्चे सन्देश वाहक और हम सब को प्रेम, ज्ञान और शान्ति का पाठ पढ़ाने वाले हैं और सन्त ही मानव जाति का प्राण हैं। सन्त ही संसार रूपी पादप के अमृत फल हैं। वे ही सभ्य समाज को प्रकाश देने वाले प्रदीप हैं और पाप ताप से पीड़ित मानव जाति को ऊपर उठाने वाली शक्ति हैं। अतः सन्त महात्माओं को हम नत मस्तक होकर कोटि कोटि प्रणाम करते हुए धन्यवाद देते हैं।

विनीत
ब्रह्मानन्द स्वामी
मारफत-पता—
भारत गलास कम्पनी सदर बाज़ार
देहली
टेलीफून नं० २६६८०



ओ३म्

साधक की प्रभु से पुकार

नं० १

प्रभु याचक तेरे दर का हूँ,
क्यों दर्श दिखाना भूल गए।
मुद्दत से आँख लगाई है,
क्यों भिक्षा दिलाना भूल गए॥ प्रभु।
तेरे दर का हूँ दरवेश पिता,
हृदय में करो प्रवेश पिता।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

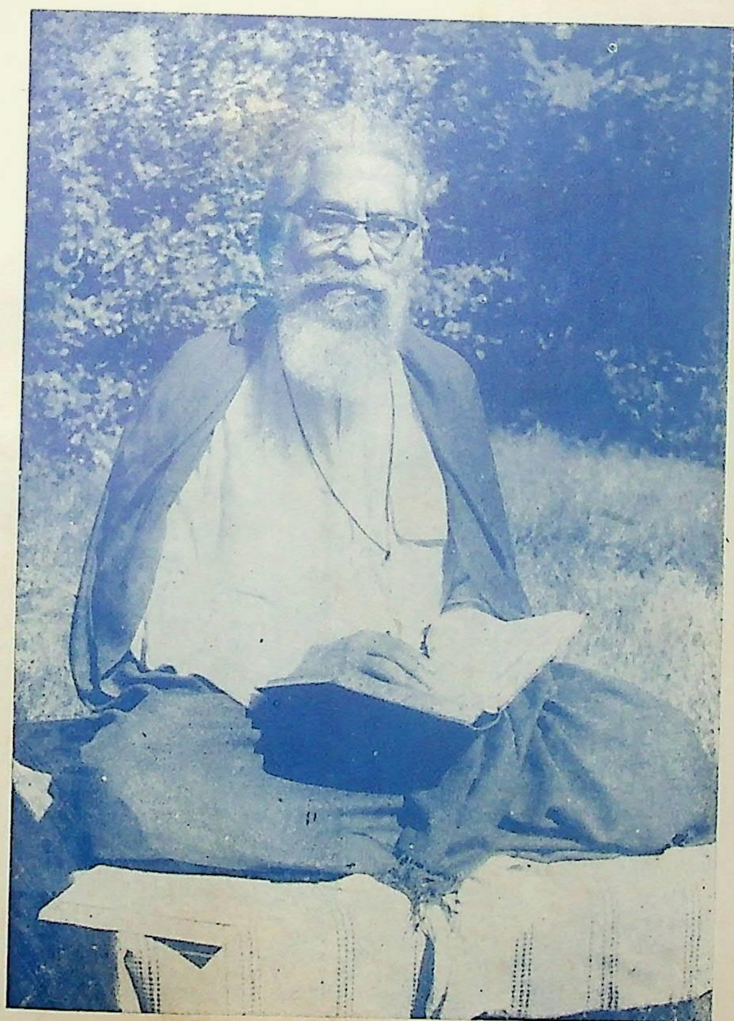
मन मन्दिर में आकर भगवन्,
क्यों ज्योत जगाना भूल गये ।। प्रभु....
जो तेरे दर पर आता है,
वह खाली कभी नहीं जाता है ।
इस भूले भटके बालक को,
क्यों राह दिखाना भूल गए ।। प्रभु....
अबोध बालक जान पिता,
कीजो शीघ्र कल्याण पिता ।
मेरे अवगुण भगवन क्षमा करो,
क्यों बिगड़ी बनाना भूल गए ।। प्रभु....
चढ़ती जाती जलधारा है,
और काफी दूर किनारा है ।
मेरी डगमग नैया डोल रही,
क्यों पार लगाना भूलगए ।। प्रभु....

नमस्कार

हे ईश्वर करुणा के धाम, बार बार तुझ को प्रणाम ।
सब से सूक्ष्म सब से महान, नमस्कार तुझको भगवान् ।।
अजर अमर अविनाशी स्वामी, घट घट वासी अन्तर्यामी ।
व्याप रहे हो भीतर बाहर, बार बार तुझ को प्रणाम ।।
तुम हो सागर मैं हूं मीन, तुम दाता हो मैं अति दीन ।।
अपनी भक्ति का दो दान, नमस्कार तुझको भगवान ।।
सुख शान्ति का होवे राज, मिट जाएं सब दुःख संताप ।
सारे विश्व का हो कल्याण, नमस्कार तुझ को भगवान ।।
हृदय के खोलो द्वार, दूर करो अज्ञान-अन्धकार ।
सत्य विद्या का हो प्रकाश, यही विनय है मेरी नाथ ।।
(भगवान)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि
धियोयोनः प्रचो दयात्



श्री० पूज्य पाद स्वामी ब्रह्मा नन्द जी महाराज

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भाद्रपद सम्वत् २०१७

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नमस्कार

करता हूँ मैं बन्दना, नत शिर बारम्बार,
तुझे देव परमात्मन, मंगल शिव शुभकार ।।
अंजली पर मस्तक किए, विषय भक्ति के साथ ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ ।।
दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक ।
तुझ को हो प्रणाम मम, शत शत कोटी अनेक ।।
पाप हरण मंगल करण, चरण शरण का ध्यान ।
धार करू प्रणाम मैं, तुझ को शक्ति निधान ।।
ज्योतिमय जगदीश हे, तेजो मय अपार ।
परम पुरुष पावन परम, तुझ को हो नमस्कार ।
सत्य ज्ञान आनन्द को, परम धाम श्री भगवान ।।
पुलकित हो मेरा तुझे, होवे बहु प्रणाम ।

विनीत

"वेद मंत्रों का संग्रह"

ओ३म्

" ब्रह्म सरोवर "

वेद ज्ञान की शुभ ज्योत्स्ना से कर लो आलोकित निज मन,
मनुष्य जन्म सफल करने का एक मात्र है यही साधन ।

ओ३म् अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः ।। ऋ० १-१२-१२

अर्थात्—दिव्य विद्याओं के प्रकाश होने से देव शब्दों से वेदों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का ग्रहण किया है जब मनुष्य लोग सत्य प्रेम के साथ वेद वाणी से जगदीश्वर की स्तुति करते हैं। तब वह परमेश्वर उन मनुष्यों को विद्या दान से प्रसन्न करता है।

ओ३म् सप्तत्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य।

शोचिष्केशं विचक्षण ॥ (ऋ० १।५०।८)

भावार्थः—हे मनुष्यो ! जैसे रश्मियों के बिना सूर्य का दर्शन नहीं हो सकता। वैसे ही वेदों को ठीक २ जाने बिना परमेश्वर का दर्शन नहीं हो सकता ऐसा निश्चय जानो।

ओ३म् सनः सिन्धुमिव नावयातिवर्षा स्वस्तये। अप नः शोशुचदघम् ॥ (ऋ० १।९७।८)

भावार्थः—जैसे पार कराने वाला मल्लाह सुख पूर्वक मनुष्य आदि को नाव के द्वारा समुद्र पार कराता है। वैसे ही तारने वाला परमेश्वर विशेष ज्ञान से दुःख सागर से पार करता है। और वह शीघ्र सुखी करता है।

ओ३म् युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पति चर्षणिप्राः। विवस्वतः सदने अस्य तानि विप्रा उक्थेभि कवयो गृणन्ति ॥

(ऋ० ३।३४।७)

भावार्थः—उन्हीं को धार्मिक और विद्वान् जानना चाहिए जो राजा आदि की झूठी स्तुति को त्याग कर धर्म सम्बन्धी कर्मों की प्रशंसा करते हैं और वे ही राजा होने के योग्य हैं जो धर्म युक्त आचरण करते हैं।

ओ३म् को अद्धा वेद क इह प्रवोचद् देवी अच्छा पथ्या का समेति। ददृश्र एषा मवमा सदांसि परेषुया गुह्येषु व्रतेषु ॥

(ऋ०३।५४।७

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भावार्थः—इस संसार में बिरला ही ऐसा मनुष्य होता है, जो परमात्मा को जान और उसकी आज्ञा के अनुकूल आचरण स्वीकार करके सत्य का उपदेश देता है। ऐसा कोई विद्वान् जो इस संसार में इस लोक और परलोक का ज्ञाता हो।

ओ३म् इदमापः प्रवहत यत् किंचित् दुरितं मयि। यद्वाह मभि दुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्॥ (ऋ० १।१३।२२)

भावार्थः—मनुष्य लोग जैसा कुछ पाप व पुण्य करते हैं,सो सो ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था से उनको प्राप्त कराता है।

ओ३म् आपो अद्यान्व चारिषं रसेन समगस्महि। पयस्वानग्न आगहि तं मासं सृज वर्चसा॥ ऋ (१।२३।१३)

भावार्थः—सब प्राणियों को पिछले जन्म में किये हुए पुण्य व पाप का फल वायु, जल, अग्नि आदि पदार्थों के द्वारा इस जन्म में व अगले जन्म में प्राप्त होता है।

ओ३म् सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा। विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः॥ (ऋ०१।२३।२४)

भावार्थः—जब जीव पिछले शरीर को छोड़ कर अगले शरीर को प्राप्त होता है, तब उसके साथ जो स्वाभाविक अग्नि है वही फिर शरीर आदि पदार्थों को प्रकाशित करता है। जो जीवों के पाप पुण्य और जन्म का कारण है उसको वे ही परमेश्वर के सिवाय कोई नहीं जानते हैं किंतु परमेश्वर तो निश्चय के साथ यथा योग्य जीवों के पाप व पुण्य को जान कर उन के कर्म के अनुसार शरीर दे कर सुख दुःख का भोग कराता है।

ओ३म् मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः। सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा विश्वाँ अग्ने सहसा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रास्यन्यान् ॥ (ऋ० ५।१।८)

भावार्थः—वे ही अतिथि होवें जो इन्द्रियों के दमन करने और मङ्गलाचरण करने वाले धर्म निष्ठ विद्वान् जितेन्द्रिय और सब के श्रेय साधन में प्रीति करने वाले होवें और जैसे अग्नि सब को शुद्ध करने वाला है वैसे सम्पूर्ण जगत् को पवित्र करने वाले अतिथि जन हों।

ओ३म् स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः। येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ॥ (ऋ० १।५६।३)

भावार्थः— अति उत्तम विवाह वह है जिस में तुल्य रूप स्वभाव युक्त कन्या और वर का सम्बन्ध होवे परन्तु कन्या से वर का बल और आयु दुगनी व ड्योढ़ी होनी चाहिये।

ओ३म् उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत। अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः ॥ (ऋ० १।९२।३

भावार्थः—जो सूर्य की किरणें भूगोलादि लोकों का सेवन अर्थात्, उन पर पड़ती हुई क्रम से चलती जाती है, वे प्रातः और सायं काल के समय भूमि के संयोग से लाल हो कर बादलों को लाल कर देती हैं और जब ये प्रातःकाल लोकों में प्रवृत्त अर्थात् उदय को प्राप्त होती हैं तबतब प्राणियों को सब पदार्थों के विशेष ज्ञान होते हैं। जो भूमि पर गिरी हुई लाल वर्ण की हैं वे सूर्य के आश्रित हो कर और उस को लाल कर औषधियों का सेवन करती हैं। उन का सेवन जागृत अवस्था में मनुष्यों को करना चाहिए।

ओ३म् त्रीण्यायूंषि तव जातवेदस्तिस्र आजानीरुषसस्ते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अग्ने । ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वानथा भव यजमानाय शं यो

(ऋ० ३।१७।३)

भावार्थः—जो मनुष्य चिर काल पर्यन्त ब्रह्मचर्य नियत भोजन, विहार आदि से आयु बढ़ाने की करे तो वे त्रिगुण अर्थात् तीन सौ वर्ष तक जीवित हो सकता है।

ओ३म् ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् । आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ॥

(ऋ ३-६१-६

भावार्थः-जो लोग रात्रि के चौथे पहर में जाग कर ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करके उत्तम गुणों और ऐश्वर्य को मांगते हैं वे पुरुषार्थ से अवश्य उस को प्राप्त होता है।

ओ३म् शुचिमर्कैर्बृहस्पति मध्वरेषु नमस्यत । अनाम्योज आचके ।

(ऋ ३-६२-५)

भावार्थः—जो मनुष्य वेदार्थ के जानने वाले अध्यापक और उपदेशकों को नमस्कार और सत्कार करते हैं। वे पवित्र विद्वान हुए बल को प्राप्त होते हैं।

ओम् न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरापितरा नू चिदिष्टौ । अधा मित्रो न सुधितः पावकोऽग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु ॥

(ऋ ४-६-७

भावार्थः—हे मनुष्यो। जिस पुत्र के विद्यमान रहने पर माता पिता को दुःख होता है तथा सत्कार नहीं होता। वह भाग्य हीन निरन्तर पीड़ित होता है। जिस पुत्र की उत्तम सेवा से माता पिता प्रसन्न होते हैं। उसकी प्रजाओं में प्रशंसा और उसी को सुख होता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् क्रियत् स्विदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत् पितुर्जनितुर्यो जजान। यो अस्य शुष्मं मुहुकैरियर्तिवातो न जुतःस्तनयद्धिरभ्रै॥

(ऋ ४-१७-१२)

भावार्थः—जो मनुष्य माता और पिता का कितना उपकार है ऐसा जान कर प्रत्युपकार करते हैं। वे मेघ वायु से प्रेरित बिजली के सदृश बल को प्राप्त होकर बार बार शत्रुओं को जीत कर यशस्वी होते हैं।

ओ३म् को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वा भवति वस्त उस्राः। क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रातरं वष्टि कवये कऊती॥

(४-२५-२)

भावार्थ—जो मन वचन कर्म से नम्र होता है। जो किसी के तुल्य प्रकाश स्वरूप व्यवहार युक्त जो जगदीश्वर के साथ मित्रता करता है। तथा सब के साथ भ्रातृत्व की रक्षा करता है। जो विद्वानों का हित करता है। वही सम्पूर्ण इष्ट फल को प्राप्त होता है।

ओ३म् स इत्क्षेति सुधित ओकसि स्वे तस्मा इला पिन्वते विश्वदानीम। तस्मै विशः स्वयमेवा नमन्ते यस्मिन् ब्रह्मा राजनि पूर्व ऐतिं॥

(ऋ ४-५०-८)

भावार्थ— जो मनुष्य अन्य सब का त्याग करके एक परमेश्वर की हीआप लोग सेवा करें तो आप लोगों में लक्ष्मी, राज्य, प्रतिष्ठा यश सदा ही निवास करें॥

ओ३म् उत ब्राह्मणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः। तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्द दहन्नहि पापिवां इन्द्रो अस्य॥

(ऋ० ५-२९-३)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भावार्थ—जो मनुष्य सब वेदों को पढ़कर न खाने योग्य न पीने योग्य वस्तु को त्याग करके न्यायाधीश के सदृश न्याय और सूर्य के सदृश सत्य, ऐसे सत्यता के प्रकाशक महाशय कहलाते हैं।

ओ३म् आत्वेता निषी दतेन्द्रमभि प्र गायत । सखायः स्तोमवाहस ॥ (ऋ १-५-१)

भावार्थ—जब तक मनुष्य हठ, छल और अभिमान को छोड़ कर सत्य प्रीति के साथ परस्पर मित्रता करके परोपकार करने के लिए तन, मन और धन से यत्न नहीं करते तब तक उनके सुखों और विद्या आदि उत्तम गुणों की उन्नति कभी नहीं हो सकती।

ओ३म् परिपूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम् । पुनर्नो नष्टमाजतु ॥ (ऋ ६-५४-१०)

भावार्थ—इस लोक में जो देने वाला है वही उत्तम है। जो लेने वाले हैं वे अधम हैं और जो चोरी से प्राप्त करने वाला है वह निकृष्ट है, यह जानना चाहिए।

ओ३म् आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥ (ऋ १-५-७)

भावार्थ—ईश्वर ऐसे मनुष्यों को आशीर्वाद देता है कि जो मनुष्य विद्वान परोपकारी होकर अच्छी प्रकार नित्य उद्योग करके इन सब पदार्थों से उपकार ग्रहण करके सब प्राणियों को सुख युक्त करता है वही सदा सुख को प्राप्त होता है। अन्य कोई नहीं।

ओ३म त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यतस्रुचे भवसि श्रवाय्यः । य आहुतिं परिवेदा वषट्कृतिमेकायुरग्रे विश आविवाससि ॥

ऋ० १-३१-५

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भावार्थः—मनुष्यों को उचित है कि पहले जगत का कारण ब्रह्म ज्ञान और यज्ञ की विद्या में जो क्रिया जिस २ प्रकार के होम करने योग्य पदार्थ हैं, उन को अच्छी प्रकार जानकर उन की यथा योग्य क्रिया जानने से शुद्ध वायु और वर्षा जल की शुद्धि के निमित जो पदार्थ हैं उन का होम अग्नि में करने से इस जगत में बड़े २ उत्तम २ सुख बढ़ते हैं, और उन से सब प्रजा आनन्द युक्त होती है।

ओ३म पुनः पुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना।
श्वघ्नीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः॥

ऋ० १-९२-१०

भावार्थः—जैसे छिप के वा देखते २ भेड़िया की स्त्री वृकी बन के जीवों को तोड़ती है और जैसे बाज़िनी उड़ते हुए पखेरुओं का नाश करती है वैसे प्रातः समय की वेला सोते हुए हम लोगों की आयु को धीरे २ अर्थात दिनों दिन काटती है।

ऐसा जान कर आलस्य छोड़, हम लोगों को रात्रि के चौथे प्रहर में जाग कर धर्म और परोपकार आदि व्यवहारों में नित्य उचित वर्ताव रखना चाहिये जिन की इस प्रकार की बुद्धि होवे लोग आलस्य तथा अधर्म में कैसे प्रवृत्त हो सकते हैं।

ओ३म् ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः।
अस्माभिरुनु प्रतिचक्ष्याभूदो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान्॥

(ऋ० १।११३।११)

भावार्थः—जो मनुष्य उषा के पहले प्रहर में शयन से उठ कर आवश्यक कर्म कर के परमेश्वर का ध्यान करते हैं वे बुद्धिमान् और धार्मिक होते हैं। जो स्त्री-पुरुष परमेश्वर का ध्यान करके प्रीति से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आपस में बोलते चालते हैं वे अनेक प्रकार के सुखों को प्राप्त होते हैं।

ओ३म् अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम्। अपश्यं जायाममहीयमानामधा मे श्येनो मध्वा जभार॥
(ऋ० ४।१८।१३)

भावार्थः—हे राजन जो पुरुष और स्त्री व्यभिचार करें उनको तीव्र दण्ड देकर नाश करें।

ओ३म् दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥ (ऋ० ४।३९।६)

भावार्थः—हे मनुष्यो! जो राजा सुगन्ध आदि से युक्त घृत द के होम से वायु वृष्टि जल आदि को पवित्र करके सब के रोगों का निवारण करके अवस्थाओं को बढ़ाता है और प्रयत्न से सब प्रजाओं का पुत्र के समान पालन करता है। वह हम लोगों को पिता के सदृश सत्कार करने योग्य है।

ओ३म् अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमुदन्।
क्षीरेण स्नातः कुयवस्य योषे हते ते स्यातां प्रवणे सिफायाः॥
(ऋ० १।१०४।३)

भावार्थः—जो प्रजा का विरोधी राजपुरुष वा राजा का विरोधी प्रजा पुरुष है वे दोनों निश्चय है कि सुखोन्नति को नहीं पाते। और जो राज पुरुष पक्षपात से अपने प्रयोजन के लिये प्रजा पुरुषों को पीड़ा देकर धन इकट्ठा करता है। तथा जो पुरुष चोरी व कपट आदि से राज धन नाश करता है। वे दोनों जैसे एक पुरुष की दो पत्नी आपस में कलह करके क्रोध से नदी के बीच गिर कर मर जाती हैं। वैसे ही शीघ्र विनाश हो जाता है। इससे राज पुरुष प्रजा के साथ और प्रजा पुरुष राजा के साथ विरोध छोड़ कर परस्पर सहकारी हो कर सदा अपना वर्ताव रक्खें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् उत त्या यजता हरी कुमारात्साहदेव्यात् । प्रयता सद्य आददे ॥ (ऋ० ४।१५।१८)

भावार्थ—जब विद्यार्थी और विद्यार्थिन पढ़ने के लिये जावें तो उनको चाहिए कि वे प्रतिज्ञा करें कि हम लोग धर्म युक्त ब्रह्मचर्य से आपके अनुकूल वर्ताव से विद्या का अभ्यास करेंगे और मध्य में ब्रह्मचर्य व्रत का लोप न करेंगे । अध्यापक लोग भी यह प्रतिज्ञा करें कि हम निष्कपटता से विद्या दान करेंगे ।

ओ३म् यस्य मा पुरुषाः शतमुद्धर्षयन्त्युक्षणः । अश्वमेधस्य दानाः सोमाइव त्र्याशिरः ॥ (ऋ० ५।२७।५)

भावार्थः—जो विद्या की इच्छा करें वे सब मर्म भेदने वाली वाणिएं सहें और चन्द्रमा के सदृश शान्त होके विद्या और विनय को ग्रहण करें ।

ओ३म् गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत् । ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुधर्तवो निदः ॥ (ऋ० ५।८७।६)

भावार्थः—हे विद्वान् जनो ! आप लोग विद्या के प्रचार नामक व्यवहार के प्रचार से धर्म सम्बन्धी कार्यों को करके अन्यों से भी करो और निन्दा आदि दोषों से मनुष्य को पृथक् करके परमेश्वर की ओर प्रवृत करो और स्वयं भी ऐसे होवो ।

ओ३म् वृञ्जेह यन्नमसा वर्हिरग्ना वयमि स्रुग्घृतवती सुवृक्तिः । अभ्यक्षि सद्म सदने पृथिव्या अश्रायि यज्ञः सूर्ये न चक्षुः ॥ (ऋ० ६।११।५)

भावार्थः—जैसे हवन करने वाले जन अग्नि में स्रुवा से घृत छोड़ते हैं वैसे ही विद्वान् जन अन्य की बुद्धि में विद्या को छोड़ें जैसे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सूर्य के प्रकाश में नेत्र व्याप्त होता है वैसे ही हवन किया गया द्रव्य अन्तरिक्ष में व्याप्त होता है।

ओ३म् नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठै ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः। यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ (ऋ० ७।४०।७)

भावार्थः—जो भूमि के तुल्य क्षमा शील, लक्ष्मी के तुल्य उपकार करने वाली विदुषी पढ़ाने वाली होवे सब कन्याओं को पढ़ा कर सब स्त्रियों को उपदेश से आनन्दित करें!

ओ३म् एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्रिषोऽत्यो न योषामुदयंस्त भुर्वणिः। दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोग मृभ्वसम्॥ (ऋ० ।१।५६।१)

भावार्थः- उपदेशक अपने तुल्य स्त्री के साथ विवाह करके जैसे आप पुरुषों को उपदेश और बालकों को पढ़ाते हैं वैसे उसकी स्त्री स्त्रियों को उपदेश और कन्याओं को पढ़ावें।

ओ३म् कियात्या यत्समया भवाति या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान्। अनुपूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति॥ (ऋ० १।११३।१०)

भावार्थः—कितने समय तक उषा काल होता है सूर्योदय से पांच घड़ी पूर्व कौन स्त्री सुख को प्राप्त होती है? जो अन्य विदुषी स्त्रियों और अपने पति के अनुकूल रहती है। वह स्त्री प्रशंसा को भी प्राप्त होती है। जो कृपालु होती है वह स्त्री पति को प्रसन्न करती है जो पतियों के अनुकूल बरतती हैं। वे सदा सुखी रहती हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म् श्रुतं गायत्रं तकवानस्याहं चिद्धि रिरेभाश्विना वाम् । आक्षी शुभस्पतीदन् ॥ (ऋ० १।१२०।६)

भावार्थः—मनुष्य को चाहिए कि जो २ उत्तम विद्वानों से पढ़ा व सुना है। उस २ को औरों को नित्य पढ़ाया और उपदेश किया करें। मनुष्य जैसे औरों से विद्या पावें वैसे ही देवें। क्योंकि विद्या दान के समान कोई और बड़ा धर्म नहीं है।

ओ३म् इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रे यशसं कृधी नः ॥ (ऋ० ७।४२।५)

भावार्थः—जब अतिथि आवे तब गृहस्थ अर्घ्य पाद्य आसन मधुपर्क प्रिय वचन और अन्नादिकों से उसका सत्कार कर फिर पूछ कर सत्य असत्य का निर्णय करें। अतिथि प्रश्नों के समाधान देवें।

ओ३म् द्विषो नो विश्वतोमुखाति नावेव पारय । अप नः शोशुचदघम् ॥ (ऋ० १।९७।७)

भावार्थः—जैसे न्यायाधीश नाव में बैठा कर समुद्र के पार अथवा निर्जन जंगल में डाकुओं को रोक कर प्रजा की पालना करता है वैसे ही अच्छी प्रकार उपासना को प्राप्त हुआ ईश्वर अपनी उपासना करने वालों के काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, रूपी शत्रुओं को दूर कर जितेन्द्रियता आदि गुण देता है।

ओ३म् येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥ (ऋ० १।५०।६)

भावार्थः—परमेश्वर की उपासना के बिना किसी मनुष्य को विज्ञान व पवित्रता का होना सम्भव नहीं हो सकता। इस से सब मनुष्यों को एक परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म्

पहला उपदेश

"मनुष्य धर्म कर्तव्य"

"ब्रह्म सरोवर प्रसाद"

ओ३म् ॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव॥

य० अ० ३० मं ६

भावार्थ—हे उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव युक्त परमेश्वर आप हमारे सब दुष्ट आचरण और दुःखों को दूर कीजिए तथा जो भद्र कल्याणकारी धर्मयुक्त आचरण और सुख हैं उन को हमारे लिए अच्छी प्रकार उत्पन्न कीजिए।

पाठकवर्ग, महर्षि दयानन्द महाराज जी ने इस मंत्र को वेदों का भाष्य करते समय वेद के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में लिखा है। यह ऋचा ऋषि को बहुत प्रिय थी। क्योंकि उन्होंने इस मंत्र का साक्षात्कार किया। वह कैसे ? संसार के प्राणीमात्र के दुर्गुण, दुर्व्यसन, कुचेष्टाओं को लेकर अमृत पान कराया। कई बार उन्हें विष दिया गया परन्तु ऋषि ने विषदाता को अमृत दिया। उन का जीवन चरित्र साक्षी है।

यदि हम हृदय से इस वेद मंत्र के अनुसार उस परम पिता परमात्मा का आराधन करते अथवा करें तो निःसन्देह दुःख सागर को पार कर उस दिव्य परमपद को प्राप्त कर सकते हैं। पर हम ऐसा न कर प्रतिदिन सुख कामना करते हुए दुःख के सागर में गिरे हुए हैं। खेद है कि सांसारिक विषय विकारों का ग्रास हम उस परमसुख को प्राप्त किये बिना ही इस मंगलमय संसार को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दुःख का घर जान कर छोड़ो-छोड़ो की पुकार करते हुए पुरुषार्थहीन होकर अनमोल जीवन को दुःखमय बना लेते हैं। और अन्त में सिवाय पश्चाताप के कुछ नहीं सूझता है। संसार की ऐसी दुरवस्था का अवलोकन कर एक भक्त जिज्ञासु के हृदय में वैराग्य की चिन्गारी जगमगाई। वह चिन्तित है कि किस प्रकार उस परमानन्द को प्राप्त किया जाए। इस मानसिक विचार धारा में प्रवाहित होकर नाना प्रकार के तीर्थों की यात्रा प्रारम्भ करता है परन्तु उन तीर्थों के अधिष्ठाता मोक्ष के ठेकेदारों, साधु सन्तों के दर्शन तथा सङ्ग करने पर उन को स्वार्थ, ईर्ष्या व द्वेषाग्नि में ग्रस्त हुआ देखकर अतिव्याकुल होकर आत्मघात करने को उद्यत हो जाता है परन्तु अकस्मात सामने आते हुए-हाथ में कमण्डल तथा बगल में मृगचर्म दबाए और तेजस्वी मस्तकवाले, पूर्णशान्त चित्त संन्यासी को देखकर नतमस्तक होकर नमस्कार करता है। महात्मा ने उस श्रद्धालु, आत्मविश्वास के उच्चादर्श रूप जिज्ञासु की मधुर मुस्कान का अवलोकन कर उसे आशीर्वाद देते हुए पूछा-प्यारे! कैसे चिन्तित हो और किस धुन में लीन हो। कुशल तो है? कवि लिखता है:—

घायल की गति-घायल जाने और न जाने कोय।

अर्थात्—दुखी की अवस्था को दुखी ही जान सकता है सुखी क्या जाने?

कदरे ज़र ज़रगर बदानद क़दरे जौहर जौहरी

अर्थात—स्वर्ण की जाँच तो स्वर्णकार ही कर सकता है जब तक हृदय में पूर्णतया व्याकुलता न हो, उस शान्त सरोवर से शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। कवि कहता है:—

जिन ढूंडा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।

CC-0. Late Pt. Mahmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

मैं बांवरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ ॥

हम तो सागर के तट पर खड़े रहकर ही हीरे-मोती लेना चाहते हैं। इस लिये सफलता असम्भव है चाहे अनेकों जन्म जन्मान्तरों तक खड़े रहो। सफलता तो उसको ही प्राप्त होगी जो अपने को गुम करेगा और वही उसे पाएगा !

हो मुयस्सर क्यों कर उस, पड़दा नशीं का देखना।
है जो पड़दा दरमयां, वह उसने उठवाया नहीं ॥
खुदी जबतक रहे इन्सान में, उसको वह पाता नहीं।
यह पड़दा उठ गया दिल से, तो पाए वह पड़दा नशीन ॥

—०—

उस पर कुरबां कि, जिसने तेरी आवाज़ सुनी।
सदके उस आँख के, जिस ने तेरा जलवा देखा ॥

—०—

महात्मा की इस पवित्र दयामयी रसनायुक्त वाणी को श्रवण कर जिज्ञासु का हृदय गदगद हो उठा। नेत्रों से जलधारा बहनी आरम्भ हो गयी उच्च स्वर से रुदन प्रारम्भ होगया।

महात्मा— प्यारे, बताओ क्या समाचार है। धैर्य धरो। ज़रा अपने मानसिक विचारों को प्रकट तो करो, तुम्हारी मानसिक इच्छा क्या है।

जिज्ञासु— (महात्मा जी के अमृतवचन सुनकर अपनी करुणकथा प्रारम्भ करता है) भगवान! मैंने सत्संगियों और सत्यपुरुषों के उपदेशों में सुना है कि यह संसार दुःख का घर है और परमात्मा ही परम सुख का धाम है। अतः मनुष्य को चाहिये कि इस मानव तन को प्राप्त कर उस परमेश्वर के दुर्लभ दर्शनों को प्राप्त करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का यत्न करे। बस, इसी खोज में मैंने अनेक तीर्थाटन किये। साधु सन्तों की कुटियों के द्वार खट खटाए, परंतु कहीं भी आत्म पिपासा को शान्त न कर सका। अतः अब आत्मविसर्जन का ही निश्चय किया था कि प्रभु की अपार कृपा हुई उसके फल स्वरूप अग्रिमजन्म सुधारार्थ ब्रह्मसरोवर पथप्रदर्शक आप जैसे संत महात्मा के दर्शन हुये। मुझे आशीर्वाद प्रदान करें ताकि मेरे प्राणों का विसर्जन शान्तिपूर्वक हो।

महात्मा – (जिज्ञासु की इस पवित्र विचार धारा को सुनकर) प्यारे! तुम्हारी इस आत्म पिपासा की शान्ति उस ब्रह्म सरोवर के पास है, मैं उसके तुच्छ रूप में इस आत्म पिपासा की शान्ति के साधनों का वर्णन करता हूं। यदि आप इन पर आचरण करेंगे और प्रभु कृपा हुई तो क्षण में ही वह ब्रह्म सरोवर आप को शान्ति प्रदान कर देंगे।

भक्त जनों के संकट दशा में दूर करे।

जिज्ञासुः – (बीच में ही बोल उठा) महाराज लोग कहते हैं

मानवरतन दुर्लभ भयो, मिले न बारंबार।

बन फल पाके भू गिरे, बहुरि न लागत डार॥

महाराज! यह मानव तन दुर्लभ कैसे है? सोना, जागना खाना, पीना तथा सन्तान उत्पन्न करना सब योनियों में समान है परन्तु मेरे विचार में तो मनुष्य की अपेक्षा पशु अच्छे हैं क्योंकि जब से प्रभु ने इस संसार की रचना की है तब से ही जो घास खाने वाले हैं आज तक घास खाते चले आ रहे हैं तथा जो मांसाहारी हैं वे मांस ही खाते चले आ रहे हैं। सृष्टि के आरम्भ से आज तक अनंत समय बीत चुका है परन्तु इन पशुओं का खाने पीने का नियम निरन्तर वैसे ही चला आ रहा है। इसी प्रकार संतान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उत्पन्न करने का नियम भी वैसे ही चला आ रहा है। नर और मादा यथाकाल ही सन्तान उत्पन्न करने के लिए इकट्ठे होते हैं। जब गर्भस्थिति का ज्ञान हो जाता है तब वे पूर्ण रूप से गर्भ की रक्षा करते हैं। अपनी मर्यादा को भंग न करने के कारण पशु मनुष्यों से कहीं अच्छे हैं। इनके परोपकार के विषय में भी संत ने क्या ही उत्तम कहा है—

पशु मरे दस काज संवारे, नरु मरे कछु काम न आवे।

इन बातों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि पशु तो उस महाप्रभु की आज्ञा अनुसार नियम का पालन करते हैं। किन्तु मनुष्य न तो प्रभु की आज्ञानुकूल खान-पान करे, न ही यथा समय सन्तान उत्पन्न करे और सदा प्रभु आज्ञा का भंग करता रहे। इस से तो यही अच्छा था कि मनुष्ययोनि की अपेक्षा पशु योनी ही प्राप्त करते। चाहिये तो यह था कि हम पूर्व जन्म के किये हुए अपने अच्छे तथा बुरे कर्मफल भोग कर अपने भार को हल्का करते हुए उज्ज्वल सुख ले कर परमपिता परमात्मा के द्वार को प्राप्त करते। किन्तु इस के विपरीत मानव तन को प्राप्त करके भी पूर्व जन्म का फल भोगते हुए हम ने जहां अपने बोझ को हल्का किया वहां साथ साथ इतने अधिक पापों की गठड़ी भी सर पर धर ली है कि जो जन्म-जन्मान्तरों तक हमारा पीछा न छोडेगी अतः मेरे हृदय में यह बात घर कर गई थी कि बहुत ही अच्छा होगा यदि मैं अपने ऐसे निकमे जीवन का अन्त कर दूँ। इन सब बातों का ध्यान करके मैं आप से प्रार्थना करता हूं। कृपा करके मुझे यह सुलझाने का कष्ट करें कि यह मानव जन्म कैसे दुर्लभ है और कैसे सफल हो सकता है।

महात्माः—यह आप का कथन सत्य है कि पशु तथा मनुष्य को खाने-पीने, सोने-जागने और संतान उत्पन्न करने में बड़ा भारी अंतर पाया जाता है परन्तु विद्वानों ने सब योनियों में जो समानता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बतलाई है वह केवल भोगों के भोगने में ही है। मनुष्य और पशु का भेद देखिए:—

मनुष्य	पशु
१. मनुष्य जन्म लेते समय माता के गर्भ से सर के बल आता है और उसे हाथों पर लिया जाता है।	१. पशु जन्म लेते ही टांग के बल बाहिर जमीन प गिरता है।
२. मनुष्य भोग और कर्म ये दोनों कार्य करता है।	२ पशु केवल भोगप्राप्ति के का करता है।
३. मनुष्य स्वभाव और इरादे में दोनों अवस्थाओं में कर्म करने और भोग भोगने में स्वतन्त्र होता है।	३. पशु भोग भोगने और क करने में परतंत्र होता है।
४. मनुष्य शुभ और अशुभ कर्म करने से ऋषि और राक्षस बन सकता है।	४. पशु अपनी योनि में रहता है और उन्नति न कर सकता।
५. मनुष्य का बच्चा जन्म लेते समय माता के चरणों में नमस्कार करता हुआ आता है जिस से मनुष्य का सर ऊंचा हो अर्थात बुद्धि से उत्तम कर्म करके ऊंचा हो।	५, पशु के बच्चे का स जन्म से ही भूमी पर रह है। नाक रगड़ कर भोग प्रा करता है। परतंत्र रह है।
६. मनुष्य की मृत्यु सदाचार के न रहने से होती है।	६. पशु की मृत्यु शरीर त्याग पर होती है।
७. मनुष्य परिग्रह आवश्यकता से अधिक करता है।	७. पशु अपरिग्रह करता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

८. मनुष्य दूसरों की कमाई को खाता है।

८. पशु अपनी कमाई खाता है और दूसरों के लिये भोग छोड़ता है।

९. मनुष्य सन्तान उत्पन्न करता ही रहता है चाहे निर्वाह हो या न हो। संतान नेक हो या बद।

९. पशु संतान उत्पन्न करता है और उस को साथ ही कमाना भी सिखाता है।

१०. मनुष्य संतान के मोह वश अपने जीवन को खो देता है।

३०. पशु मोह रहित होते हैं। बच्चे चरने-चुगने योग्य होते है तो उन्हें जुदा कर देते हैं।

११. मनुष्य संतान से स्वार्थ के लिए हित करता है।

११. पशु निःस्वार्थ हो कर हित करता है।

१२. मनुष्य के यहां लड़की उत्पन्न हो जावे तो मातम छा जाता है। लड़का उत्पन्न होने पर खूब खर्च करके खुशियां मनाता है।

१२. पशुओं में यह अवगुण नहीं। वह समान रूप से दोनों को प्यार करता है!

१३. मनुष्य लड़के को बार बार दूध पिलाता है लड़की को नहीं अपितु यदि बच जाए तो उसे दे देता है।

१३. पशु अपनी नर अथवा मादा संतान को समानरूप से दूध पिलाता है।

१४. मनुष्य का सम्बन्ध जन्म जन्मान्तर तक रहता है।

१४. पशु का सम्बन्ध अलग हो जाने पर समाप्त हो जाता है।

१५. मनुष्य सांसारिक भोगों को भोगता हुआ नित्य रोगी

१५. पशु पक्षी जंगलों बनों तथा पर्वतों में रहते हुए बीमार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रहता है । हस्पतालों की शरण जाता है ।

नहीं होते किन्तु मनुष्यों के संग में आकर बीमार होने लगते हैं । अतः इन के लिये भी हस्पताल बनाने पड़ते हैं ।

१६. मनुष्य की खुराक उचित अनुचित अनेक प्रकार की है ।

१६. पशु की खुराक एक जैसी ही है । जो चीज़ खाने की है वही खाएगा अन्यथा नहीं । जैसे=शराब, भंग, तम्बाकू, अफीम आदि नहीं खाते ।

१७. मनुष्य नियत स्थान पर टट्टी पेशाब आदि करते हैं ।

१७. पशु जहां-तहां टट्टी पेशाब कर देता है ।

१८, मनुष्य में शक्ति और तेज है ।

१८. पशु में शक्ति है परन्तु तेज नहीं है ।

१९. मनुष्य को प्रभु ने हाथ, बुद्धि और वाणी दी है ।

१९. पशु को नहीं दी ।

आहार निद्राभय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभीः नराणाम् ।
धर्मो हितेषां एको विशेषः धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

अर्थात्—खाना सोना भोगना, मनुष्य और पशु समान ।
ज्ञान नर अधिकता, ज्ञान विन पशु जान ॥

अर्थात् ज्ञान और धर्म ही मनुष्य की विशेषता है । मनुष्य बुद्धि बल से-जड़ देवता शेर-चीता अजगर आदि को वश में कर सकता है ।

राज्य बल से विद्वान् बलवान् धनवान् मनुष्यों को वश में कर सकता है ।

प्रेम और सेवा बल से मनुष्य भगवान को वश में कर लेता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है और जन्म से अपने माता पिता को वश किया होता है।

मनुष्य जन्म परमात्मा कर्मानुसार देता है मनुष्य अपनी इच्छानुसार जन्म नहीं ले सकता।

जीवन को मनुष्य स्वयं बनाता है। ऐसा करने में यह स्वतंत्र है।

जड़ पदार्थ अपनी उन्नति के लिये सजातीय परमाणुओं के खींचते हुए बढ़ते हैं। जैसे-एक भूमि के टुकड़े में गन्ना बोया गया तो वह भूमि से गन्ने के परमाणु लेकर उन्नति करता है। इसी प्रकार गंदुम, बाजरा, ज्वार, करेला, निम्बु; आदि आगे बढ़ते हैं। गन्ना मिठास के परमाणु करेला कड़वे परमाणु और निम्बु खट्टे परमाणु संग्रह करता है। परंतु मनुष्य जीवन की उन्नति के लिए परमाणुओं को नहीं खैंचता किन्तु नाशवान शरीर के पालन-पोषण के परमाणु संग्रह करने में रातदिन लगा रहता है।

मनुष्य मन्दिर मस्जिद शिवालय गुरद्वारा गिरजाघर आदि बनावेगा-दूसरों के लिये, परंतु अपने मनमन्दिर के परमाणु संग्रह नहीं-करता। जो जन्मजन्मान्तर से अवगुणों के चक्र में फंसा हुआ है।

जीवन जीवित ज्योति है। जैसे ज्योती से ज्योति जगती है। अनेकों ज्योतियां जगजाने पर भी कमी नहीं होती अपितु बढ़ती है। जीवन से जीवन बढ़ता है। सदा आत्म कल्याण के लिये आत्मवेत्ता तत्त्वदर्शी ब्रह्मवेत्ता को सन्मुख रक्खे। परन्तु वर्तमान काल में भगवान राम-कृष्ण इत्यादि की मूर्तियां पूजी जाती हैं किन्तु उन जीवन को अपना आदर्श नहीं रक्खा जाता।

परिणाम स्वरूप संसार दुःखी है। प्रभु नित्य ज्योतित हैं किन्तु मनुष्य उसकी ज्योति से अपनी आत्मा को नहीं जगाता। जैसे-भगवान राम भगवान कृष्ण, संत गुरु नानकदेव, ऋषि विरजानंद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

महर्षिदयानंद, संत कबीर आदि ने ज्योति प्राप्त करके अपनी आत्मा को परम ज्योतित किया।

चार प्रकार के उपासक

१. जैसे नदी में तिनका बह रहा है। चौबीसों घण्टे पर्यन्त उस दरिया के पानी के ऊपर तैरता रहता है वैसे वर्तमान भक्त चौबीसों घण्टे भजन में लगे रहते हैं परन्तु तिनके की भान्ति खुश्क।

२. नदी के अन्दर पत्थर डाला, कई वर्षों पड़ा रहा, जब निकाला तो वही पत्थर का पत्थर। कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। कठोर हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता।

एक गृहस्थी ने साधु को कहा कि हरिद्वार यात्रा को चलें। साधु ने कहा कि मैं नहीं चलता मेरा तूंबा ले जाओ। इस को पानी में डुबकी लगवा लाना। में जलपान करूंगा।

गृहस्थी उसे डुबकी लगवा कर वापस ले आया तो साधु ने पूछा पानी तो है ही नहीं, इसी प्रकार वाह्य डुबकी लगी परन्तु वह खुश्क रहा।

३. एक कपड़े की गुड़िया पानी में डाल दो। वह तर बतर हो गई जब उसको बाहर निकाला तो सारा निचोड़ निकल गया। वह गुड़िया सूख गयी, पुनः अकड़ गयी, इसी प्रकार जिसने भक्ति रस पाया। संसार में उस का मान बढ़ा। जब मान बढ़ा तो पूजा छोड़ दी।

४. सच्चा उपासक—एक मिस्री की डली पानी में डाल दो-तो मिस्री पानी ही में रम गयी। सारा पानी मीठा ही मीठा होगया। परन्तु मिस्री ने अपनी सत्ता मिटा दी। ऐसे भगवान का भक्त रस से भरा होता है।

आनन्द प्राप्ति का साधन

प्रेम-प्यार-सहानुभूति-नेकी-मिलन सारी-निष्पक्षता-मधुर भाषण-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निष्काम सेवा-मितव्ययता-आदि इन सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर दया और कृपा के ऊखल में कूटें उन्हें नम्रतारूपी जल में मिश्रित करें। त्याग और संयम के चुल्हे पर चढ़ा कर दरदे दिल की आग से जोश दें,फिर उतार कर सद भावना के वस्त्र से छान लें और नेक दिली की खांड मिलाकर बरादरीभाव के प्याले में डालकर पीवें। और मसालहत की बिस्तरे पर विश्राम करे।

खुराक=भलाई-पवित्रता-न्याय-और सत्य।

निषेध!—बुरे विचार, घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, लालच, कुदृष्टि, बदले की भावना, पक्षपात, सताना, धोखा, मक्कारी; फरेब, झूठ, धूर्तता, झगड़ा, फिसाद, अत्याचार इत्यादि से बचना।

प्रयोग कर देखिये पुनः फल निश्चित है। कवि लिखता है

इक जान होके चलते हैं, मैं-तू-को छोड़ कर।
उलफत की रह में, दो की गुज़र नहीं॥

———

अपने मन में जो बीज सदा, शिवसंकल्पों-कलियों से बोता है।
वह जीवन सफल बना करके, जग में आनन्द पाता है॥

जन्म तो पशुपक्षियों का भी होता है। शुभगुणों से मनुष्य जन्म को उत्तम माना गया है। क्यों कि भगवान ने इन्सान को ही ऐसी बुद्धि दी है जिस में विवेक शामिल है। वैसे बुद्धि तो हर पशु पक्षी को भगवान ने दी है, और उन की बुद्धि के चमत्कार से इन्सान भी हैरान है जैसे—स्काटलैंड से मंगवाए हुए पोलीस के कुत्ते मनुष्य की भी बुद्धि को मात कर रहे हैं। 'जहां मनुष्य की बुद्धि नहीं पहुँच सकती वहां ये कुत्ते पहुँच जाते हैं। अखबारें साक्षी हैं कि इन कुत्तों ने कितनी चोरियां पकड़वाईं। और हत्यारों की खोज की। पालतू पशु, कुत्ते, बकरी, गाय, घोड़ा इत्यादि को यदि आप जंगल में छोड़दें

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तो वे अपने आप घर पहुँच जाएंगे। इस को स्वाभाविक बुद्धि कहते हैं। मगर विवेक बुद्धि-जिस से मनुष्यों के ज्ञान की उपवृद्धि होती है और जिस ज्ञान को पाकर भगवान् का साक्षात् दर्शन किया जाता है वह ज्ञान केवल मनुष्य जन्म में ही प्राप्त हो सकता है। और यही मानव जन्म की विशेषता है अन्यथा खान-पान भोगादि में मनुष्य और पशु एक समान हैं। एक हिन्दी का कवि लिखता है:—

मानस के चोले का मिलना, बच्चों का सा खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं॥

ऐसा उत्तम जीवन पाकर भी यदि हम जीवन को सुखी नहीं बना सकते तो एक जीति हुई बाज़ी को हार रहे हैं। इस जन्म को हम कौडियों के बदले बेच डालते हैं। ज़रा ध्यान दें। कवि कहता है:—

मनुष्य जन्म दुर्लभ है मिले न बार बार।
कौड़ी बदले बेच न इतना हृदय विचार॥

यह मनुष्य जन्म ही है जिस के सहारे मोक्ष तक की प्राप्ति के साधन अपनाए जा सकते हैं। यदि अधिक नहीं तो कम से कम इतना तो प्रत्येक मनुष्य को यत्न करना चाहिये कि आवागमन के चक्र में पड़कर भी मनुष्य जन्म तो हाथ से न जाए। यह जीवन क्षण भंगुर कहलाता है। कवि लिखता है:—

गई एक पल भी जो हाथों से छूट।
तो माला गई श्वास मनकों की टूट॥

तू आलम गीर शोहरत का है मालिक, तो फिर क्या
है दुनिया भी फते कर ली अगर तूने, तो फिर क्या
तू कारों के खज़ाने पर भी है काबिज, तो फिर क्या
फ़ज़ीलत में यक़ताए ज़माना है, तो फिर क्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तेरा जीवन ही निष्फल है, गर तूने न ख़ुद को पहचाना।
न जाना अपने आप को तू ने, तो फिर क्या।

इसी लिये इस मनुष्य जीवन की वास्तविकता और महत्ता को जानने और समझने की आवश्यकता है।

मरने की बाद की अवस्था को कवि के शब्दों में सुनिये

जाते हैं जो उधर, तो फिर आते इधर नहीं।
जाकर वहां से भेजते, कोई ख़बर नहीं॥
इधर था जिन से बिछुड़ना, पलभर के वास्ते।
उन की फिर आके कोई भी, लेता खबर नहीं॥
हैं आगे-पीछे जारहे, आँखों के सामने।
दिल पर हमारे इस का मगर कुछ भी असर नहीं॥
क्या इन मुसाफिरों का सखी, पूछते हो हाल।
ले जाते अपने साथ जो, ज़ादे सफ़र नहीं॥

जिज्ञासु—भगवन! यह बात मैंने भली प्रकार समझ ली है कि किस प्रकार यह मानव तन दुर्लभ है। और किस भांति यह सफल हो सकता है। अब यह बतलाने का कष्ट कीजिए कि ज्ञान बोधक कम किस प्रकार किये जा सकते हैं।

महात्मा:-ज्ञान बोधक कर्म करने के लिये चार पदार्थों का ज्ञान होना परमावश्यक है। और इन चार पदार्थों को प्राप्त करने के लिये ही मनुष्य जन्म मिला है। वे चार पदार्थ ये हैं।

धर्म। अर्थ। काम। मोक्ष।

इन का ज्ञान मनुष्य को यदि हो जाए तो उसकी संसार यात्रा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सफल हो जाती है। वह भगवान के दरबार में उज्ज्वलमुख लेकर उपस्थित हो सकता है।

जिज्ञासु:—धर्म के विषय में लोगों के अनेक प्रकार के विचार हैं। ऐसी अवस्था में जिज्ञासु के लिये धर्म का निर्णय करना बड़ा कठिन कार्य है। अतः मुझ मंद मति को धर्म का उपदेश कीजिए।

महात्मा:—धर्म के विषय में जो लोग विवाद करते हैं वह भूल करते हैं। धर्म मनुष्य मात्र के लिये एक ही है और कल्याण कारी है। इस का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण ही मनुष्य दुःख उठा रहा है और पाप के गढ़े में गिर रहा है। तथा एक दूसरे को हानि पहुंचा रहा है। परमात्मदेव अपनी अमृतवाणी कल्याणी वेदवाणी के द्वारा उन को धर्म मार्ग पर चलने का आदेश करते हैं।

ओ३म् सगच्छध्वं सवदध्वं सवो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सजानाना उपासते॥ ऋ० १०-१९-२

अर्थात्-हे मनुष्य, यदि संसार मार्ग से पार होना चाहते हो तो परस्पर एक दूसरे के साथ मिलकर चलो। प्रेम के सूत्र में बन्ध जाओ। आप के मानसिक विचार परस्पर एक दूसरे के सहायक हों। जैसे आपके पूर्वज महर्षिगण परस्पर एक दूसरे की रक्षा करते हुए अपना जीवन यापन करते थे। ठीक उसी प्रकार आप लोग भी अपनी जीवन यात्रा को सुचारु रूप से पूर्ण करने का यत्न करें। आप के पूर्वजों ने आप के लिये जिस धर्म का उपदेश दिया है। उस का मनसा-वचसा तथा कर्मणा पालन करें। वेद कहता है:—

ओ३म यमग्ने वाजसातमत्वं चिन्मन्यसे रयिम।
तं नो गीर्भि श्रवाय्यं देवत्रा वनया यूजम॥ ऋ० ५-२०-१

अर्थात—यही धर्मयुक्त व्यवहार है कि जैसी इच्छा अपने लिए होती है वैसी ही दूसरे के लिए करें। और जैसे प्राणी अपने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लिए दुःख की इच्छा नहीं करते हैं और सुख की प्रार्थना करते हैं। वैसे ही अन्य के लिए भी उनको बर्ताव करना चाहिए। कवि लिखता है—

कभी भूल कर किसी से न करो सलूक ऐसा।
कि जो तुम से कोई करता तुम्हें नागवार होता॥

धर्म के सम्बन्ध में किसी विद्वान ने ठीक कहा है कि—

कृते प्रवर्तते धर्मश्चतुष्पात्तज्जनैर्धृतः।
सत्यं, दया, तपा, दानं, इति पादा, विभो नृप॥

अर्थात्—धर्म के चार चरण हैं, सत्य, दया, तप तथा दान-इन में सर्व प्रथम पद सत्य को दिया गया है। परन्तु वर्तमान राज्यकाल में इसका लोप हो रहा है। यदि आप किसी व्यक्ति को सत्य बोलने को कहें तो उत्तर मिलेगा कि सत्य बोलना तो सत्ययुग का धर्म था। इस कलिकाल में सत्य का व्यवहार लाभ की अपेक्षा हानिकारक सिद्ध हो चुका है अतः आप का कथन त्यागने योग्य है। आज का मानव समाज बड़ी तीव्र गति से असत्य मार्ग का अनुयायी बना हुआ है। मन में कुछ और तथा वाणी में कुछ और तथा कर्तव्य में कुछ और ही है। किसी महात्मा ने कहा है—

जे जन्मे कलिकाल कराला, करतब्य बायस भेष मराला।
चलें कुपथ वेदमग छोड़ें कपट कलेवर कलिमल घोड़े॥

वह समय पापमय होता है जिस समय लोगों के भेस हंसों जैसे होते हैं परन्तु कर्तव्य कौओं के से होते हैं। सो आज कल भी वही समय आया हुआ है। सब के हृदय भक्तिरस से प्लावित हैं। सभी धर्मात्मा प्रतीत होते हैं। मुसलमानों को देखें तो वे दिन में पांच बार नमाज पढ़ते हैं। इधर हिन्दुजन भी अहर्निश यथामति धर्मकार्य में लगे हुए हैं। सिक्ख लोग अपने गुरु ग्रन्थ साहब के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पाठ में लगे हुए हैं। आर्यजन अपने आर्य मन्दिरों में नित्यप्रति सन्ध्यावंदना करते हैं। ईसाई गिरजाघरों में अपने इष्ट देव का चिंतन करते हैं। अर्थात जिस ओर भी आप दृष्टिपात करेंगे उसी ओर आप को धर्म निष्ठा और धर्म निष्ठितजन उपलब्ध होंगे। परन्तु जब हम धर्म के परिणाम का चिन्तन करने लगते हैं तो निराश होकर हमें कहना पड़ता है कि संसार में पाप ही हो रहा है क्योंकि धर्म का फल सुख और शान्ति होता है और यहां दोनों का ही सर्वथा अभाव है। इस के विपरीत दुःख ही जो कि पाप का फल है दिन रात बढ़ता ही बढ़ता चला जाता है इस लिये कहना पड़ता है कि लोगों का भेष हंसों का है और कर्तव्य कौओं के। लोगों ने वैदिक मर्यादा को त्याग कर कुमार्ग ग्रहण किया हुआ है। कुपथ-ग्रहण कर छल कपट का जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया हुआ है। अतः धर्म के प्रथम चरण सत्य पर निर्दयता से कुठाराघात करते हुए लोगों ने इस की जड़ को ही उखाड़ दिया है जिस के परिणामस्वरूप प्रजा पर दुःख का पहाड़ टूट पडा है। सत्य पर आचरण करने वाले भगवत्प्रेमियों के जीवन को पढ़िये—महाराजा हरिश्चन्द्र जी का जीवन आपके सम्मुख है। वह सत्य का पुजारी—राज्यपाट को तो पहले ही ब्राह्मण के हवाले कर चुका था। परन्तु इस यज्ञ की समाप्ति पर जब दक्षिणा का प्रश्न सामने आया तो महाराजा हरिश्चन्द्र ने कहा—

बेचि देह, दारा, सुअन, होई दास हुसंद।
रखि है निज वच सत्य करि, सत्यवीर हरिचन्द ॥

अर्थात्—लीज़िए भगवान्, मैं अपने आपको अपनी धर्मपत्नि को तथा अपने पुत्र को आपके अर्पण करता हूं। जो धन प्राप्त होगा वही आप की दक्षिणा होगी। मेरा यज्ञ पूर्ण होगा। महाराजा हरिश्चन्द्र के यह नम्र तथा युक्तियुक्त वचन सुनकर वह ब्राह्मण देवता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उन तीनों को साथ लेकर काशी पहुंचे। और महाराज को एक चण्डाल के घर तथा राजकुमार और रानी को एक ब्राह्मण के घर बेच डाला। ब्राह्मण देवता अपनी दक्षिणा के टके पूर्णकर चला गया। महाराजा हरिश्चन्द्र उस चाण्डाल की आज्ञानुसार कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। नित्यप्रति गंगा से जल लाकर पशुओं को पानी पिलाते हैं और मुरदों का कर वसूल करते हैं। भोजन का प्रबन्ध चाण्डाल द्वारा एक दुकान पर कर दिया गया है। वहां जाकर राजा हरिश्चन्द्र भोजन कर लिया करते थे और पुनः अपने कार्य में जुट जाते थे। एक बार जब भोजन लेकर हरिश्चन्द्र गंगा तट पर पहुँचे और भोजन करने के लिये उद्यत हुए इतने में ही एक अतिथि पधारते हैं और भोजन की याचना करते हैं।

भला जिस राजा हरिश्चन्द्र ने राजपाट को लात मार दी उस के लिए भोजन का त्याग देना कौन सी बड़ी बात थी। वह अतिथि के सम्मुख भोजन रखकर उसे ग्रहण करने की प्रार्थना करते हैं। और स्वयं भूखे ही अपने कार्य पर चले जाते हैं। इसी प्रकार निरंन्तर सात दिन अतिथि के अकस्मात भोजन के समय आजाने पर हरिश्चन्द्र महाराज इसी प्रकार अतिथि सेवा करते रहे। सातवें दिन चाण्डाल ने राजा से कहा—भाई हरिये पशु प्यासे हैं इन को पानी पिलाओ। एक ओर भूख सता रही है दूसरी ओर अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना भी आवश्यक कर्तव्य है। किया जाए तो क्या किया जाए। स्वामी की आज्ञा को शिरोधार्य समझ कर राजा डयूटी पर जुट जाते हैं। परन्तु सात दिन तक कुछ न खाने के कारण राजा भरे हुए मटकु को उठाने में असमर्थ हैं क्योंकि शरीर का आधार तो अन्नही है। जब तक शरीर में अन्न का प्रवेश नहो गा, तब तक शरीर किसी भी कार्य को कैसे कर सकता है। इसी लिए किसी महात्मा ने कहा है—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भूख में कामिनी काम तज देत हैं।
भूख में सिद्ध की बुद्ध हारी है ॥

इस लिए क्षुधापीड़ित हरिश्चन्द्र सोच रहे हैं कि क्या किय
जाए कोई सहायक आजाए तो इस घड़े को सर पर रखवादे ताकि
अपने कार्य में सफल हो जाऊं। भगवान् से प्रार्थना करते हैं—हे प्र
दयानिधे। कृपा करो। कोई सहायक भेजो जो कि मेरे इस कार्य
सहायक हो सके। राजा आंखें बंद किये प्रभु के ध्यान में मग्न हैं
कवि लिखता है:—

चुपके चुपके जो सदा, दिल से किया करते हैं।
निश्चय ही उस की वो, मन्जूर किया करते हैं।
बारगाहे ईश से, मायूस न होना चाहिये।
तू तो इन्सान है वह च्यूंटी की भी सुना करते हैं।

उधर से महारानी शैव्या भी ब्राह्मण की यज्ञक्रियार्थ गंगा—ज
और समिधा के लिए गंगातट पर पहुंची तो क्या देखती है कि देव
घड़ा पानी से भरा पड़ा है और स्वयं प्रभु भक्ति में लीन हैं। जब अप
पूज्य पति देव के देह की ओर निहारती है तो देखती है कि शरी
निर्बल हो चुका है। मुख आभा हीन है और बड़ी ही दीन दशा
गंगा किनारे आंखे मूंदे खड़े हैं। पति देव की इस हीन दशा
अवलोकन कर महारानी को अपने पूर्व दाम्पत्य जीवन का स्मरण
जाता है। और बड़े दुख भरे शब्दों में कहती है। भगवान। वह
समय था जब पतिदेव राज सिंहासन पर विराजमान थे और इन
शारीरिक अवस्था कैसी उत्तम थी। आज वह महाराज नदी तट
पानी के घडे को सम्मुख रख कर (आप के) चिंतन में मग्न हैं। देख
से जान पड़ता है कि इन के हृदय में कोई भयानक चिन्ता है। जो
को अत्यन्त दुखी कर रही है। अच्छा भगवन्! आप की प्रेरणा यथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कर्त्ता हुआ करती है। आप की प्रेरणा से जो कुछ होता है। अच्छा ही होता है। प्रभु ! आप का समय विभाग पूर्ण और अपूर्व है। और हम तुच्छ जीवों का समय विभाग अधूरा है। हम सोचते कुछ हैं किन्तु होता कुछ और ही है। अतः आप के उद्देश्य के प्रति मनुष्य को सर झुकाना ही पड़ता है सम्पत्ति का अवलोकन कर मनुष्य को अभिमान के समुद्र में डूब नहीं जाना चाहिए, क्यों कि यह माया स्थिर नहीं किन्तु चंचला है यह वही तो महाराज हैं जिन के चरणों में संपदा ठोकरें खाती फिरती थी। आज वही महाराज रोटी तक के मुहताज हैं। बड़े बड़े महाराजाओं की मुकुट मणियां जिन के चरणों का चुम्बन करतीं थीं आज महाराज एक चाण्डाल के दास हैं। और उदासीन तथा मलिन मुखमुद्रा में आप की आराधना में संलग्न हैं। भगवान् ! यह भी लीला आप की अद्भुत है।

महारानी इसी प्रकार अपनी तथा पतिदेव की पूर्व तथा वर्तमान दशा का चिंतन कर रही थी कि अकस्मात् पतिदेव की आंख खुल पड़ती है। वह क्या देखते हैं कि सम्मुख शैव्या खड़ी है। महाराज रानी को देखकर बड़े खुश होते हैं। और कहते हैं:—

श्रीमती जी ! प्रभु ने बड़ी कृपा की है कि उस ने मेरी ही जीवन संगिनी को मेरी सहायतार्थ यहां भेज दिया है अतः मैं उस महा प्रभु का बारंबार धन्यवाद करता हूं।

रानी कहती है—भगवन् ! आप इस भांति खड़े क्यों हैं ? आज तक मैंने आपकी ऐसी दीन अवस्था का अवलोकन कदापि नहीं किया था। जो आज मुझ अभागिन को यह अवस्था देखनी पड़ी है। इसका कारण क्या है कृपा बताइये तो सही, महाराज कहते हैं।

देवी ! सर्वदा भगवान अच्छा ही करते हैं। मैं भारी शंकट में हूँ। आप मेरी सहायता करें ताकि मैं इस महान् संकट में से मुक्त होकर सफल मनोरथ हो सकूं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रानीः—भगवन् ! ऐसा कौन सा क्लेश है कि जिस ने आप के धैर्य को विचलित कर दिया है। मैं इस समय आपकी सहायता करने में बेबस हूँ। महाराज उत्तर देते हैं।

सात रोज़ की भूखने, निर्बल किया शरीर को।
धर्मपालन के लिए तट पर हूँ आया नीर को।
स्वामी की आज्ञा मान कर पानी का भर लिया घड़ा।
उठाने को समरथ नहीं देखूं सहायक को खड़ा।

हे देवि ! मैं सात दिन से निराहार हूँ। अन्न के बिना शरीर निर्बल हो चुका है। उधर स्वामी का आदेश है कि पशु प्यासे हैं। गंगा जल लाओ। देवि ! अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करने के लिए चल पड़ा। और गंगा तट पर आकर पानी का घड़ा भी भर लिया। किन्तु निर्बलता के कारण उसे उठाने में असमर्थ हूं। अतः आप की सहायता के लिए याचना की है जिससे कि मैं इस कार्य को पूर्ण कर कृतार्थ हो सकूं।

रानी:—भगवन् ! घबराइये नहीं परीक्षा का अवसर है। सम्पत्ति विपत्ति सदा नहीं रहती। जो आज सम्पन्न है वह कल भिक्षुक बन सकता है जो आज भिक्षुक है वह कल पृथ्वीपति हो सकता है। इस विषय में एक कवि ने लिखा है:—

संसार में किसका समय है, एक सा रहता सदा।
हैं निशिदिवासी घूमती, सर्वत्र विपदा संपदा।
जो आज इक अनाथ है, नर नाथ कल होता वही।
जो आज उत्सव मग्न है, कल शोक से रोता वही॥

धर्म है प्यास जाव से, यही करो विचार।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

धर्म ही सब नर नारी का, है सब सुख आधार ॥

सावधान हूजिए ! प्रभु आप की परीक्षा ले रहे हैं। इतना कह सती फिर कहती है—

पहले तो मेरा आपका, सम्बन्ध एक विचित्र था ।
आप थे पति मैं थी पत्नी, शुद्ध एक चरित्र था ॥
धर्म के हित आप जैसे, स्वामी आज्ञा पालिक हैं ।
कैसे करूं मैं, सहायता न पास मेरे मालिक हैं ॥

हे भगवन् ! इस समय अवस्था भिन्न है। आप चाण्डाल के पास बिक चुके हैं, तथा मैं ब्राह्मण के घर बिक चुकी हूं। अतः आप का स्वामी चाण्डाल है और मेरा ब्राह्मण है । आप का धर्म जैसे अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना है वैसे ही मेरा धर्म अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना है। यदि मेरे स्वामी यहां पर होते और मुझे आज्ञा प्रदान करते तो आप का घड़ा मैं उठवा देती । हां एक उपाय बता देती हूं। आप घड़े को लेकर गहरे पानी में चले जाएं। जहां आप के गले तक पानी आ जाए वहाँ आप केवल थोड़े से परिश्रम से घड़े को सिर पर उठा सकेंगे। बस इससे अधिक मैं आप की कोई सहायता करने को असमर्थ हूं। क्योंकि परमात्मा अन्तर्यामी हैं। सब स्थानों में परिपूर्ण हैं। आप के तथा मेरे सभी कार्यक्रम का उसे ज्ञान है। इतना कह कर रानी चली गई ।

यह प्रसङ्ग कह कर महात्मा ने कहा:—

महात्मा—प्यारे ! पूर्वकाल के भक्तों का जीवन आपके सम्मुख रक्खा है। इससे आप को ज्ञान हो गया होगा कि सत्यव्रत निभाने के लिये भक्तों को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं।

आजकल मनुष्यों का जीवन आराम का जीवन बन चुका है। सत्यरक्षार्थ तो कष्ट उठाने पडते हैं। उन के लिए ऐसा सत्यमय जीवन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कौन व्यतीत कर सकता है अतः सुख शान्ति कैसे प्राप्त हो । वेद भगवान् कहता है—

ओ३म् ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वी ऋतस्य धीति र्वृजिनानि हन्ति । ऋतस्य श्लोको बधिरततर्द; कर्ण बुधानः शुचमान आयो । ऋ० ४।२३।८

अर्थात्—सत्य की शोक निवारक सम्पत्तियां सनातन हैं सत्य का धारण करना पापों का वर्जनीय वस्तुओं का नाश, कर देता है । सत्य की जगाने वाली और दीप्यमान आवाज़ बहिरे मनुष्यों के कानों में भी जबरदस्ती पहुंच जाती है ।

प्यारे! सत्य के माहात्म्य को देखो—सत्य वह सनातन ईश्वरीयबल है जिस से शोक रुक जाता है । एक बार सत्यज्ञान हो पर संसार के सब शोक घोर से घोर दुःख खेल दीखने लगते हैं अनादि काल से जो भो कोई शोक से पार हो गये हैं उन सब को किसी न किसी प्रकार सत्य ज्ञान की ही प्राप्ति हुई थी, किसी भी वर्जनीय वस्तु अथवा पाप से छुटकारा चाहते हो तो सत्य का सहारा लो सत्य के धारण करते ही मनुष्य में और कोई बुराई नहीं रह सकती जितनी हद तक हम में सत्य की कमी होती है उतनी ही मात्रा में हमारे अन्दर बुराई को स्थान मिल सकता है । अतएव जो पूरा सत्यवादी है उस में बुराई ठहर ही नहीं सकतो । अतः केवल इतना ही दृढ़ संकल्प करो कि हम सत्य का ही पालन करेंगे तो इस से हमारे अन्दर की सब बुराईयां, दुर्गुण, अवगुण, वस्तुएं (आखिर यह वस्तुएं पाप ही है और कुछ नहीं) स्वयं नष्ट हो जायेंगी ।

यदि हम सत्याचरण वाले हैं तो हमारी प्रत्येक बात विरोधी को भी अवश्य माननी पड़ती है और हमारी सचाई का अवश्य उस पर प्रभाव पड़ता है । सच्ची आवाज़ शुचमान होती है । उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

एक तेज होता है इसलिये यह जगाने वाली बुधान होती है। इस तेज के सामने स्वार्थी मनुष्यों को (जो कि अपनी स्वार्थ हानि के डर से सचाई को अनसुनी करना चाहते हैं) अपने कानों के दरवाज़े खोलने पड़ते हैं। सचाई ऐसी जगाने वाली शक्ति होती है कि जो अज्ञान के कारण अभी समझ नहीं रहा है, उसमें चेतना और जागृति उत्पन्न कर देती है। सच्ची आवाज़ सीधी हृदय में जा पहुँचती है जहां सत्य की सुनाई पहले असम्भव प्रतीत होती थी वहां भी अन्त में सत्य को मानना पड़ता है। सचमुच ही सचाई बहरे कानों को भी घेर कर अन्दर घुस जाती है।

सत्य सदा तुम राखियो, धन जाए तो जाए।
सत्य की बांधी लक्ष्मी फिर मिलेगी आय॥

शान्ति प्रत्येक मनुष्य चाहता है। वह तीन प्रकार की होती है—

तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण।

१. तमोगुणी शान्ति—मशीनगन, तोप, तलवार आदि की शक्ति से शान्ति स्थापित कराना।

२. रजोगुणी शान्ति—किसी को धमकी देकर डरा फिसला कर शान्ति कराना। शान्ति आवाज़ से होती है। स्वार्थी शान्ति—यथा दूसरे को कैद करा दिया और अपनी शान्ति समझी परन्तु यह अस्थायी शान्ति है। वास्तव में शत्रुता अधिक बढ़ेगी।

३. सतोगुणी शान्ति—आदर, प्रेम, प्यार, मधुर वाणी कोमल हृदय, तथा ओ३म् के जाप से शान्ति करानी होती है।

वर्तमान युग के सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी ने क्या तोप, बन्दूक तथा ऐटम बम्ब के द्वारा स्वराज्य प्राप्त किया था? नहीं, नहीं, केवल सत्य, तप और अहिंसा के द्वारा ही स्वराज्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्राप्त किया है। उन के अनुयायी असत्य, हिंसा, तोप, बन्दूक तथा धमकियों से संसार में अशान्ति का राज्य स्थापित किये हुये हैं। कब तक स्थिर रहेंगे यह समय बताएगा; करदनी खुएश-आमदनी पेश का फल अवश्य भोगेंगे।

२. दया—धर्म का दूसरा चरण दया है। इस की अवस्था भी वर्तमान काल में शोचनीय है। वैसे तो नित्य प्रति कीड़ों मकौड़ों को चावल शक्कर इत्यादि डालते और नदियों में आटे की गोलियाँ डालते हुए बहुत से मनुष्य आप को मिलेंगे तथा भूमि पर फूंक २ कर पाँव टिकाने वाले भी बहुत से दिखाई पड़ते हैं परन्तु ऐसे लोग परस्पर व्यवहार में भाई-भाई का गला काटने के लिये उद्यत रहते हैं। दया भाव आज के मानव समाज का अत्यन्त विरोधी गुण है। नित्यप्रति नाना पशुओं का वध किया जाता है तथा ईर्ष्या द्वेष की मात्रा दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करती जा रही है वेद के इस पवित्र उपदेश—

"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे"

को लोग भूल गए हैं—

अभी कुछ दिन हुए-एक अखबार में छपा हुआ था कि अमृतसर में जहाँ पहले पाँच प्रतिशत स्त्रियाँ माँसाहारी थीं अब पचास प्रतिशत से भी ऊपर ऐसा आहार करती हैं। कई सौ बकरियाँ कई लाख अण्डे नित्य प्रति नरनारी सेवन करते हैं। भला जिनका आहार उपार्जन निर्दयता पर निर्भर हो वे दया भाव को क्या जाने। और फिर प्रेम, एकता, सुख और शान्ति कैसे प्राप्त हो ? कवि लिखता है–

दर हकीकत वोह दिल नहीं जिस में न हो एहसासे दर्द।
दीदाए बे नूर है वोह चश्म जो पुर नम नहीं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थात्–वह दर्दमंद मनुष्य नहीं कहला सकता जिसके हृदय में दुःखी को देखकर पीड़ा नहीं होती। और वह आंखें रखता हुआ भी अन्धा है जो रोते को देख आंखों से आँसू नहीं बहाता। कवि का आशय है कि जो दुःखी को देख कर दुःखी नहीं होता वह मनुष्य नहीं है। किन्तु वर्तमान काल में जो सुखी को दुख देता है और वे ज़बानों के गले पर छुरी चला कर निर्दयी बनता है घर को श्मशान, पेट को कबरेस्तान बनाता है क्या वह इस मनुष्य जन्म के पश्चात् मनुष्य बनेगा और क्या ऐसे निर्दयी के हृदय में दयाभाव आ सकता है। देखो—एक बालक मिट्टी का खिलौना लिये खेल रहा है दूसरा बालक उसके खिलौने को तोड़ देता है तो खिलौने वाला बच्चा बिलख-बिलख कर रोता है। इस रोने वाले बालक के माता पिता क्रोधावेश में–खिलौना तोड़ने वाले बच्चे के माता पिता तक से लड़ने को तैयार हो जाते हैं। भला जिस सर्वशक्तिमान ने ये उत्तम खिलौने, जो प्राणीमात्र के हित और कल्याण निमित्त बनाये हैं उसके खिलौनों के मार काटने पर उस बनाने वाले को क्या दुःख न होगा? क्या वह तुम्हें इसका फल यह न देगा कि तुम्हें भविष्य में राक्षसों जैसा जीवन प्रदान करें। इस कर्मफल दाता की शक्ति वा न्याय को देखना चाहें तो लेखक की "ब्रह्म ज्ञान प्रसाद" पुस्तक को पढ़ें।

कवि लिखता है–

गांठि हो सो हाथ कर हाथों से कुछ देह।
जो देगा सो पायेगा, इस में नहीं सन्देह॥

३.तप—वर्तमान काल में तो इस का नाम लेना भी आवश्यक नहीं समझा जाता। प्रायः लोगों का यह सिद्धान्त बन चुका है कि–

यावज्जीवेत्सुखं जीवेतम ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इस नास्तिकता के सिद्धान्त का आश्रय करके आज मानव समाज बड़ी तीव्र गति से भोगवाद का अनुयायी बन रहा । जप-तप तथा संयम तो इस भोगवाद में समाप्त हो चुका है। आज जहां तहां नदियों, पर्वतों तथा अन्य-अन्य तीर्थों पर प्रायः हमें देखने का अवसर मिलता है कि कोई ढोंगी महात्मा हाथों को ऊपर किये कोई तालाब में एक टांग के सहारे खड़ा है कोई अपने इर्द गिर्द अग्नि प्रज्वलित कर पंचाग्नि तप तप रहा है, कोई लोहे के कांटों की सेज पर सोया है। ये सभी लोग अपने आप को तपस्वी कहते हैं। भोली-भाली जनता इन के माया जाल में फंस कर अपना धन और धर्म लुटा रही है। महर्षि व्यास जी महाराज लिखते हैं—

अग्न्या धानेन यज्ञेन काषायेण जटाजनैः ।
लोकान् विश्वासयित्वैव तथा लुभ्येत यथा वृतः ।।

अर्थात्—अपनी स्वार्थ सिद्धि के हेतु ये दम्भी लोग अग्नि होत्री बन यज्ञ करने लग पड़ते हैं, गेरूए वस्त्र धारण कर लेते हैं और अपने स्वार्थ सिद्धि के अवसर को निरन्तर देखते रहते हैं। जब वे देखते हैं कि लाग पूर्णरूप से विश्वास करने लग पड़े हैं; तब सहसा भूखे भेड़िये के समान सब साधनों और प्रयत्नों सहित मूर्ख जनता पर धावा बोल देते हैं। और अपने स्वार्थ को भली प्रकार सिद्ध कर लेते हैं। इसलिए ऐसे दम्भियों से सदा बचते रहना चाहिए । आपने ऊपर महाराजा हरिश्चन्द्र जी के जीवन की एक झांकी देखी है । किस प्रकार सत्य की प्राप्ति और रक्षा के लिये तप किया था । यह है सच्चा तप ।

सत्य बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप ।
जिस के हृदय सांच है उस के हृदये आप ।।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लेत तत्व ज्ञान पुरुष, बात विचार विचार।
मथनी मथ कर छाछ को, माखन लेत निकाल॥

———

दूध माँहि जिमि घृत, छुपा मेंहदी में जिमि लाली।
तिमि जग में प्रभु छुपा नहीं इस बिन खाली॥

———

ध्यान हि योगी जन करें, पावें परमानन्द।
ध्यान बिना जो सुख चहें, वे नर हैं मतिमंद॥

———

दुःख में पड़ कर संत जन, करते कभी न पाप
हंस छाछ पिये नहीं, मरे भूख संताप॥

———

लगन लगन सब को कहे, लगन कहावे सोय।
नारायण जप लगन में, तन मन डारे खोय॥

———

तपस्वी महात्मा जन कैसे होते हैं ? कवि लिखता है—

मो मन प्रभु के प्रेम में, भूल गया सारा संसार।
विषय वासना मन से छुटी, हुआ पवित्र सब आचार॥
जिधर देखते हैं दृष्टि भर, ब्रह्म रमा सब घर और द्वार।
विश्व प्रेम में लग्न हुई जन सब सृष्टि से करते प्यार।
प्रभु दर्शन कर भक्त जन, जब कृतार्थ होते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रेम लग्न हो सर्व समय में, योग की निद्रा सोते हैं ॥
विरखों वत जीवन को धारण, संत प्यारे करते हैं ॥
अपने ऊपर कष्ट सहन कर, विश्व की पीड़ा हरते हैं ॥
ऐसे जन विरले हैं जग में, जो करते हैं पर उपकार ।।
अपने स्वार्थ का हो त्यागी, सेवा पात्र जिनका संसार ॥
जो ज्ञानी जन भए उपासक, परमात्मा से उन का प्यार ।
अंत समय में उज्जवल मुख से, प्रेम करेंगे हर के द्वार ॥

४. दान—दान का अर्थः—"दा" का अर्थ बंधन 'न' का अर्थ काटना । अर्थात् वह दान जो बंधन से छुटकारा दिलादे ।

ओ३म् देवो वो द्रविणोदा पूर्ण विषष्वासिवम् ।
उद्वासिञ्च ध्वमुपषा पृणध्वमा दिद्वो देव सोहते ॥ सा० ५

भावार्थ—जो ईश्वर सब कुछ देता है उसके नाम पर कंजूसी से दान न देकर खुले हाथों दान करना चाहिये। पात्र में देने से फल शीघ्र प्राप्त होता है । भगवान कृष्ण गीता में उपदेश करते हैं—

दातव्यमिति यद् दानं दीयते ऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद् दानं सात्विकं स्मृतम् ॥ (गीता१७-

अर्थात् दान जो दिया जाए वह देश-काल-पात्र और कुपात्र विचार कर दिया जाए । जिस देश में दुर्भिक्ष पड़ा हुआ हो अन्न बिना मनुष्य अपने जीवन को त्याग रहे हों, चारे के न मिलने से प मर रहे हों वहां मनुष्यों और पशुओं की रक्षार्थ अन्न और चारे पहुँचा कर उन की रक्षा करनी पुण्य है । जिस वस्तु की प्राप्ति से सु की वृद्धि हो उस समय उसी वस्तु का देना पात्र के लिये हितकार है । मनु भगवान ने लिखा है:—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सर्वेषामेव दानाः नां ब्रह्म दान विशिष्यते ॥

अर्थात् सब से उत्तम दान ब्रह्मज्ञान ही है। ज्ञान का स्वरूप यदि भावरूप में देखा जाए तो उसका नाम प्रेम है (क्यों कि बिना ज्ञान के प्रेम नहीं होता) ज्ञान का स्वरूप यदि क्रिया रूप में देखा जाए तो उसका नाम त्याग है। क्यों कि ज्ञान के लिये त्याग करना होता है। त्याग से आत्मिक उन्नति होती है।

प्यारे–यदि इस समय तेरे शुभ कर्मों के भोग से तेरे पास धन सम्पत्ति है, तो तू इसे यथोचित दान देने में कभी संकोच न कर। जीवन मार्ग को यश विस्तृत दृष्टि से देख और सत्यज्ञान के दान देने में अपना कल्याण समझ।

सच्चा दान करना सचमुच जगत् पिता प्रभु को उधार देना है। जो कि बड़े भारी दिव्य सूद के साथ फिर वापिस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उस से न जाने कितने गुना अधिक प्रति फल पाता है। यह एक ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान सिद्धान्त है। और सत्पात्र को दान देना ही धन का सर्वश्रेष्ठ सदुपयोग है। अब से तेरे पास भाई यदि कोई निःस्वार्थ सच्चा याचक आए तो उसे कभी खाली मत भेजना। सामर्थ्य के अनुसार उसे अवश्य भरपूर कर देना और विशाल दृष्टि से देखना कि ऐसा करके तूने अपना ही लाभ किया है। अपना एक आवश्यक स्वाभाविक कर्तव्य करके केवल अपना ही लाभ किया है, परन्तु इस इतनी स्पष्ट बात को यदि लोग नहीं समझते तो इस का कारण यह है कि वे मार्ग को दूर दृष्टि से नहीं देखते कि इस संसार में जीवों को शुभाशुभ कर्मों का फल इन्हें कब का कब मिलता है। यह सब कुछ नहीं दिखाई देता अतः हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिन के अनुसार सब मनुष्यों को उन के शुभाशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि संसार की गति को ज़रा भी ध्यान से देखो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तो पता लगेगा कि धन-सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि वह रथ चक्र की भांति घूमती फिरती है। आज इस के पास है तो कल दूसरे के पास। परन्तु हम इतनी क्षुद्र दृष्टि वाले हैं कि संसार में लोगों का नित्य धन नाश होता देखते हुए भी अपने धन नाश के समय से एक पल पहले तक भी इस घटना के लिये तैयार नहीं होते। और इसी लिये तनिक से धन नाश होने पर इतना रोते बिलखते हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत देखें तो इन धन नाशों को अत्यंत तुच्छ बात समझें। यदि संसार प्रतिक्षण चलायमान घूमते हुए इस धन चक्र को देखे, इस बहते हुए धन प्रवाह को देखें, तो हमें धन एकत्र करने का उचित व्यय करने का ध्यान रहे। इस लिये भाई तुम जीवन मार्ग को सुदीर्घ देखो, विशाल दृष्टि से देखो कि जग में यह धनचक्र उपयोग के लिये ही है। कवि लिखता है:-

मनुष्य का जीवन यज्ञमय है इस का कर्त्तव्य है, सदा त्याग और दान करता रहे। दान वृत्ति से बुराईयों के त्याग की अवस्था प्राप्त होती है। इस त्याग से शुभ गुणों के ग्रहण करने की शक्ति उत्पन्न हो कर अन्तःकरण शुद्ध और पवित्र होता है। अन्तःकरण की शुद्धि से प्रभु भक्ति में एकाग्रता होकर आनन्द रस आयेगा।

मनुष्य को परमात्मा ने अपनी कृपा से ६ साधन दान करने को दिए हैं तन-मन-धन-अन्न-बल, और ज्ञान-जिसके पास जो सामर्थ हो उस का नित्य प्रति दान करता रहे। उस अपनी-सामर्थ की शुद्धि निमित्त नम्र और दीन होकर दानकरता रहे। नाकि अहंकार भाव से।

जिन के पास कुछ नहीं वह २४ घन्टें में अपने तन से तथा खाली-समय में घड़ी-दो घड़ी अवश्य सेवा करें, योगी-जन मन से वैश्य अन्न से अनखुट दान करे। कि जिस वस्तु का दान करने से पूर्व कुछ संग्रह करलें, और कुछ संग्रह में मिला दिया करें; ऐसी-प्रतिज्ञा करलें कि बिना दान किये अन्न न खावेंगें। ऐसी वृत्ति-दान, को मुख्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्राण में प्रवेश करायेगी ।

और उत्तम दान ज्ञान दान है कवि लिखता है

प्रभु ने हमें अमृत दिया समय है जिस का नाम
वे नर नारी धन्य हैं-लेत जो इस से काम
वेदों को पढ़ते रहें-जासे उपजे ज्ञान
सदा वेद के धर्म हित-करो नित्य बलिदान
सब दानों से है बड़ा-ज्ञान ही का दान
जिस प्रताप से मिलता है-मानुष्य देह महान
तरोवर फल नहीं खात हैं-सरोवर पिये न पान
कहे रहीम पर काज हित-सम्पत्ती जचे सो जान

२ सब से श्रेष्ठ दान ब्रह्म विद्या का है । अर्थात् ज्ञान दान है । जिस के समान न जल का दान, न हीरे-मोती ज्वाहर-लालों का, न गौओं का न पृथ्वी का और न वस्त्रों का दान है । अर्थात् कोई ऐसा दान नहीं है जो ब्रह्म विद्या की तुलना कर सके । क्यों कि और दानों को तो जीवात्मा अन्य योनियों में भी प्राप्त कर सकता है ।

आज कल लोग दान भी करते जाते हैं और पाप भी, परमात्मा ने पाप-पुण्य दोनों का फल देना है । अतः जिस व्यक्ति से पाप और पुण्य पूर्वक जल का दान किया गया है परमात्मा उस को जल का मत्स्यु बनाता है । पाप का फल तो पशुयोनि है और पानी का मिलना पुण्य का फल है । जो मनुष्य अन्न तथा वस्त्र का दान करता है और साथ ही साथ पाप भी करता जाता है तो परमात्मा उस को किसी महाराजा का घोड़ा बना देता है । उसका स्वर्णभूषित वस्त्रों का पहनना बढ़िया से बढ़िया भोजन का खाना तथा सेवकों का उसकी सेवार्थ निरंतर खड़े रहना इत्यादि सब उसके पुण्य का फल है और पशुयोनि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

का भोगना उसके पाप का फल जो भी है। पशु योनि में आकर सुख और ऐश्वर्य भोगते हैं वे सब पूर्व जन्म के पुण्यात्मा हैं। इस से यह सिद्ध होता है कि और दानों का फल जीवात्मा अन्य योनियों में भी भोग सकता है किंतु वेद विद्या का दान करना एक ऐसा दान है जिसका फल जीवात्मा किसी अन्य योनि में नहीं भोग सकता। अतः विद्यादान के दानी को भगवान् अवश्य ही मनुष्य योनि प्रदान करते हैं इस कारण मनुष्य को सदा शुभकर्मों की कमाई का सदा दान करना चाहिये।

३ वे दान के पात्र हैं जो रोगी हैं असहाय हैं जिन का कोई भी रक्षक नहीं है उन के लिये औषध का प्रबन्ध कर भयानक रोग के मुख से उन्हें बचाना इत्यादि।

४ वे दान के पात्र हैं कि जिन बालकों के माता पिता मर चुके हैं, अनाथ हैं, जिन का रक्षक प्रभु के बिना कोई नहीं है तथा जो भी असहाय अथवा विधवा, यतीम है उन की सहायता करना भी पुण्य है। वर्तमान भारत देश जो कि दिनों दिन अधोगति को प्राप्त होता जा रहा है इस का कारण इस समय की दूषित दान प्रणाली ही है। एक समय का वृत्तान्त है—

भक्त कबीर काशी में अपने घर बैठे ताना बुन रहे थे और साथ ही प्रभु भक्ति के गीत गा रहे थे। उस समय एक पुरुष संत कबीर के पास आकर कहता है कि भगवन्! में भूखा हूँ मेरा कुटुम्ब भी भूख से व्याकुल है आप मेरी सहायता करें परमात्मा आपका भला करेगा। कबीर उसकी आतुर तथा दुःखभरी वाणी को सुनकर कहते हैं कि भाई मैं स्वयं भूखा हूँ। बड़ी कठिनता से कपड़ा बुन कर गुजारा करता हूँ सो आप की क्या सहायता कर सकता हूँ आप ही बतलाएं? वह पुरुष भक्त कबीर जी की वाणी सुन कर कहता है? भगवन्! मुझे सेर भर सूत यदि आप देदें तो मेरा कार्य चल सकता है। कबीर बिना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सोच विचार के सेर भर सूत दे देता है। और वह लेकर चला जाता है। कई महीनों के पश्चात् एक दिन भक्त कबीर बाजार में जाते हुए उस पुरुष को देख कर पूछते हैं कहो भाई ! तेरा परिवार तो कुशल से है। भक्त जी को देखकर वह पुरुष नमस्कार करता है। और कहता है भगवान् ! आप की कृपा से हम पेट भर कर खा रहे हैं और आप का धन्यवाद करते हैं।

कबीर चकित हो कर पूछते हैं--अरे भाई ! आप को जो सेर भर सूत दिया था उस से आप ने कौन सा व्यापार किया ? जिस से आप परिवार सहित आनन्द पूर्वक समय व्यतीत कर रहे हैं.कबीर के वचनों को सुन कर वह मनुष्य उत्तर देता है कि मैं मछलियों को पकड़ने वाला धीवर हूँ। मेरा जाल टूट गया था, जब मैं जाल को नदी में मछलियां पकड़ ने के लिये फैंकता था तो उस में से मछलियां निकल जाती थीं। जिस दिन से आपने सेर भर सूत दिया मैंने अपने जाल की पूरी तरह मरम्मत कर ली। अब जब जाल नदी में फेंकता हूँ तो जितनी मछलियां उस में आजाती हैं, उन में से एक भी बचकर बाहर नहीं जा पाती। कुछ घर पर ले जाता हूँ। शेष बाजार में बेच आता हूँ। इस प्रकार हम लोग पेट भर खाते हैं और आप का धन्यवाद करते हैं। यह सुन कर कबीर बोलेः—

कबीरा पापी को दोज़ख नहीं, धर्मी दोज़ख जान ॥

पात्र कुपात्र को देखकर, देते नहीं जो दान ॥

अर्थात् पापी को नरक नहीं मिलता। नरक उन धर्मात्मा जनों को मिलता है जो दान देते समय पात्र-कुपात्र का ध्यान नही रखते लोगों का यह सिद्धान्त बन गया है सिद्धान्त है कि हमने तो दान दे ही देना है आप अपने कर्मों से कोई कैसा ही हो ऐसी अवस्था के आने से दान लेने वाले दम्भी और पापी हो गये हैं ? इस प्रकार से दान का भी लोप हो गया है जिस से प्रजा में क्लेश की वृद्धि हो रही है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इन धर्म के चार चरणों के लुप्त हो जाने से अवस्था भयानक हो गयी है। किसी कवि ने सत्य कहा है।

देह धरे का गुण यही दे दे और कछु दे।
जब देह क्षय हो जाएगी फिर कौन कहेगा दे॥
गांठि हो सो हाथ कर हाथों से कुछ दे।
जो देगा सो पाएगा इस में नहीं सन्देह॥

———

यज्ञ, दान, तप के करने मे—जीवन बनता उच्च महान।
विश्व प्रेम प्रभु की भक्ति— जीवन मूल इसी को जान॥
मानव तन को जो नर पा कर—बीच विकारां खोते हैं।
अन्त समय अति दुःखी हो—हाथ मसल वह रोते हैं॥
हीरे जैसा जन्म अमोलक—पाकर ऊंचे कुल के बीच।
परम ब्रह्म से परमुखता भज—जिन के कृत्य भय अति नीच॥
एसे पुरुष! लोक बिगाड़ा सु-यश करया अति ही नीच॥
काला मुँह लेकर के पहुँचे—विश्वेश सभा के बीच॥

———

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दूसरा उपदेश

वर्तमान गृहस्थ की अवस्था उसकी उन्नति के साधन

ओ३म् आ ते नयतु सविता नयतु पतिर्यः
प्रतिकाम्यः त्वमस्यै धेह्योपधे ॥ अ० कां० २ सू० ३६ मं० ८

अर्थात्—पति और पत्नी उसी सर्वनियन्ता परमेश्वर का ध्यान करते हुए परस्पर हार्दिक प्रीति रखकर वेदोक्त मर्यादा पर चलें, जिस से वे दोनों प्रधान पुरुष और प्रधान स्त्री होकर संसार में कीर्तिमान हों और अन्नादि औषधि से समान सुख पाकर सदा हृष्ट पुष्ट बने रहें।

पाठकगण, रात्रि के बीतने पर सूर्य भगवान उद्यत हुए सब चराचर जगत में प्रकाश का आविर्भाव हुआ, सब प्राणी अपने कार्यक्रम में प्रवृत्त हो जाते हैं, पक्षीगण अपने अपने घोंसलों में बैठकर प्रभु का गुणगान करते हैं। भक्तजन स्नानादि कर परमात्मा की उपासना में तत्पर हैं। महात्माजी भी अपनी नित्य क्रिया आदि समाप्त करने के उपरांत शान्त चित हो आसन पर विराजमान हैं। इधर जिज्ञासु भी अपनी नित्यविधी से निवृत्त होकर महात्मा जी के चरणों में उपस्थित होता है और दण्डवत प्रणाम कर प्रार्थना करता है।

जिज्ञासुः—महाराज ! वर्तमान काल में प्रायः सुनने और देखने में आता है कि गृहस्थ में प्रवेश करना नरक में ही प्रवेश करना है। ऐसा क्यों कहा जाता है ? जब कि सकल संसार के जीवों का भार इसी गृहस्थाश्रम पर ही अवलम्बित माना गया है तो फिर भी यह क्यों कर नरक बना हुआ है।

महात्माः—प्यारे ? वर्तमान स्थिति में जैसा आप ने सुन कर तथा देखकर अनुभव किया है ठीक ही किया है। देखिए-संसार में दो मार्ग हैं–एक ओर नेकी है तथा दूसरी ओर बदी है। मनुष्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कर्म करने में स्वतन्त्र है, दोनों के संगम पर खड़ा हुआ वह यदि बदी की ओर चले या बढ़ेगा तो नेकी से दूर ही हटता चला जाएगा। यदि नेकी की ओर बढ़ेगा तो बदी से हटता चला जायेगा। इसी प्रकार यदि गृहस्थ के नियमों का उचित रूप से पालन किया जाए तो गृहस्थ स्वर्गधाम है। और गृहस्थ के नियमों के विरुद्ध आचरण करने पर यह नरक धाम है। परमात्मदेव की कल्याणी वाणी वेद में प्रत्येक आश्रम के कर्त्तव्य बताए हैं-उन पर चलना मनुष्य की अपनी इच्छा पर निर्भर है। ईश्वर ने तो गृहस्थाश्रम को ही स्वर्गधाम बताया है। सुनिये पति पत्नी गृहस्थाश्रम रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। यह गाड़ी उसी समय ठीक चल सकती है जब कि इसके दोनों पहिए समान हों यदि ऊंचे नीचे हों तो गाड़ी की चाल बिगड़ जाएगी। अतः इस गृहस्थीरूपी गाड़ी में पति और पत्नी चक्ररूप हैं। आज दृष्टिगोचर होता है कि यदि किसी, घर में पति शान्त स्वभाव-का है तो पत्नी की प्रकृति क्रूर है। कहीं पत्नी यदि विनम्र एवं विचारशील है तो पति निर्दयी तथा कठोर होता है। अतः दोनों के समान विचार न होने के कारण देवासुर संग्राम चला रहता है, जो घर शान्ति का मन्दिर होना चाहिये था वह क्रोध-अग्नि की ज्वालाओं से भरपूर रहता है।

भला बताईये तो सही कि जिस वृक्ष को आग लगी हो-उस पर पक्षी कैसे बेठ कर मधुर गान कर सकते हैं? किन्चिनमात्र भी नहीं। जहाँ पर राजा और मन्त्री के विचारों में भेद है- उस राज्य में शान्ति कैसे रह सकती है-कभी नहीं। पति घर का स्वामी है अर्थात् राजा है और पत्नी मन्त्री रूप है! किसी समय राजा को मन्त्री की सम्मति पर चलना पड़ता है और किसी समय मन्त्री को राजा की आज्ञा के अधीन चलना होता है तभी गृहस्थ सुखदायक हो सकता है अन्यथा सारा गृहस्थ आश्रम का व्यवहार बदल जाता है क्योंकि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

छोटों के लिये बड़ों का आचरण ही आदर्श रूप होता है। माता-पिता के फूट के विचार को जिस समय बालक देखते हैं तो उन कोमल हृदयों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। उन के विचारों में फूट का बीज बोया जाता है-फिर यत्न करने पर भी यह कुप्रभाव उन के मन से पृथक नहीं किया जा सकता। जहाँ राजा और मन्त्री के मध्य वैर भाव होगा वहाँ पर उन की प्रजा में कैसे प्रेम भाव स्थिर रह सकता है अतः दो सम्बन्धियों का मतभेद किसी समय भी नहीं होना चाहिये। नेता के दोष अनुकरण करने वाली प्रजा बिगड़ जाती है। उस पाप का भागी अगुहा ही बनता है। जैसे नेता तो बन गया परन्तु अपने दुर्गुणों को दूर न कर सका! अतः पति और पत्नी के बहुत से उत्तरदायित्व हैं। महर्षियों ने इस लिए गृहस्थ आश्रम को सब आश्रमों में श्रेष्ठ और सब का आधार सूत्र बताया है। गृहस्थ के सुधार से सब आश्रमों का सुधार है और इसके बिगड़ जाने से सब आश्रम बिगड़ जाते हैं।

ऋषि दयानन्द जी महाराज जी से प्रश्न किया गया, महाराज! बालक को शिक्षा कब देनी चाहिये तो महर्षि ने उत्तर दिया "जन्म लेने से सोलह वर्ष पहले शिक्षा आरम्भ हो जानी चाहिए अर्थात् पहले माता आदर्श बने फिर बालक को जन्म दे, क्योंकि माता-पिता के विचारों का प्रभाव बालक पर बहुत पड़ता है—हमारी धर्म पुस्तकों में लिखा है।

अंगा दंगात्सं भवसि, हृदयादधि जायसे।
आत्मा वै पुत्र नामासि त्वं जीव शरदः शतम॥

अर्थात् जिस समय बालक माता के गर्भ में होता है उस समय जैसे उस गर्भस्थ बालक के अंग प्रत्यंग माता के अंगों से ही बनते हैं उसी प्रकार माता के विचारों से बालक के विचार भी बनते हैं अर्थात् उत्पन्न हुआ २ बालक मातृ पितृ गत विचारों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तथा अंगों का प्रतिबिम्बमात्र है, एक प्रकार के माता-पिता के यथार्थ अथवा प्रतिकूल आचरण का नमूना बन कर गर्भ से बाहर आता है अतः माता-पिता के विचारों का उत्तम होना अत्यन्त आवश्यक है। शास्त्रों में गर्भाधान प्रकरण में एक श्लोक आया है।

आश्रमे सयंतात्मानं धर्म शीलं प्रसूयते ।
देवता प्रति मायाँ तु प्रसूते पार्षदोपमम् ॥

अर्थात् ऋषियों के आश्रमों में जो सन्तान उत्पन्न होती है वह धर्मात्मा ही हुआ करती है। विद्वान, महात्मा तथा वीर पुरुषों के चित्रों से सुशोभित गृहों में उत्पन्न हुई सन्तान धर्मात्मा और बलवान होती है।

(१) स्वर्गीय पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने एक समय अपने उपदेश में बताया था कि मैं देहरादून गया, आम खाने को मिला, आम चूसते समय आम के रस से सौंफ की गंध आई, माली से पूछा—भाई! यह आम है इस में सौंफ की गंध कैसे आ गई—वह बोला महाराज! एक आम पूरा पका हुआ था उस से रस निकाल कर उसके बदल सौंफ का अर्क भरकर भूमि में बो दिया—अब जब उसकी कोपलें और पत्ते हुए तो उस सुगंध से भरपूर, सैंकड़ों मन आम वही पौदा दे रहा है सब सौंफ की गंध से भरपूर हैं, तो स्वामी जी ने कहा कि यदि एक आम का वृक्ष फल दे रहा है तो उस में बीसियों मन अर्क सौंफ के डालने पर वह वृक्ष सौंफ की गंध उत्पन्न नहीं कर सकता, जितना कि चन्द माशे अर्क सौंफ ने सारे वृक्ष को गंध से भरपूर कर दिया। प्यारे! गर्भावस्था में माता पिता की शिक्षा आयु पर्यन्त ही जीवन युक्त होती है, इसीलिए कहा गया है कि बालक को शिक्षा जन्म लेने से सोलह वर्ष पूर्व देनी चााहिए। अर्थात् पहले १६ वर्ष माता बने, पुन बालक को जन्म दे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(२) शाहजहाँ बादशाह के युग की बात है कि खुरासान से एक व्यक्ति सेब लेकर चन्नयोट ज़िला लायलपुर (पाकिस्तान) में बेचने आया। एक घसियारे ने गुज़रते हुए जब सेबों को देखा तो वहीं खड़ा हो गया और सेब बेचने वाले से पूछा यह क्या वस्तु है तथा इसका क्या नाम है? सेब बेचने वाले ने कहा कि "यह सेब हैं" तथा फिर घसियारे ने एक सेब का दाम पूछा—उत्तर मिला—कि एक सेब का मूल्य एक रुपया है। सेब का दाम सुन कर घसियारा चकित हो गया और सिर नीचे कर चल पड़ा—तब सेब वाले ने पूछा कि क्यों भाई! सेब का मूल्य पूछ कर चकित क्यों हो गये हो-लेते क्यों नहीं? घसियारे ने कहा कि भाई इस का मूल्य इतना अधिक है कि इसे मुझ जैसा निर्धन व्यक्ति नहीं खरीद सकता। तब सेब वाले ने पूछा फिर उदास क्यों हो कर चला है! घसियारे ने कहा कि यह फल तो मैं ने आज तक देखा नहीं है-मगर मेरी धर्म पत्नी प्रतिदिन यह कहती है कि मुझे सेब ला दो-अब मैं बिना समर्थ के उस की यह कामना कैसे पूर्ण कर सकता हूँ! अब सेब वाले ने पूछा—क्या तेरी स्त्री गर्भवति है घसियारे ने कहा-हाँ गर्भवति है, तब सौदागर ने कहा देखो भाई! सेब मैं आप को बिना मूल्य लिये देता हूँ। तुम जा कर अपनी धर्म पत्नी को खिला दो और मुझे तुम एक कागज़ पर अपने उस बालक के नाम जो उत्पन्न होगा-पत्र लिख दो जब यह मेरा पत्र तुम्हारे पास लाये तो तुम उसे अपने एक मास का वेतन चाहे जितना भी हो दे देना, घसियारे ने स्वीकार कर लिया और सेब वाले ने एक कागज़ पर यह शब्द लिखवा लिये कि बेटा। जब यह मेरा पत्र तुम्हारे पास लावें तो बिना संकोच हो एक मास का वेतन धन्यवाद पूर्वक भेंट कर देना। और नीचे घसियारे का अँगूठा लगवा कर सेब उसे दे दिया। घसियारे ने प्रसन्नचित हो घर जा कर सेब अपनी पत्नी को दे दिया। धर्म पत्नी सेब को देख कर बहुत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ही प्रसन्न हुई-उसे बड़े प्रेम से खाया। कुछ दिन पश्चात् प्रभु कृपा से उसे एक बालक उत्पन्न हुआ और जब वह बड़ा हो कर मसजिद में पढ़ने लगा तो ईरान के सम्राट ने शाँहजहाँ को लिखा कि तुम भारत सम्राट हो-अपने आप को "शाह हिन्द" लिखो-शाह-जहाँ मत लिखो अन्यथा हमारे साथ युद्ध करो ! बादशाह शाँहजहाँ ने इस प्रश्न को हल करने के लिये मन्त्रिमंडल को बुलाया तदनन्तर विज्ञापन नगर भर में बाटें गये कि कोई भी प्रश्न का हल करे, तो मसजिद में पढ़ने वाले उस बालक ने इस प्रश्न को हल कर के लिखा कि शाह-हिंद और शाह-जहाँ शब्द अबजद हिसाब से दोनों बराबर होते हैं अतः इस में कुछ भी अन्तर नहीं है ! शाँहजहाँ ने ईरान के बादशाह को ऐसा ही जवाब भेज दिया ईरान का बादशाह इस जवाब को देख कर बहुत ही चकित हुआ और शान्त होगया। प्यारे ! यह वही घसियारे का बालक था जिस का नाम "सैय्यद अल्ला-खाँ रखा गया था और बाद में बाद-शाह का मन्त्री बना ! जब सेब देने वाला सौदागर वही नगर में आया-उस के पिता का पत्र लेकर सैय्यद अल्ला-खाँ के घर पहुँचा और सैय्यद अल्ला-खाँ से प्रश्न किया कि क्या आप अपने पिता के लेख को मानोंगे और जो कुछ आदेश आपके नाम उसमें लिखा उस पर आचरण करोगे,सैय्यद अल्ला-खाँ ने सर नीचे करके कहा कि मैं पिताजी के आदेश को सर आंखों पर धरूँगा तथा उस पर सोलह आने आचरण करूँगा, तब सेब वाले ने वह पत्र उसके सम्मुख रख दिया। सैय्यद अल्ला-खाँ ने उस पत्र को शिरोधारण कर लिया और आगन्तुक का श्रद्धा से आदर सत्कार किया तथा एक मास का वेतन तत्काल भेंट कर धन्यवाद किया। प्यारे । यह था शुद्ध सात्विक आहार । उत्तम फल गर्भिणी ने खाया उत्तम सन्तान पैदा की ! क्या वर्तमान समय की माताएं जो गली-कूचों-बाज़ारों में भेड़ बकरियों की भांति मुँह खोले फिरती रहती हैं-ऐसी सन्तान उत्पन्न करेंगी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कदापि नहीं ? प्यारे यह गर्भ अवस्था की शिक्षा का परिणाम है । ऐसी अनेकों घटनाएं हैं जिन के लिखने से पुस्तक बढ़ जायेगी ! बुद्धि-मानों के लिये इतना ही काफी है। वर्तमान काल में शिक्षा (विद्या) बड़ी लम्बी लम्बी पढ़ाई जाती है—परन्तु यह सब विद्या प्राकृत तथा भोग विलास कि है । खट्टाई और चाट दही भल्ले, मिट्टी खाना दूकानों पर नंगे सिर नंगी-छाती वैश्या का रूप धारण किये आँख फाड़-फाड़ कर देखती हैं । बहन, पुत्री माता का रूप बन कर बाहर न निकलना, किन्तु अपनी बाहर की सजावट दिखावट, हार-सिंगार दिखाने में अपनी शान समझती हैं, जिस से मस्तिष्क का तेज, आँख की लज्जा का दिवाला निकला जा रहा है—ऐसे आहार—व्यवहार, विचार आचार से भला संसार में ऐसी देवियां, भीष्म अर्जुन, युधिष्ठिर, राम, कृष्ण, दयानन्द, गुरू नानक, गांधी आदि देवता कभी उत्पन्न कर सकती हैं ? हरगिज़ नहीं, जिनका आहार राक्षसी निर्दयता का हो-घर को श्मशान (पेट को कबरिस्तान) बनाना क्या ऐसी निर्दयी माताएं धर्मात्मा सन्तान पैदा कर सकेंगी ? तथा अपने अनमोल हीरा जन्म को सफल कर सकेंगी ।

मेरे प्रेमी लाला दियाल दास रिटायर्ड पानीपत निवासी ने मुझे पत्र लिखा कि उनकी धर्म पत्नी स्वर्गवास हो गई है उसकी आत्मा कल्याणार्थ यजुर्वेद का यज्ञ कराना है । आप दर्शन देवें । तो मैं वहां पहुँचा, यज्ञ की पूर्णाहुति; शान्ति पाठ हुआ तत्पश्चात मेरे प्रेमी लाला जय दियाल जी ऐस. डी. ओ. कैनाल डिपार्टमैंट मुझे आ कर मिले, उन्होंने मुझ से कहा "महाराज ! भगवान आपको मेरे हितार्थ यहां लाए हैं" मैने पूछा कैसे ? उन्हों ने कहा कि भगवान की कृपा से मेरे पुत्र के पुत्र उत्पन्न हुआ है—कल ही ग्याहरवाँ दिन है। आप के कर कमलों से इसका नाम करण संस्कार हो जाए—आप उसे आशीर्वाद दीजिए। दूसरे दिन नाम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करण संस्कार हुआ चूंकि वह मिलन सार थे, ऋषि-भक्त थे। घर का खुला स्थान भी था—काफी नर नारी प्रेमी पधारे। जब संस्कार की क्रिया आरम्भ हुई तो माता बालक को गोद में लाई और पति को दे दिया। फिर दूसरी ओर बैठ गई! पति ने बालक को माता की गोद में दे दिया। अब मैंने बालक की माता जी से पूछा—बेटी! आप की गोद में यह जो बालक है यह किस का है उत्तर मिला मेरा ही है पुनः उसके पति से वही प्रश्न पूछा तो उत्तर मिला मेरा ही है. फिर लाला जय दियाल जी से पूछा यह बालक किस का है उसने कहा कि यह मेरा पोता है। उनकी धर्म पत्नी से भी जब यही पूछा गया तो उन्होंने भी यही कहा कि मेरा पोता है। अब मैंने कहा आप कितना झूठ बोल रहे हो कितनी जनता बैठी हुई है। सूर्य भगवान भी उदित हैं अग्नि के सम्मुख बैठे हो। मेरी इस बात को सुनकर वह बहुत हैरान हुए तब मैंने पूछा कि यह बालक तुम्हारा कैसे है क्या आप ने इसकी आँख बनाई, क्या कान बनाया, नाक बनायी, मुख बनाया, क्या टांगे बनाई तथा रंग रूप बनाया है। आप कैसे कहते हो कि यह हमारा है। अब बताओ कि इस बालक को किस ने ऐसा सुन्दर शुद्ध, पवित्र, निर्मल अहंकार और स्वार्थ से रहित योग बनाया है तो कहने लगे "महाराज! भगवान ने ही बनाया है उसकी ही देन है मैंने कहा कि यह बालक योगी है इसको पूर्व जन्म याद है। जब बच्चा नींद में सोया हुआ होता है तो पुरुष उस को नींद में कम देखते हैं परन्तु माताएँ सदा देखा करती हैं कि बालक कभी रोता तथा सिसकियाँ भरता है और कभी हंसता भी है। क्यों? प्यारे! बालक के सम्मुख शुभ कर्मों का रूप आता है तो हंसता है मन्द कर्मों का रूप सामने आता है तो देख कर रोता है। यह दृश्य तब तक होता है जब तक उस का ... दूर ... करता है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तथा कोमल होता है पर जब बालक स्वार्थ तथा पाप का अन्न खाता है तो उस का तालु पत्थर हो जाता है अब आप समझ गये कि यह भगवान का खिलौना शुद्ध निर्मल है उस की अमानत है जैसे शुद्ध पवित्र भगवान का खिलौना आप को मिला है वैसा ही उसकी भेंट करना हो गा। यदि आप ने बालक को भोग विलास का ग्रास बना दिया! पाप और बुरी कमाई का अन्न खिलाया और सिनेमा और बुरे व्यसनों का अभ्यासी बना दिया तो याद रखो कि खरे को खोटा बनाने वाले सोच लो इस का फल तुम को क्या मिले गा। उचित है कि तुम अमृत वेले जागा करो! उस समय ऊँ नाम की घुट्टी दो अपने आहार व्यवहार आचार-विचार, को सदा शुद्ध पवित्र बनाओ।

सच्चे माता पिता का रूप बन कर उस में शुभ संस्कारों का संचार करो ताकि यह बालक प्रभु भक्त माता-पिता का आज्ञाकारी, देश-हित चिन्तक बने। माता-पिता और कुल के नाम को उज्ज्वल करने वाला बनें चाहे एक संतान पैदा करो पर एक को ईश्वर का पुजारी बना लो। कुत्ते कुत्तियों की भांति संतानों की संख्या बढ़ा कर मत समझो कि जन्म सफल हो गा। उतने पाँव पसारो जितनी समर्थ शक्ति और योग्यता हो।

यदि माता-पिता तामस विचारों के होंगे अथवा मादक पदार्थों का सेवन करेंगे तो संतान भी मति-हीन, जड़ बुद्धि उत्पन्न हो गी। इस लिये गृहस्थियों का सन्तानोत्पत्ति रूप कार्य बड़े उत्तर दायित्व का है! वर्त मान भारत में प्रायः गृहस्थ को भोगों की मशीन समझ रखा है! परिणाम स्वरूप अवस्था बिगड़ती ही जाती है!

बालकों को उत्पन्न करने तथा उन के पालन पोषण के कार्य को आज कल की माताएँ सर्वथा भूल चुकी हैं इस लिये छोटी आयु में ही बालकों की मृत्यु हो जाती है। यह भूल तो माता-पिता की ही तो है जिन्होने विधि पूर्वक गर्भ की रक्षा नहीं की! वर्तमान काल में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बालकों में अनेक प्रकार के रोग पाये जाते हैं। कईयों के शरीर सूखने लग जाते हैं। मूर्ख माताएँ फिर ऐसा अनुभव करती हैं कि बच्चे पर किसी की छाया पड़ गयी अथवा नज़र पड़ गयी अतः गण्डे, यंत्र, ताबीज़ आदि करना आरम्भ कर देते हैं। धोखेबाज फ़कीरों के पास बालकों को ले कर जाती हैं धन के साथ साथ बच्चों को भी बर्बाद कर बैठती हैं!

यह नहीं समझतीं कि इस रोग का कारण वह स्वयं माता-पिता ही हैं! आज कल विद्या, शिक्षा, बी. ऐ. एम. ए तक की सिखलाई होती है पर इतना पता नहीं कि गृहस्थ किस बला का नाम है! यदि एक बी. ए. पास युवक किसी दफतर में जा कर प्रार्थना पत्र लिख कर दे कि मुझे पटवार की नौकरी दी जावे तो क्या उसकी बी. ए. की उपाधि देख कर यह नौकरी मिल जाय गी? कदापि नहीं। क्यों? इस लिये कि जब वह पटवार की ट्रेनिंग पूरी न ले, तब तक बी. ए. की कोई कदर नहीं हैं। जब एक मामूली पटवारी की नौकरी बी. ए पास को नहीं मिल सकती तो क्या गृहस्थ आश्रम जो कि सब आश्रमों, का आधार है, इस की शिक्षा प्राप्त किये बिना गृहस्थ में प्रवेश करने वाला अपना गृहस्थ जीवन सफल बना सकता है, कदापि नहीं? परन्तु वर्तमान काल में गृहस्थ आश्रम की शिक्षा के लिये कोई भी विद्यालय नहीं हैं। धन्य हो ऋषि दयानन्द महाराज। आप ने अपने थोड़े जीवन काल में अपने तप अनुभव से अनमोल ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व संस्कार विधि,आदि लिख कर मानों सागर को कुज्जे में भर दिया है। पर मन्द भाग्य हमारे कि जीवन को सफल करने वाली इन शिक्षा के ग्रन्थों को न हम ने स्वंय पड़ा न सन्तान को पढ़ाया। काश! यह दोनों ग्रन्थ यदि प्रत्येक गृहस्थी स्वयं पढ़े और अपनी संतान पुत्र-पुत्रियों आदि को गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पूर्व पढ़ा देवें तो क्या मजाल कि वह बालक-बालिका कभी धर्म से विचलित हो सके।

वर्तमान कालीन राज्य की ओर से बर्थ कन्ट्रोल के साधन बतलाए जा रहे हैं। परन्तु यह राज्य अधिकारी स्वयं भोगी, विषय विकारी, शराब तथा मासांहारी, नाच रंग तथा सिनेमा आदि में रुचि रखने वाले चोरी, फरेब घूँस लेना आदि "मन तुरां हाजी बगोयम्, तू मरा मुल्ला बगोए" की भांति बने हुए हैं। वह संसार का क्या उद्धार, सुधार तथा कल्याण करें गे जिन का अपना आहार, व्यवहार, आचार तथा विचार पशुओं से भी पतित है, वह स्वयं डूबेंगे तथा अनुयायिओं और देश को भी ले डूबें गे। सदाचार का तो आज कल दीवाला ही निकला जा रहा है। "अयां राज्ये बयां" प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है।

वर्तमान काल के चित्रकारों ने हमारी पूज्य मातृ शक्तियों के चित्र भी ऐसे बनाने आरम्भ कर दिये हैं जिन को देख कर आज कल की कन्याएँ तथा युवतियां जब सीता, सावित्री, पार्वती आदि के चित्र ऐसे हैं (अर्धनग्न तथा आधुनिक शृंगार इत्यादि से भरपुर · तथा वेश्याओं की आकृति के तुल्य हैं) तो हम क्या उन से ऊँची हो गयी हैं। यह पेट के अन्धे (चित्रकार) स्वार्थ वश, पूजनीय माताओं के चरित्रों को अश्लील चित्रों में दिखाने वाले, क्या उनकी दुराशीर्वाद को पा कर नष्ट-भ्रष्ट न होंगे जिस देश में मातृ-शक्ति का इस प्रकार अपमान और बेगार होने लगता है तो जान लो कि इस देश के पतन और विनाश होने के दिन आ गये हैं।

तनिक हृदय पर हाथ रख कर वर्तमान काल राज्य प्राप्त कराने वाले त्यागी, तपस्वी, महात्मा गांधी के जीवन को सम्मुख लाओ जिन के नाम पर सत्य, अहिंसा का प्रचार कर रहे हैं और और बापूबापू कहते थकते हैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

क्या वह शराब अथवा मांसाहारी था। जुआ खेलता था सिनेमा आदि का शौकीन था क्या आप जैसा निर्दयी पेट को कबरिस्तान तथा घर को शमशान बनाने वाला था। क्या भारत की स्वतन्त्रता से पहले भारत में इतने अधिक मात्रा में मांस, मदिरा, अण्डे, चोरी, फरेब, टैक्स धोखा, घूस आदि का प्रयोग होता था और क्या खान पान की वस्तुएँ इतने महंगे दामों में बिकती थीं—कदापि नहीं क्या यह कर्म चरित्र और सदाचार के निर्माण करने के साधन हैं या विनाश के। ऐसी अवस्था में क्या महात्मा गांधी का इन राज्याधिकारियों को अर्शीवाद प्राप्त हो रहा है अथवा दुर-आर्शीवाद। प्रभु ही इस डूबती नौका की रक्षा करें।

जिज्ञासु :—महाराज ! इस भान्ति तो गृहस्थ बड़ी जुम्मेवारी का ही कर्म है। गृहस्थ आश्रम में रहता हुआ मनुष्य सुखी कैसे हो सकता है जिससे गृहस्थ स्वर्ग धाम बन सके—आज कल तो गृहस्थ नरक कुण्ड ही बना हुआ है। जिस गृहस्थ आश्रम को ऋषियों ने सब आश्रमों से बड़ा और उत्तम माना है। उसे लोग इतना घृणास्पद क्यों मानने लगे हैं ? भगवान कृष्ण महाराज गीता में कहते हैं।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते !
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः (गीता ५—२२)

भावार्थः—जो यह इन्द्रियों तथा विषयों के संयोग से उत्पन्न होने वाले भोग हैं यद्यपि विषयी पुरुषों को सुख रूप भासते हैं तो भी वह दुःख के हेतु हैं तथा आदि अन्त वाले अथवा अनित्य हैं इस लिये हे अर्जुन, बुद्धिवान विवेकी मनुष्य इन में नहीं रमता जिज्ञासु प्रश्न करता है—इन्द्रिय और विषयों के संयोग से प्राप्त होने वाले भोग केवल दुख के ही हेतु होते हैं इस कथन का क्या अभिप्राय है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

महात्मा:—जैसे पतंगे अज्ञान वश परिणाम के सोचे बिना दीप की लौ को सुख का कारण समझते हुए और उसे प्राप्त करने के लिये उड़ उड़ कर उस की ओर जाते उस में पढ़ कर भयानक ताप सहते तथा अपने आप को दग्ध कर डालते हैं वैसे ही अज्ञानी मनुष्य भोगों को सुख का कारण समझ कर तथा उन में आसक्त हो कर उन्हें भोगने की चेष्टा करते हैं और परिणाम स्वरूप महान दुखों को प्राप्त होते हैं! आसक्ति से काम, क्रोध अनर्थों की उत्पत्ति होती है फिर उन से नाना प्रकार के दुर्गुण तथा दुराचार इन्हें आ कर चारों ओर से घेर लेते हैं । परिणाम स्वरूप उन का जीवन पाप मय हो जाता है और उसके फल स्वरूप उन्हें इस लोक तथा परलोक में विविध प्रकार की भयानक यातनाएं तथा ताप भोगने पड़ते हैं।

विषय भोग के समय मनुष्य भ्रम वश जिन कारणों (स्त्री प्रसंग आदि भोग) को सुख का हेतु समझता है वह ही उस के बल, वीर्य्य आयु मन बुद्धि, प्राण और इन्द्रियों की शक्तियों को नाश कर तथा शास्त्र विरुद्ध होने पर तो परलोक में भयानक नरक को प्राप्त करवा कर महा दुख के हेतु बन जाते हैं।

अर्जुन की माता कुन्ती देवी भी बड़ी ही बुद्धिमती, संयम शील, विवेकिनी और विषयों से विरक्त होने वाली थी। नारी होने पर भी उस ने अपना सारा जीवन वैराग्य युक्त, धर्म आचरण और भगवान की भक्ति में ही बिताया इस लिये इस सम्बोधन से भगवान कृष्ण अर्जुन को माता कुन्ती के महत्व को याद दिलाते हुए यह सूचित करते है कि हे अर्जुन! तुम उन्हीं धर्म शील कुन्ती देवी के पुत्र हो, तुम्हारे लिये तो इन विषयों में आसक्त होने की कोई सम्भावना ही नहीं हैं।

महाभारत में ऐसा आता है कि जिस समय पाण्डव बन में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समय बिताने को चले गये और अन्तिम वर्ष में गुप्त रहने के लिये

राजा विराट के हाँ वेष बदल कर नौकरी करने लगे तो राजा विराट ने एक देवी को अर्जुन के पास समझा कर भेजा कि तुम एकान्त में अर्जुन के पास जा कर यूँ कहो "मैं चाहती हूँ कि मेरे गर्भ से आप जैसा वीर उत्पन्न हो-मेरी यह कामना आप पूर्ण करें" जब वह देवी अर्जुन के पास गई और अपनी भावना कामना को प्रकट किया तो अर्जुन ने कहा " माता ! तुझे पुत्र उत्पन्न करने के लिये कष्ट सहने की क्या अवश्यकता है यदि मेरे जैसा पुत्र चाहती हो तो मैं उपस्थित हूं मुझे ही अपना पुत्र जान लो"। प्यारे ! यह थी—पवित्र माता की पवित्र संतान। क्या भोगी तथा कामी माता-पिता की संतान ऐसी हो सकती है ? मेरी माताएँ तथा भाई प्रतिदिन स्वयं रामायण तथा महा भारत की कथाएँ पढ़ते तथा सुनते हैं—परन्तु क्या किसी ने अर्जुन, राम तथा कृष्ण जैसा सुत उत्पन्न किया ! क्या यह गीत (मुरली वाले आ जा) गाते गाते या राम पुकारने से वह आ जायेंगे। राम और कृष्ण क्या भोगी पिता तथा भोगिनी माता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे ऐ भोली माताओ तथा बहनों कुछ बुद्धि से विचारो।

जिज्ञासुः—महाराज ! आप ने मुझ अंधकार में पड़े हुए को प्रकाश दिखा कर कृतार्थ किया है और मेरे प्राण रक्षा के साधन आप को भगवान ने मेरे लिये ही भेजा था। मैं हार्दिक धन्यवादी हूं। अब आप कृपा कर के गृहस्थ आश्रम किस प्रकार श्रेष्ठ आश्रम कैसे बन सकता है इस पर प्रकाश डालने का कष्ट करें।

महात्मा:—प्यारे ! गणित शिक्षा के चार नियम हैं, जमा, तफरीक जरब, तकसीम, ! जिस प्रकार योग का नियम बाकी तीन नियमों से पहले और शिला आधार रूप में सीखना और सिखाना आवश्यक है। उसी प्रकार ब्रह्मचर्य आश्रम शेष तीनों आश्रमों (गृहस्थ, सन्यास, वान प्रस्थ) के लिये मकान की शिला आधार के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समान सब आश्रमों का आश्रय-भूत आश्रम है जिस के पालन के बिना सभी आश्रम अधूरे रह जाते हैं उस धर्म कर्म का प्रति पादन आप के सम्मुख किया जाता है।

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत् गृही भूत्वा
वनी भवेत् वनी भूत्वा प्रव्रजेत्——(शतपथ)

अर्थात्–ब्रह्मचर्य को पूर्ण करके गृहस्थी बने, गृहस्थी के पश्चात् बानप्रस्थी बने तत्पश्चात् सन्यास आश्रम में प्रवेश करे।

ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश कर बालक अपनी इन्द्रियों को अपने संयम में रख कर अपने मानसिक भावों को पवित्र करता है। उच्च कोटि के आचार्य की गोद में जा कर अपने जीवन को बड़ा उत्तम बना कर आता था इस प्रकार लोग सद् पथ की प्राप्ति करते थे और पूर्ण आयु भोगते थे। (ब्रह्मचर्य के पालन करने से लोग दीर्घायु भोग सकते हैं)

जिज्ञासुः—लोग कहते हैं कि आयु प्रारब्ध कर्मों के अनुसार ही भोगी जाती है कहावत है "रति घटे न तिल बढ़े जो लिखी कर्तार" अर्थात् जो कुछ परमात्मा ने लिख दिया है वह घट बढ़ नहीं सकता परन्तु आप कहते हैं कि ब्रह्मचर्य के पालन करने से आयु की वृद्धि होती है। अतः कृपया इस बात को स्पष्ट रीति से बताने का कष्ट करें।

महात्मा:—प्यारे! ब्रह्मचर्य व्रत का ही आयु के साथ विशेष सम्बन्ध है—वेद इस विषय में घोषणा करता है।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवामृत्युमुपाघ्नत ?

अर्थात् ब्रह्मचर्य और तपोबल से विद्वान् मनुष्य मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं और उदाहरणार्थ महाभारत में ब्रह्मचारी भीष्म का नाम पूर्ण मिलता है उस महापुरुष ने मृत्यु पर किस प्रकार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विजय प्राप्त की यह मैं आप को बताता हूँ। महाभारत का युद्ध आरम्भ हुआ उस समय भीष्म-पितामह की आयु १७५ वर्ष की थी। दुर्योधन की ओर से सेना-पति बन कर निरन्तर नौ दिन तक युद्ध करते रहे तब युधिष्ठिर और कृष्ण चन्द्र महाराज को यह चिन्ता हुई कि नौ दिन समाप्त हो गये हैं अभी तक विरोधी दल के एक ही सेना पति डटे हुए हैं और हमारी सैना के बड़े बड़े योद्धा मारे गये हैं। अब क्या किया जाय ? जब तक भीष्म पितामह जीवित हैं हमारी सफलता असम्भव है परन्तु इस आदित्य ब्रह्मचारी का मारना भी बड़ा कठिन है फिर हमारी गृहस्थियों की क्या समर्थ है। बिना इस के मारे हमारी सफलता क्यों कर हो सकती है, युधिष्ठिर ने भी कृष्ण महाराज जी से कहा कि हम तीनों मिल कर भीष्म जी के समीप चल कर उन की मृत्यु के सम्बन्ध में पूछें। भीष्म जी के पास जा कर बोले भगवन हम तो आप का मुकाबला करते करते थक चुके हैं और निराश हो बैठे हैं अतः अब तो आप की शरण में आये हैं कि हम विजय लाभ कैसे कर सकते हैं ? आप सम द्रष्टा तथा विश्व प्रिय हैं, महात्मा हैं—यह बतलाईये किस प्रकार आप की मृत्यु हो सकती है—ताकि उस उपाय का अवलम्बन कर हम अपने मनोरथ में सफल होसकें आप हमारी प्रार्थना को अंगीकार कर हमें अनुगृहीत कीजिये। भीष्म पितामह युधिष्ठिरजी को विश्वास दिलाते हैं कि मैं आप की कामना पूरी करने के लिये पूरा यत्न करूँ गा।

प्यारे! यह पवित्रता का युग था जब कि एक विरोधी दल का मुखिया दूसरे विरोधी दल के सेना पति से अपनी सहायतार्थ उस की अमूल्य सम्मति लेने के लिये उस के पास जाता है। युधिष्ठिर धर्म पुत्र था वह जानता था कि पितामह ब्रह्मचारी है उन के भाव पवित्र हैं क्योंकि "शुद्ध भावों जितेन्द्रियः" अर्थात् जो शुद्ध संकल्पी पुरुष होता है—वही जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी होता है। अतः युधिष्ठिर के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पूछने पर भीष्म पितामह ने उत्तर दिया कि युधिष्ठिर विजय तुम्हारी ही होगी। और कहा कि मेरे मरने का उपाय यह है कि मैं स्त्री और नपुंसक पर कदापि आक्रमण नहीं करता—अतः शिखँडी नपुंसक को अगोहा बना कर मेरे सम्मुख खड़ा कर दें और इस के पीछे अर्जुन छुप कर मेरे पर वार करे—ऐसा उपाय किये बिना मुझ को मारने का सामर्थ्य किसी में भी नहीं हैं क्योंकि मैं ब्रह्मचारी हूँ। मृत्यु पर मैं ने विजय प्राप्त की हुई है।

पितामह के आदेशानुसार अर्जुन ने शिखंडी को सम्मुख खड़ा कर के तीरों की वर्षा की जिस से पितामह घायल हो कर पृथ्वी पर गिर पड़े उसी समय चारों ओर से हाय-हाय कार मच गया। ओहो अनर्थ पात हो गया—भीष्म ने दक्षिणायन में सूर्य भगवान के रहते प्राण त्यागने की ठानी है इन्हें तो उत्तरायण में ही प्राण त्यागने चाहियें। तब उस समय पितामह ने कहा कि हे देववरो, आप लोग घबरायें नहीं। बतलाएँ उतरायण काल में कितना समय अवशिष्ट है। देवों ने कहा भगवन्! अभी तीन माह और छः दिन शेष हैं आप निश्चिन्त रहें—पितामह ने कहा ऐसा ही होगा जैसा आप चाहते हैं।

ठीक यथा निर्दिष्ट समय के आने पर पितामह ने युधिष्ठिर को राज धर्म का उपदेश कर अपनी इच्छा से प्राण विसर्जन किये।

प्यारे! यह था ब्रह्मचर्य का बल। सांसारिक ऐश्वर्यों का उपभोग किस को नहीं भाता। यह तो वीतरागी, तपस्वी, धर्म परायण, सत्यव्रती, दीनबन्धु, आदित्य ब्रह्मचारी, विद्वान तथा वेदवेत्ता को ही अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सकता। आज तक कोई भी प्राणी इस मृत्यु के पंजे से मुक्त नहीं हुआ। यह ब्रह्मचर्य ही की महिमा अथवा परिणाम था जिस के द्वारा भीष्म पितामह ने मृत्यु पर विजय

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्राप्त की।

इस से आप को ज्ञात होगया होगा कि ब्रह्मचर्य का दीर्घ आयु के साथ कितना सम्बन्ध है। रामायण में लिखा है कि पिता के जीवन काल में पुत्र की मृत्यु होनी असम्भव थी। छान्दोग्योपनिषद में लिखा है कि सचमुच बल ज्ञान से बढ़ कर है।(देखते जो हैं)सौ ज्ञानियों को एक बलवान कंपा देता है। जिस में बल आए उसी में खड़े होने का समर्थ आता है। जो खड़ा हो सकता हो उसमें चलने का समर्थ आता है। जो चल सकता है वह गुरु के निकट जाता है और वेद शास्त्र के दर्शन श्रवण मनन तथा अनुशीलन द्वारा ज्ञानी बन जाता है। पृथ्वी बल से टिक रही है अन्तरिक्ष बल से टिक रहा है और द्यौलोक पर्वत देवता मनुष्य पशु पक्षी इत्यादि सभी बल से टिक रहे हैं इसलिये बल ही ब्रह्म है।

ऊन षोडशावर्षायां प्राप्तो पंचविंशतिम्,
यदि धत्ते पुमान गर्भं कुक्षिस्थः स निपद्यते।
जातो वा न चिरं जीवे ज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः,
तस्मादत्यन्त बालायां गर्भाधान न कांर्येत्॥

अर्थात् सोलह वर्ष से कम आयु की कन्या तथा पच्चीस वर्ष से कम आयु का वर जब गर्भाधान करेंगे तो पहली बात तो यह है कि गर्भ स्थिर न होगा। यदि होगा तो संतान दुर्बल उत्पन्न होगी तथा बहुत काल तक जीवित न रह सकेगी। अतः ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन न करने के कारण सन्तानें अल्प आयु में मर जाती हैं। हम परहेज़ करना चाहते नहीं। इलाज पर इलाज कर रहे हैं। भला जिस मकान की नींव ही खोखली हो तो क्या उस पर कोई मंजिल स्थिर रह सकती है? यदि दूसरी मंजिल भी बना दी गयी तो वह अवश्य गिरेगी चाहे सैकड़ों इजनीयरों को बुला कर उपाय करते रहो। भाई! वह सब भूल है। किसी महात्मा ने कहा है:—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

परबत जितनी भूल पड़ी है-फर्क नहीं विच राई रे।
बन्दोबस्त जग करदा फिरदा, घर की खबर न काई रे॥
गऊ सूर जब उसने साजयों-आहो बड़ी खुदाई रे।
धागे सूतै टूने काम न, डुड़यांदी ज्योनई रे॥
कौन गिद्धिड़या दिया पढ़े कलामां-कौन तवीज मढ़ाई रे।
साईं लोक लड़ लग साहिब दे-कटी जाय यमकी फाई रे॥

हम में भूल इतनी अधिक है कि हम एक दूसरे से मिलना पसन्द नहीं करते। यदि हम विचार कर देखें तो हम में राई के दाने के बराबर भी भेद नहीं है। हम एक हीं पिता के पुत्र हैं। एक ही माता की गोद में बैठे हैं। एक के होते हुए भी हम एक दूसरे से घृणा करते हैं। जहां एक की पूजा होगी वहां एकता होगी। जहां एकता होगी वहां प्रेम होगा वहां भगवान होगा। जहां भगवान होगा वहां सुख शान्ति और आनन्द का धाम होगा। कवि लिखता है:—

जो कुत्ता दर दर फिरे, दर दर दुर दुर होय।
एक हो दर का हो रहे, दुर दुर करे न कोय॥

जिस कुत्ते के गले में मालिक का पट्टा पड़ जाता है उस को गवर्नमैंण्ट तक नहीं छू सकती। और उस कुत्ते को खान पान इत्यादि की चिन्ता भी नहीं होती। उस की हर प्रकार की पालना पोषणा आदि मालिक ही समय २ पर करता है। पर जो एक दर छोड़ कर दर दर फिरता है वह चोटें भी खाता है दुःखी भी रहता है। जीवन असफल करता है।

प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो न समाये।

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने लिखा है यदि आयु वृद्धि चाहते हो तो इन तीन अक्षरों (श्री श्री स्त्री) के अनुसार अपना जीवन व्यतीत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करने का यत्न करो। अर्थात् पहले ब्रह्मचारी बनों, वेद और शास्त्रों का स्वाध्याय करो बुद्धि (धी) को बढ़ाओ। तत्पश्चात् धन कमाओ (श्री) पुनः स्त्री को संग पाओ और गृहस्थाश्रम में प्रवेश करो। आज हमारी व्यवस्था इस के विपरीत है। एक पिता अपने मूर्ख पुत्र को जो न तो विद्वान् है और न कमा सकता है वह ऋण लेकर भी विवाह कर देता है। अब वे स्त्री-पुरुष दोनों संयमी तो रह नहीं सकते। बच्चे बच्चियां उत्पन्न होती हैं। कर्जा सिर पर चढ़ रहा है। खान-पान के लिए पूरा मिलता नहीं फिर ऐसे नर नारी और परिवार आयु कैसे भोग सकते हैं। उधर उन्नत देशों में अपने पुत्र को शिक्षित बनाना पिता का काम है। इसके पश्चात पिता स्वयं पुत्र को त्याग देता है और कहे देता है कि जाओ चाहे ब्रह्मचारी रहो चाहे गृहस्थी बनो जो तुम्हारी इच्छा हो करो। मैं ने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है। अब मैं तुम्हारा कोई उत्तरदायित्व नहीं लेता। इस का परिणाम यह होता है कि बालक स्वावलम्बी होते हुए आपने पांव पर खड़े होकर उन्नति पथ पर बढ़ते जाते हैं। स्वस्थ रहते हैं और पूर्ण आयु का भोग करते हैं।

देश व जाति की रक्षा वीर कर सकते हैं। वीर वह जो वीर वीरजवान हो वर्तमान भारत की शिक्षा ने वीर्य का नाश कर रक्खा है। भला सोचो तो सही। मकान की बुनियाद में क्या कभी सजावट की जाती है। उत्तर मिलेगा, कदापि नहीं। अपितु रोड़ी, चूना, सुरखी इत्यादि को मिला कर पानी डाल कर खूब कुटाई की जाती है। क्योंकि नींव की सुदृढ़ता पर मकान की मंजिलें बनाई जा सकती है। यदि बुनियाद खोखली ढीली ढाली हो तो क्या कभी मंजिल ऊपर जा सकती है कदापि नहीं। अब सोचिए, क्या ये लड़के और लड़कियां भावी भारत की नींव नहीं है। यह जो बनावट बनावट, हार श्रृंगार से सज धज कर तथा अङ्ग प्रदर्शन करते

CC-0. Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हुए पाठशालाओं, स्कूलों तथा कालजों में जाते अथवा जाती हैं। क्या कभी यह वीर्यवान् हो सकते हैं? तनिक इस वीर्यशक्ति के सम्बन्ध में सुनिये। ऋषि मुनि इस के उत्पन्न होने के लिए कितने अधिक परिश्रम और समय की आवश्यकता बताते हैं।

कहते हैं, एक मन भोजन खा लेने पर मनुष्य के अन्दर एक सेर रक्त उत्पन्न होता है तथा एक सेर रक्त में से केवल दो तोले वीर्य बनता है। और देखिए, जो आहार हम आज खाते हैं। उसका पांच दिन के पश्चात रस बनता है। वह रस पांच दिन में पकता है तदनन्तर उस का रक्त बनता है। रक्त के पांच दिन बाद मांस तथा मांस के पांच दिन पश्चात मज्जा बनती है। मज्जा के पांच दिन पीछे अस्थि अथवा हड्डी, और अस्थि के पांच दिन पश्चात वीर्य बनता है। इस हिसाब से आज के खाए हुए भोजन के महीना सवा महीना बाद वीर्य बनेगा। अब आप विचार करें जो वस्तु इतना परिश्रम और समय लेकर तैयार हो उस को नाक से बहिने वाले रेशा की भान्ति नित्य प्रति नाश किया जावे तो बताओ शरीर की क्या दशा होगी। इस लिए विद्वानों की यह सम्मति है कि जब शरीर से एक तोला वीर्य निकल जाता है तब शरीर में तो ४० तोले रक्त की कमी पड़ जाती है। जिस से निर्बलता हो जाती है। ज्ञान तथा कर्मेन्द्रियों की शक्ति शिथिल हो जाती है। क्रोध लोभ तथा मोह का शासन हो जाता है।

कामी की आंख नहीं रहती, न ही उस की साख रहती है।

ब्रह्मचर्य जो धारते वे ही पुरुष सुजान।

उन की मति बढ़ती रहे पाएं परम कल्याण।

दूसरी बात—अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहार व्यवहार का ध्यान रखना बड़ा आवश्यक होता है। आहार के अन्तर्गत खान पान का तथा व्यवहार के अन्तर्गत शयन भोग, विलास, मनो-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विनोद,हास परिहास की चर्चा की जाती है। किन्तु भोजन चाहे कैसा ही उत्तम और सुस्वाद क्यों न हो, यदि मैले मन तथा मान रहित परोसा जाए तो वह एक दम निकृष्ट और विष के समान बन जाता है।

उस के खाने से भूख भले ही शान्त हो परन्तु स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। इसके विपरीत साधारण भोजन संतोष के साथ खाया जाय तो वह स्वादप्रद होता है और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक भी। अतः मनुष्य को दूसरे की चुपड़ी रोटी देख कर ललचाना नहीं चाहिए। इस सम्बन्ध में रहीम जी के तीन दोहे जो लोकोक्ति बन चुके हैं बड़े ही मार्मिक हैं—

रहिमन रहिला की भली जो परसे मन लाय
परसत मन मैला करै, सो मैदा जरि जाय।
अमीं पियावत मान बिन रहिमन हमें न सहाय।
प्रेम सहित मरिबो भलो जो विष देय बुलाय॥
रूखी सूखी खाय के ठण्डा पानी पी।
देख पराई चोपड़ी मत ललचावे जी॥

पुरुष के लिए अत्यधिक खटाई का सेवन वैसा ही घातक है जैसे स्त्री के लिए मिठाई। लोकोक्ति है—

गया मर्द जो खाए खटाई। गई नार जो खाए मिठाई॥

कुछ लोग हर समय मुंह में कुछ न कुछ डाल कर मुंह चलाते ही रहते हैं। अमीर जेब में पिस्ता बादाम या काजू आदि। और निर्धन चने अथवा मुंगफली झोले में डाल लेते हैं। और समय पाते ही दाएं बाएं झांक कर एक फांका मार लेते हैं। निम्न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लोकोक्ति के अनुसार यह आदत स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक मानी गई है।

खावै बकड़ी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह।

देखा देखी पुण्य और देखा देखी पाप के भोजन के सम्बन्ध में भूल कर भी अनुकरण नहीं करना चाहिये कहावत है:—

देखा देखी साधे योग, छीजै काया बढ़े रोग।

अति भोजन के कर्म से बल बुद्धि हो नाश,
औगण वह घर बने आलस रहे तिस पास॥

प्यारे! मनुष्य के मन और तन में बड़ा गहरा सम्बन्ध होता है। जैसे शरीर नीरोग रहे बिना मन स्वस्थ नहीं रह सकता इसी प्रकार मन के स्वस्थ रहने पर ही शरीर स्वस्थ रहता है। भय और चिन्ता मनुष्य के स्वास्थ्य को घुन बन कर खा जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि चिन्ता उस अनोखी चिता के समान है जिस में बिना आग और लकड़ी के ही मनुष्य जल कर भस्म होजाता है। कहावत है:—

चिन्ता ज्वाल शरीर में बन दावा लगी जाय,
प्रकट धुआं नहीं सिंचरे, उर अन्तर धुँधआय।
उर अन्तर धुँधँवाय, जो जिमि कांच की भट्टी,
रक्त मांस जरि जाय, रहे हडियन की ठट्टी।

भय और चिन्ता का एक मात्र कारण ऋण होता है। इस लिए कहा गया है—

आग खाय मुंह जरै, उधार खाए पेट जरे

कर्जदार के पेट को सच मुच ही उधार का खाया हुआ अन्न आग बन कर जलाता है। भय और चिन्ता के कारण कभी भली

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकार नींद नहीं आती। अच्छी प्रकार नींद न आने से पाचन शक्ति ठीक नहीं रहती। और भोजन के ठीक प्रकार से न पचने से मनुष्य का स्वास्थ्य कभी ठीक नहीं रह सकता। और जिन को कम खाने और गम खाने से प्रेम है वे ही भाग्यवान तन और मन से स्वस्थ स्वर्ग में निवास करते हैं। "मन चंगा तो कठौती में गंगा"

तीसरी बात:—सदाचारी सन्तान:—कहावत है कि मनुष्य का धन लुट जाय तो कोई बात नहीं अगर स्वास्थ्य बिगड़ जाय तो कुछ हानि समझो और यदि आचार भ्रष्ट हो जाय तो वह जीवित होता हुआ मुर्दा है। पशुओं की मृत्यु प्राण वियोग पर होती है और मनुष्यों की सदाचार न होने से मृत्यु होती है सब से पुराने ऐतिहासिक ग्रन्थ बाल्मीकि ग्रन्थ रामायण में लिखा है कि जिस समय राम वन के लिये तैय्यार होते हैं तो लक्ष्मण अपने पूज्य भ्राता राम के चरणों में पड़ कर प्रार्थना करता है भगवन्! मुझे भी साथ ले चलो—तो राम कहता है भ्राता! आप पहले माता सुमित्रा से आज्ञा ले लो यदि वह आप को मेरे साथ चलने की आज्ञा दे तो मैं साथ ले चलने को तैय्यार हूं। लक्ष्मण पूज्य भ्राता राम की बात सुन कर पूजनीया माता सुमित्रा के चरणों में जा कर प्रार्थना करता हैं कि मुझे आज्ञा दो कि मैं भ्राता राम के साथ बन में सेवार्थ साथ जाऊं! माता प्रसन्न-चित्त हो कर कहती है बेटा, यह सेवा धर्म सत्-पुरुषों का धर्म है तुम सरीखे बालकों का नहीं—तो भी एक बात अवश्य ध्यान में रखना।

राम दशरथ विद्धि, मां विद्धि जनकात्म जाम

अर्थात् राम पिता दशरथ के समान हैं, सीता तेरी माता के स्थान पर है–इन की आज्ञा पालन करने से ही तेरा सेवाव्रत सम्पन्न हो जायगा। लक्ष्मण ने इस आज्ञा का कहाँ तक पालन किया यह आप को आगे दी हुई कथा से स्पष्ट हो जायेगा। कथा इस प्रकार है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जिस समय रावण की भगिनी "सरूप नखा" राम से कहती है भगवन् जैसे एक सेविका पहले ही आप के पास है वैसे ही मुझे भी आप दूसरी सेविका के रूप में स्वीकार कर लीजिए मैं आप के स्वरूप पर मुग्ध हूँ। राम ने कहा-देवी ! मैं भी ब्रह्मचारी हूं और यह भी ब्रह्मचारिणी है क्योंकि हम दोनों वनवासी हैं, अतः मैं दूसरी किसी स्त्री को कदापि अंगीकार नहीं कर सकता—मैं एक पत्नीव्रत हूँ और यह पतिव्रता नारी है इस लिये आप यहां से प्रस्थान कीजिये।

यह सुन कर सरूप नरक्षा कहती है भगवन्, आप के साथ दूसरे नवयुवक भी हैं—राम कहते हैं यह पास ही लक्ष्मण की कुटिया है वहाँ जाकर उनसे अपना अभिप्राय निवेदन करो। श्रीराम की बात सुन कर सरूप—नक्षा वहाँ से हट कर लक्ष्मण की कुटिया पर पहुंच कर कहती है, "ऐ नवयुवक मैं राम की कुटिया में इस लिये आई थी कि मैं राम के साथ विवाह करूँ परन्तु उन्हों ने इन्कार कर दिया है और आप के पास मुझे भेजा है अतः आप से नम्रता पूर्वक प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे पत्नी-रूप में स्वीकार करें"। लक्ष्मण ने कहा।

सांच कहूँ सुन तोहे निशाचरी। तू जननी मेरी है तब ही से॥

अर्थात् ऐ निशाचरी मैं तुम से सच कहता हूँ तू तो मेरी माता है और मैं तेरा पुत्र हूँ इस लिये कृपा कर के जाइये। लक्ष्मण के इस विचित्र सम्बन्ध युक्त उत्तर को सुन कर सरूप-नक्षा कहती है ऐ नवयुवक, मैं लङ्का-निवासी हूँ तथा आप अयोध्या वासी। मुझे तो इस विचित्र सम्बन्ध का कोई पता नहीं लग रहा है कि मैं तेरी माता कैसे हूं ? तनिक इस सम्बन्ध को बतलाईये—तब लक्ष्मण उत्तर देता है—

काम को भाव धरे मन में। रघुवीर के तीर गई जब ही से॥

CC-0. Late Pt Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थात् आप ने इस बात को पहले ही कहा है कि जब मैं राम के पास गई थी तो मेरी इच्छा राम को अपना पति बनाने की थी अतः ऐ माता! जब तेरे मन में यह इच्छा उन्पन्न हुई उसी समय से तु लक्ष्मण की माता बन चुकी हो। उन्ही के पास जाईये।

इस प्रसंग से पता चलता है कि माता की आज्ञा का लक्ष्मण जी ने कहां तक पालन किया। प्यारे! योग्य सन्तान वही है जो माता पिता जी की आज्ञा पालन करती हो तथा चरित्रवान हो मनु भगवान लिखते हैं।

सदा चार वान्नरः शतं वर्षणी जीवति—(४-१५८)

अर्थात् सदाचारी मनुष्य सौ वर्ष की पूर्ण आयु को भोगता है कवि लिखता है—

सदाचार के बिना स्वस्थ, रहना है पूर्ण असम्भव,
सयंम बिना ना न पाता कोई, पुण्य प्रकृति के वैभव।
बनते हैं स्वयं सत्कर्म पाथेय, प्रगति के पथ परके,
यही प्रहरी सिद्धि सफलता के, मंगल लिये अन्थन के।
सदाचार मानव का पावन, धर्म श्रेष्ठ साधन है,
सत्य सूर्य की ज्योति विजय, का पूजन आराधन है।
कर्मों का परिणाम आचरण से अभिमन्त्रित है होता,
सदाचार का पालक सारा मनस्ताप है खोता॥

———

सदाचार ही शक्ति-साधना और आत्मिक बल है
सदाचार न होता जीवन में कभी असफल है
CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri
सदाचार शारीरिक, बौद्धिक उन्नति का है दायक

सदाचार सद वृति सुप्रेरक विजय का है अभिभावक
यही जगत में यश का दाता, है जागृति देने वाला
यही पहनता, चलता, श्रद्धा के सुमनों की माला
यही जगत में यश का दाता, है जागृति देने वाला
सदाचार द्वारा न कोई जगत का कारज कठिन है
हुई कब सदाचार के पालक की आभा मलिन है
यदि अपने मानव जीवन को धन्य बनाना चाहो
सदाचार है मन्त्र स्वास्थ्य का बस यह नियम निभाहो

— —

बिना आचार मनुष्य की करे पवित्र न वेद
आचार हीन नर निज दशा देख करे अति खेद

चौथी बात:—गृहस्थी की परिभाषण शीलता:—जिस घर में स्त्री कटुभाषिणी होती है उस घर का सारा आनन्द मिट्टी में मिल जाता है—सदा कलह में ही जीवन बीतता है विद्वानों ने नारी को कोमलाङ्गी के नाम से पुकारा है। स्त्री की वाणी अमृत वर्षिणी होनी चाहिये। यद्यपि कोयल का रंग काला कलूटा होता है परन्तु उस की वाणी की मधुरता सब का मन हरने वाली होती है। ठीक इसी प्रकार गृहिणी की वाणी में भी अमृत रस होना चाहिये।

काका का का धन हरे कोको को को दे
मीठा वाणी बोल कर जग अपना कर ले

ऋचं वाचं प्रपद्ये ! (यजु ३६—१)

अर्थात वाणी के सुधार के लिये वेदों की शरण ले। वेद सूक्तमय

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हैं। सूक्त शब्द का अर्थ है सुन्दर भाष्य अतः प्रत्येक नर नारी को सुन्दर भाषण शील होना चाहिये। नीतिकारों ने कहा है

वाण्येयका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।

क्षीयन्ते खलु भूषणानि सतता वाग भूषणं भूषणम्

नीतिकारों ने कहा है कि मधुर वाणी एक ऐसा उत्तम भूषण है कि जिस के बिना किसी भी नर नारी की सैकड़ों अन्य अलंकारों के होते हुए भी शोभा नहीं क्योंकि नारी का सब से श्रेष्ठ भूषण उत्तम वाणी ही है अतः जिस नारी नें इस उत्तम भूषण से अपने आप को अलंकारों नहीं किया वह सदागृह कलह का उत्तम साधन बनी रहती है। लड़ाई झगड़े का मूल कारण वह नारी ही होती है जिस से पति भी दुखी होता है और सन्तान पर भी उस का पूर्ण रूप कुप्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता वाणी की मधुरता शत्रुओं को भी मित्र बना सकती है यदि इस मधुरता के साथ सत्य भी मिला हो तो बहुत ही श्रेष्ठ है। क्यों कि वाणी की मधुरता और सचाई यह दोनों गुण हैं। मनु भगवान लिखते हैं।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्य मप्रियम्।

प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः॥

अर्थात् बाणी से जब भी मनुष्य शब्द उच्चारण करे तो सत्य और प्रिय शब्द उचारे। अप्रिय सत्य जो हो उसको भी न उचारा जाए अनृतवचन यदि प्रिय भी हों तो भी न उचारा जाए यह सत्य सनातन धर्म है।

सती नारी और लक्ष्मी इन का नित्य ही जौड़।

जिस घर सती नारी रहे तिहिं घर आवे दौड़॥

मनुष्य की वाणी सब इन्द्रियों में प्रधान मानी गयी है कर्मेन्द्रियों में इस के अतिरिक्त मृत्यु है। ज्ञानेन्द्रियों में तो गुरु का

CC-0. Late Pt. Mahmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अधिकार रखती है। और कर्मेन्द्रियों में माता का दर्जा। गुरु नानक देव ने कहा है :—"कर्म खण्ड की वाणी ओर" यों समझो ये ब्रह्मा, विष्णु और महेश है। वाणी पानी (रस) से बनी हुई है। रसभरी वाणी को अमृत वाणी कहते हैं। बिना रस के वाणी-वाणी नहीं रहती

वाणी में रस के गुण:—

कड़वापनः—जिह्वा के अन्त में होता है।
खट्टापनः—जिह्वा के मध्य में होता है।
नमकपनः—जिह्व के अग्रभाग में होता है।
मीठापनः—सारी जिह्वा में चारों ओर ही होता है।

वाणी के दोष:-

असत्यभाषण—व्यर्थबोलना—वादविवाद-गाली देना—निन्दा चुगली-कटु— कठोर—असभ्यभाषण—अशुभवचन—खुशामद विश्वासघात—छलमयी वाणी। शराब-मांस—अण्डा,मछली तम्बाकू भंग, चरस तथा अफीमादि के प्रयोग करने से भी वाणी दोषयुक्त हो जाती है।

कुटिल वचन सब से बुरा, जार करे तन छार
साधु वचन जल रुप है, बरसे अमृत धार॥
शीतल शब्द उचारिये, अहम आइये नाहीं।
तेरा प्रीतम तुझ में, दुश्मन भी तुझ मांही॥
शब्द बराबर धन नहीं, जो कोई जाने बोल।
हीरा तो दामों तुले, शब्द का मोल न तोल।
नारायण इस जगत में, यह आवत दो काम।
सब से मीठा बोलना,पर उपकारी काम॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आप भी शीतल होय ।

पाँचवीं बात

सोसायटी की उत्तमता:— मित्रमण्डली—जिस मित्र मण्डली में नर और नारी बैठते हैं वह उत्तम होनी चाहिये। पवित्र सोसायटी में बैठने से नर-नारी, बाल-वृद्ध युवा-युवती के संस्कार अच्छे रह सकते हैं अन्यथा नहीं। वर्तमान भारत में जैसे सुव्यवस्थित गृहस्था श्रम की कमी है-ऐसे ही अच्छी सोसायटियों का भी सर्वथा अभाव है। और किसी भाग्यवान सद्गृहस्थी को ही ऐसी सोसायटी प्राप्त होती होगी। जहां भी दृष्टि डाली जाए प्राय: लोग असत्य, अनाचार, दुर्व्यवहार द्यूतक्रीड़ा सिनेमा, मद्य-मांस भंग-चरस, अफीम सिगरट-तम्बाकू, आहारी, फ़रेब, दगा, धोखाबाज़ी, रिश्वत, विश्वासघात आदि दुर्व्यसनों के अभ्यासी हैं। इस समय जो पवित्र आत्माएं हैं उन्हें कोई निकट बिठाना पसंद नहीं करता, क्यों कि वर्तमान काल में अधर्म और पाप का व्यवहार होने के कारण धर्ममूर्ति सतपुरुष और पुण्यात्माओं को लोग प्राय: मूर्ख ही समझते हैं। जो असत्यवादी झूठी गवाहियां देने वाले तथा लड़ाई-झगड़ा कराने वाले हैं उन का सर्वत्र सम्मान है। इसलिये अच्छे मित्रमण्डल कहां से मिलें। इस बात का विशेषरूप से ध्यान रखना चाहिये कि बुरी संगति में पड़ कर अच्छा पुरुष भी बुरा बन सकता है। फारसी के कवि ने कहा है:

सोहबते सालह तुरा सालह कुनद ।
सोहबते तालह तुरा तालह कुनद ॥

अर्थात् अच्छी संगत से मनुष्य अच्छा और बुरी संगति से बुरा बन सकता है। महाभारत से ज्ञात होता है कि भीष्मपितामह

CC-0. Late Pt. Mahmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

जैसे महा आदित्य ब्रह्मचारी और द्रोणाचार्य जैसे विद्वान-महाबली पुरुष भी कुसंगति में पड़कर पाप कर्म करने से न बच सके। महाभारत में लिखा हैः—

असतां संगदोषेण साधवो यान्ति विक्रियाम् ।
दुर्योधन प्रसङ्गेण भीष्मो गोहरणे गतः ॥

अर्थात् पापी दुर्योधन के साथ मिलकर भीष्म द्रोणादि ने भी विराट की गौओं को चुराया। इसलिये बुरी संगति का प्रभाव बुरा ही होता है। जैसा कि कौए से मिल कर हंस ने दुःख उठाया था।

जिज्ञासु—महाराज। हँस ने कौए के संग से कैसे दुःख उठाया था। कृपया बताने का कष्ट करें।

महात्मा— एक समय एक कौआ मान सरोवर जा पहुंचा क्या देखता है, चारों ओर हंस की टोलियां घूम रही हैं। हंसों ने जब कौए को देखा तो आपस में विचार करने लगे कि देखें यह विलक्षण पक्षी कहां से आगया है। तो एक हंस कौए के निकट जाकर पूछता है भाई। आप कौन हो? प्यारे। सभी जानते हैं कि कौआ बड़ा चतुर पक्षी होता है। अब कौए ने उत्तर देने की बजाए हंस से पूछा कि तुम कौन हो ? हंस ने कहा भाई! मैं तो हंस हूँ। यह उत्तर सुन कर कौए ने कहा, मैं भी हंस हूं फिर हंस आश्चर्य पूर्वक पूछता है कि भाई! तुम तो काले हो हंस भी कभी काले हुआ करते हैं? तब कौए ने हंस कर कहा—मित्र। हमारे हां गरमी अधिक पड़ती है। इस गरमी के कारण ही मैं भी काला हो गया हूँ। हंस ने अपने पवित्र भाव से कौए की कथनी पर विश्वास कर लिया प्यारे! भद्र पुरुष सभी को भद्र दृष्टि से देखते हैं। पापी को सभी पापी नज़र आते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तू भला सब जग भला, भला भला कर देखे।

तू बुरा सब जग बुरा। बुरा बुरा कर देखे ॥

यह प्रकृति नियम है। तदनुसार हंस ने कौए पर विश्वास कर लिया।

और कौए से कहा, आओ, भाई। पहले मोती चुग लें। यह सब सुन कर कौए ने विचारा कि सब से पूर्व इन की गति की जांच कर लूँ। सो कई दिन तक उनकी चाल आदि का अभ्यास करता रहा। परिणाम यह हुआ कि अपनी चाल भी भूल गया। तब यह निश्चय किया कि यहां से चल देना ही भला है। यह सोचा कर कौए ने हंस से कहा से कहा कि भाई। मैं तो यहां से चलता हूं क्यों कि मेरा यहां पर दिल नहीं लगता। तब उस के मित्र हंस ने कहा भाई। यह मान सरोवर है। बड़ा उत्तम स्थान है। कौऐ ने कहा आप का कथन सत्य है। आप ने यहां जन्म लिया और यहां पर पले। आप की यह जन्म भूमि हुई। आप का मन यहां लगा हुआ है। मैं ने अपना मन यहां लगाने के लिये बड़ा यत्न किया परन्तु मन लगता ही नहीं। मुझे जब अपने सुख साधन युक्त अपने स्थान सामने आते हैं तो उदास हो जाता हूं। अतः मैं तो अब यहां से जाता हूं। अब हंस ने पूछा कि आपका स्थान क्या मान सरोवर से उतम है? कौआ कहता है, भाई आप तो यहां पेट भरने को एक २ मोती ढूंडते हैं पर वहां तो मोतियों के ढेर के ढेर लगे हुऐ हैं। तुम्हारी तरह वहां पर शिला नहीं चुगना पड़ता। अब हंस नें कहा अच्छा भाई! मैं भी आप के देश में अवश्य आऊंगा। कौआ अपना पता बता कर चला गया। कुछ समय बीतने पर हंस ने सोचा, वचन दे चुका हूँ—कल नाम काल का है, पता नहीं जीवित हूंगा या नहीं वचन पालना चाहिये। अब हंस कौऐ के बतलाये हुए पते पर जा कर क्या देखता है कि कौआ अपनी चोंच से विष्टा कुरेद रहा है और कायं कायं कर रहा है। यह दृश्य देख कर हंस को बड़ी ग्लानी हुई। कौआ अपने स्वभाविक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कृत्य से हट कर चोंच साफ़ करके हंस के समीप आ बैठा और कुशल क्षेम पूछने लगा। परन्तु हंस ने तो उसे पहले आते ही देख लिया था। अतः वह उस से घृणा करने लगा। अब जब कौए को यह भान हुआ कि यह मुझ से घृणा करता है तो उसी समय उस ने प्रतिकार रूप उस के साथ बुराई करने की मन में ठान ली। उसी समय एक यात्री उस वृक्ष के नीचे आकर सो गया। कौए ने उस यात्री के ऊपर विष्ठा डाल कर उस के कपड़े गन्दे कर दिए और फिर हंस से आ कर कहा, भाई ! तुम मेरे स्थान पर आ कर बैठो, मैं तुम्हारे लिये मोती चुगने जाता हूँ। कौए की बात सुनकर हंस सरल स्वभाव हृदय से तत्काल कौए के स्थान पर जा बैठा। नीचे क्या देखता है कि एक यात्री लेटा हुआ है और गहरी नींद में पड़ा है और उस के मुख पर तेज धूप आ गई है उस ने उस पर छाया करने के लिए अपने पंखों को फैला दिया। हंस इस बात से अनभिज्ञ था कि कौआ यात्री पर विष्ठा कर गया है। अब यात्री नींद से जागा, क्या देखा सारे कपड़े विष्ठा से मलीन हो रहे हैं, ऊपर झांक कर देखा—एक पक्षी पर फैलाए बैठा है। यही अनुभव कर कि इसी दुष्ट पक्षी ने मेरे वस्त्र खराब किए हैं—क्रोधावेश में तीर मार कर तत्काल उसे मृत्यु के घाट उतार दिया। किसी महात्मा ने सच कहा है—

> भला भलाई न तजे, मूर्ख बुध न लेय ।
> काम धेनु विष्टाचरे, तो भी अमृत देय ॥

भले पुरुष अपनी भलाई का त्याग नहीं करते चाहे उन पर कितने ही संकट भी न आ जावें। इसी प्रकार बुरे अपनी बुराई का त्याग नहीं करते चाहे उन को कितना ही सुख व शिक्षा न दी जाय। गिरते हुए हंस के मुख से यह शब्द निकलते हैं।

> [illegible] कूटे सागर सुत, सुनो हरि अलबंस ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जो संगत बैठे नीच की, तो पाए यह फल हंस ॥

अर्थात हंस कहता है कि मैं ने नीच की संगति की तो आज तीर से पिरोया गया अन्यथा जहां मैं जाता था वहां लोग मुझे देखने को आया करते थे परन्तु ऐ हरे वृक्ष ! तुम मेरे साक्षी रहना। यदि मुझ से कोई बुरा कर्म हुआ है तो साथ ही साथ यह भी साक्षी देना कि मैं ने नीच से मिलाप किया था तभी मेरी यह दुर्दशा हुई। अतः जो गृहस्थी सुखी रहना चाहता है उसे सदा भद्र पुरुषों की संगति करनी चाहिए।

छटी बात :—धन की प्राप्ति

बिना धन के गृहस्थ के सभी कार्य बिगड़ जाते हैं। वेद में लिखा है—

ओ३म् इहैव धुर्वा प्रतितिष्ठ शाले अश्वावती गोमती सूनृतावती ऊर्जस्वती पथस्व त्युद्यस्य महते सौभगाय ॥ अ० १३-१२-२

अर्थात—हे शाले, यहां पर दृढ़ हो कर अपनी नींव जमा और गौओं, घोड़ों अन्न-दुग्ध-मीठी वाणियों और घृत से माला-माल हुई तू बड़े सौभाग्य के लिए ऊंची हो। धन के बिना गृहस्थी की आवश्वकताएं पूर्ण नहीं हो सकतीं। गृहस्थाश्रम यदि धन का भण्डार हो तो दूसरे आश्रम फल फूल सकते हैं अन्यथा ब्रह्मचर्य बानप्रस्थ, सन्यास इन तीनों आश्रमों की व्यवस्थाएं बिगड़ जाती हैं।

धन बिन गृहस्थाश्रम बरबाद। घर सूना बिगड़ें सब काज ॥
दूध बिना बालक नहीं पलते। युवक वृद्ध न कभी संभलते ॥
दान दिये बिन गृहस्थ का नाश। लोक प्रलोक होंहि विनाश ॥
धन बिन गृहस्थी करे क्या दान। गृहस्थ बने तब पाप की खान ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

वर्तमान काल में धन के बिना पति-पत्नि का प्रेम नहीं रहता। भाई—भाई के हृदय में क्लेश उत्पन्न हो जाता है। अर्थात् उच्च से उच्च कुलों की अवस्था खराब हो जाती है। समष्टि और व्यष्टि जगत का ढांचा हिल जाता है। अतः कम से कम निर्वाह मात्र धन तो गृहस्थी के पास अवश्य ही होना चाहिए।

सातवीं बात

पत्नी तथा पत्नी का प्रेम—पुरुष स्त्रिव्रती हो तथा स्त्रियां पतिव्रता हों यही सनातन धर्म है। इस धर्म का नाश होने से प्रजा में दुराचार फैल जाता है। सीता को रावण ने चुराया तो लंका का सर्वनाश हो गया। अर्थात् स्त्रियों में पतिव्रत धर्म का होना तप है। इस से स्त्री जाति बहुत ऊंची उठ जाती है। पतिव्रत धर्म के कारण ही सीता रावण को फटकारती है और निर्भय होकर उस का मुकाबिला करती है। जब रावण ने सीता से कहा कि तू मेरी पटरानी बन जा तो उस समय भगवती सीता ने जो उत्तर दिया है उसे सकल स्त्री जाति को अपनाना चाहिये। कवि लिखता है:—

ए पापी , तुझे लोग पण्डित कहें।
तेरे कर्म में पाप समाया हुआ है॥
गिरे मन के विचार इतने तेरे।
के पर नारी में मन लगाया हुआ है॥
मत भूल मैं विद्युत् हूँ पकड़ी हुई।
यदि जीना चाहे तू संसार में॥
यदि चाहे तो मरने से कर प्रेम तू!
सीता, काल तुम्हारा आया हुआ है॥
पुत्री जनक की जानकी हूं जग में।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पत्नी राम की मान की मूर्ति हूं ॥
मर मिटूंगी धर्म पर इसी ठौर में ।
यह तो मन में मेरे भी समाया हुआ है ॥
बिना राम के स्वप्न में भी पर पुरुष से ।
नहीं प्रीति करूंगी कभी जीते जी ॥
तुम ने समझा है क्या इस पतिव्रता को
व्यर्थ आकर शोर मचाया हुआ है ॥
सूर्य चन्द्र आकाश से भू पर गिरें ।
सिन्धु सूख जाए पानी बिंदु न होए ॥
यह असम्भव-सम्भव होए यदि ।
सिया ने राम से प्रेम लगाया हुआ है ।
जाओ मूर्ख न छेड़ो पतिव्रता को ।
जिस के हृदय में न है ताप लेश ॥
न मैं भयभीत हूं तेरी धमकियों से ।
मन राम के चरणों में लगाया हुआ है ॥

प्राचीन और आधुनिक सुशिक्षित पतिव्रता नारी

एक मोहवश मनुष्य ने अपने पुत्र का विवाह बाल्यावस्था में अर्थात् दस बारह वर्ष की आयु में ही कर दिया । तथा बालक स्कूल में पढ़ता रहा । ब्याही हुई कन्या छोटी बालिका थी;प्रायः माता पिता के घर ही रहती थी परन्तु कुलीन थी । अब बालक ने बी० ए० पास करलिया तो वह अपनी विवाहिता के साथ रहना पसन्द नहीं करता । उस की इच्छा है कि कोई बी०ए० पास लड़की होनी चाहिये,पिता ग्रनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

था। कई बार पुत्र को समझाया परन्तु वह बाज न आया, अन्त में एक ग्रैजुएट कन्या से विवाह करदिया गया और पूर्व विवाहिता को त्याग दिया। और वह अपने मातापिता के यहां रहते हुए सदा अपने पति के हित और कल्याणार्थ प्रभु से प्रार्थना करती रहती थी। दैवयोग से पति बीमार होगया। उस के मातापिता तो पहले ही स्वर्गवास हो चुके थे। जो धनसम्पत्ति थी वह रोग चिकित्सा पर व्यय हो गयी। अब पैसा तक पास न रहा। तब वह बी० ए० पास पत्नी रोगग्रस्त पति का त्याग करके मायके चली गयी अब पति बेचारा अकेला पड़ा। त्राहिमां त्राहिमां कर रहा है। अब पहली बचपन अवस्था में ब्याही गई देवी को पता लगा कि उस का पति अकेला रोगग्रस्त पड़ा हुआ है तो उसे बड़ा दुःख हुआ। अतः वह अपने माता पिता से आज्ञा ले कर मर्दाना भेष धारण कर सेवक के रूप में वहां पहुंच गयी और कहा, क्या आप को सेवक चाहिये। रोगी ने कहा सेवक तो मुझे अवश्य चाहिये पर दाम मेरे पल्ले नहीं जो आप की सेवा के बदले दे सकूं। अब सेवक ने कहा मुझे दाम नहीं चाहिये। मैं स्वयं सेवक हूँ। अपनी श्रद्धा भावना से सेवा करूंगा। उस ने डाक्टर को बुलाया तो डाक्टर ने कहा इस के शरीर में मनुष्य के रक्त का प्रवेश करना होगा। अपना रक्त इसके लिये कौन देगा? सेवक ने कहा मैं ही अपना रक्त देने को तैयार हूं तब उस ने अपना खून दे दिया। खून देना तो प्रेमार्पण करना होता है। जैसे सेवा समिति वाले हृदय से सेवा करते हैं अतः उन्हें कष्ट नहीं होता। यह है प्रेम। प्रभु कृपा से वह लड़का अच्छा हो गया। परमात्मा का धन्यवाद किया। सेवक ने पूछा-कि क्या आप ने विवाह नहीं किया था? उसने उत्तर दिया विवाह तो दो किये थे। बी० ए० पास तो कृतघ्नता का रूप बनकर चली गई और पहली देवीको मैंने उस ग्रेजुएट देवी की विद्या तथा रंगरूप पर लट्टू होकर घर से निकाल दिया था।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सेवक ने पूछा-तो फिर आप ने पहली देवी को क्यों नहीं बुलाया उत्तर दिया वह अब क्यों आती। मेरा दुर्दैव अब उस को मेरे पास कैसे आने देगा ? सेवक ने फिर पूछा क्या आप उस को चाहते हैं। कहा कि चाहता तो हूं मेरा कोई साथी तो चाहिये । तब सेवक अन्दर चला गया भेष बदलकर अपने वास्तविक स्वरूप में सम्मुख आ गयी और कहा यह लीजिए मैं आपकी दासी उपस्थित हूँ। अब दोनों गले लग बिलख-बिलख रोने लगे और सदा के लिये सस्प्रेम गृहस्थ निभाने लगे ।

भारत के राज्याधिकारियों के सिद्धान्त व नियमों को देखो जो दिन प्रति दिन नये बनाये जा रहे हैं यह स्वार्थवादी क्या जाने —मातृ शक्ति क्या होती है। तलाक का नियम पास कर के भारत की मातृ शक्ति को निर्लज्जता ईर्ष्या तथा द्वेषाग्नि का रूप बना कर भारत की प्राचीनतम संस्कृति का सत्यानाश कर रहे हैं। शाप मिले गा उन महा तपस्वी ऋषि—मुनियों का और परमात्मा का जो घर घर में एकता का नाश और फूट का वास उत्पन्न कर रहे हैं। भगवान इन दुर्बुद्धि राज्याधिकारियों को सुबुद्धि प्रदान करें ताकि भगवान के वेद सिद्धन्त तथा ऋषि मुनियों की आज्ञाओं पर आचरण कर भारत की डूबती नौका को बचाये। जिस से भारत में सत्य, अहिंसा और धर्म कर्तव्य का राज फिर से स्थापित हो ताकि देश सुख शान्ति तथा आनन्द का धाम बन जाय।

प्रश्न होता है कि क्या सत्य और अहिंसा के बिना राष्ट्र शासन स्थिर नहीं रह सकता ? नहीं। जिस राष्ट्र से सत्य तथा अहिंसा निकल जाती है उस देशका शासन किसी भी प्रकार नहीं चल सकता, क्योंकि सत्य और अहिंसा की रक्षा केलिये राष्ट्र की ही आवश्यकता होती है। जो गुण स्वयं राष्ट्रके जीवन का स्वरूप नहीं है भला उस गुणकी राष्ट्र रक्षा ही कैसे कर सकता है अर्थात् नहीं कर सकता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

साधारण मानव सत्य और अहिंसा को राष्ट्र की आवश्यक प्रणाली नहीं मानते। यह वास्तव में भूल है क्योंकि धर्म और राष्ट्र का परस्पर अन्योन्याश्रय सम्बंध हैं जिस प्रकार सेना का विभाग राष्ट्र के जान तथा माल की रक्षा करता है उसी प्रकार राष्ट्र धर्म की रक्षा करता है। अतः राष्ट्र धर्म का अंग है और धर्म मानव का जीवन है जो राष्ट्र मानव जीवन की पूर्ति में असमर्थ है वह राष्ट्र स्थिर नहीं रह सकता।

सभी राष्ट्रों का परिवर्तन तब हुआ है जब राष्ट्र में स्वार्थ की अधिकता तथा सत्य और अहिंसा की कमी हुई है। सत्य की कमी से ठीक प्रकार न्याय भी नहीं हो सकता और अहिंसा के अभाव से प्रजा का दुख भी दिखायी नहीं देता। जो राष्ट्र न्याय नहीं कर सकता तथा प्रजा के दुख से दुखी नहीं होता—भला वह राष्ट्र अच्छा शासन कर सकता है ? अर्थात् नहीं कर सकता।

आठवीं बातः—आज्ञा कारी सेवकः—गृहस्थी के घर में जो सेवक हो—वह आज्ञाकारी हो—क्योंकि जिस घर में छोटे मनुष्य बड़ों की आज्ञा पालन नहीं करते वह घर भी क्लेश का कारण बन जाता है इस लिये बड़ों को विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि प्रत्येक आज्ञा सोच समझ कर दें। ऐसे सेवकों और अपने लिये खाने पीने के विषय में भेद भाव न रखें जैसा भोजन स्वयं करे वैसा भोजन अपने सेवकों को करायें यही शास्त्र आज्ञा है तथा न्याय भी है।

नौवीं बातः—(नवम बात) अतिथि सत्कारः—जिस घर में अतिथि यज्ञ नहीं होता वह गृहस्थी जिस अन्न को खाता है वह अन्न भी उस पापी गृहस्थी को खा जाता है—जो दूसरों को विना दिये इस अन्न को खाता है—उस को भी ऊपरोक्त दशा होती है। इस अतिथि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यज्ञके सम्बंध में विस्तार पूर्वक अध्ययन लेखक की लिखी पुस्तक "अतिथि यज्ञ प्रसाद" विस्तार अध्ययन के लिये पढ़ें। गृहस्थ आश्रम के विस्तार पूर्वक बोध केलिये लेखक की "नारी धर्म—कर्तव्य प्रसाद" पुस्तक पढ़ें। इस प्रकार गृहस्थ आश्रम के कर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त कर के गृहस्थ स्वर्गधाम बनायें। बहुत ही कल्याण होगा।

दसवीं बात:—प्रभु भक्तिः—बिना प्रभु भक्ति के गृहस्थ श्मशान तुल्य होती है। और गृहस्थ का सब आनन्द भंग हो जाता है। प्रभु उपासना के बिना यह देह निरर्थक है महात्माओं का कथन है।

जिस घर साध न सेवये, हर की पूजा नांहि।
सो घर मरघट सा दिखे भूत बसे तिहिं मांहि॥

अर्थात् जिस घर में प्रभु का पूजन नहीं होता और सत्य-पुरुषों की संगति नहीं होती—वह घर शमशान तुल्य है। उस घर में रहने वाले तो भूत ही हैं अतः वह घर पवित्र है जिस में नर—नारी—बाल वृद्ध नित्य प्रति अमृत वेले उठ कर सन्ध्या प्रार्थना हवन, भजन और वेद गान (पाठ) करते हैं। बिना पंच महा—यज्ञ किये जो गृहस्थी अन्न खाता है वह परमात्मा का चोर है। घर में सत्संग होने पर जितने भी नर नारी—बाल—वृद्ध होते है उन के विचार पवित्र हो जाते हैं। कहावत है जमाअत में करामात है अथवा संगठन में शक्ति है सत्संग में यह लोक और परलोक दोनों सुधर जाते हैं। अनेक प्रकार के कुकर्मों से गृहस्थी बच जाता है अपना जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करता है और परमात्मा के सम्मुख उज्जवल मुख ले कर उपस्थित होता है—इस विषय में संत जनों ने क्या ही अच्छा कहा है।

सत्संगत को पाय कर, पापी बन गये संत
किस किस का वर्णन करूं, तर गये लोक अनन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कबीर भक्त पाये संगति, कपड़ा बुनता पार भया
गृहस्थ में रहता सुकर्म को करता, संतो में शुमार हुआ
नाम देव छीपे घर जन्मा, प्रभु भक्ति में मन लागा
संगत सतों की पाकर, अज्ञान निद्रा को त्यागा
भयो तन मन निर्मल, मान करे लाखों पति लोग
रगंमा ठेकन कारत करता, रहा प्रभु के साथ संयोग
वाल्मीकी रवि दास उद्धार भयो, जब संतों की संगति पाई
साधना-सैन दोनों ही तर गये, और तर गई मीरां बाई
विरजानन्द की संगति पाय, मूल भये ऋषि दयानंद
नास्तिक से आस्तिक बने भये मुन्शी से श्रद्धा नन्द
सन्त की महिमा को यह अल्पज्ञ जीव, कैसे यह जान सकता है
ब्रह्मा, शिव, नारदादि मनुवर, थके जो चार वेद के वक्ता हैं

संगति की इस महिमा को यह अल्प भक्त जन कैसे जान सकता है जब कि बड़े बड़े ऋषि मुनि और वेद-वक्ता भी इस का गान करते करते थक गये ।

प्रभु स्तुतिः-

विश्व पति तेरी महिमा गाते, ऋषि मुनि सब श्रांत हुए
भूल प्रभु आप को वह जन, विषयों में जो आसक्त हुए
नियमों को पालें जो जन प्रभुवर होवें भव सागर से पार
नियम भंग कर चले जो जग में, काले मुख तिन के प्रभु द्वार
ब्रह्मचर्य आश्रम पूर्ण कर, जो गृहस्थ आश्रम में करे प्रवेश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वह पवित्र जन शुद्ध मन लेकर जाते पार ब्रह्म के देश !
वेदों की आज्ञा को पालन कर
जो जन करते जनम व्यतीत
मानुष जनम सफल कर जाते
होती जिन की प्रभु से प्रीत,

अन्तिम प्रार्थना

विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीषा अनागसः
उद्यन्त त्वा मित्र महो दिवे दिवे ज्योग जीवाः प्रीत पश्येम सूर्य ॥

ऋ० १०-६७-७

अर्थात् ऐ सूर्य। ऐ प्रचण्ड ज्योति के भण्डार, हम दीर्घ काल तक सजीव रहें और प्रति दिन तुम्हें उदय होते हुए देखते रहें (और तुझ से प्रेरणा पाते हुए) स्वस्थ मनों वाले स्वस्थ इन्द्रियों तथा स्वस्थ प्रजा वाले होवें। कोई रोग अथवा व्याधि हमें छू न सके।

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये।
यह मन न जाने क्या क्या दिखाये,
कुछ बन न पाया मेरे बनाये।
संसार में ही आसक्त रह कर,
दिन रात अपने मतलब की कह कर।
सुख के लिये लाखों दुःख सह कर
यह दिन अभी तक यूँ ही बिताये
ऐसा जगा दो कि फिर सो न जाओ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अपने को निष्काम प्रेमी बनाओ
मैं आप को ही चाहुँ वा पाऊँ
संसार का कुछ भय रह न जाय ।
वह योग्यता दो सत्य कर्म कर लूँ
अपने हृदय में सद्भाव भर लूँ ।
नर तन साधन, से भव सिन्धु तर लूँ
ऐसा समय फिर आये न आये।
हे प्रभु हमें निराभिमानी बना दो
दारिद्र हर कर दानी बना दो
आनन्द मय विज्ञानी बना दो
मैं हूँ पथिक यह आशा लगाये
ओ३म् शान्ति । शान्ति । शान्ति ।

———

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म्

तीसरा उपदेश

भूत-वर्तमान देश की अवस्था—उन्नति के साधन

ओ३म् ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीद् बाहु राजन्यः कृतः ।
उरु तदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ॥ (यजु० ३१।११)

अर्थात्—विराट रूप ईश्वर के चार अङ्ग हैं। ब्राह्मण मुख है, राजा लोग अर्थात् क्षत्रिय भुजा हैं । वैश्य शरीर का धड़ अथवा जांघ है। शूद्र पांव हैं।

इस प्रकार से हमारे धर्म में चारों वर्णों के कर्तव्यों का दिग् दर्शन करा दिया गया है। मुख का शिरोभाग ज्ञान प्रधान है । इस लिए ब्राह्मणों का कर्तव्य है कि वे सहन शील और क्षमा की मूर्त्ति हों। वेदों को आप पढ़ें और दूसरों को पढ़ावें, दान दें और लें, स्वयं यज्ञ करें और करवावें । लोभ रहित विद्यानुरागी हों । इस लिये ब्राह्मण का कर्तव्य है कि विद्या तथा ज्ञान द्वारा सब वर्णों की सेवा करें। राजा लोग अर्थात् क्षत्रीय बल प्रधान हैं । अतः उन के लिए उचित है कि प्रजा का पालन और दुष्टों का दमन करके देश की सेवा करें। वैश्य लोग धन अथवा व्यवसाय प्रधान हैं। अतः उनको उचित है कि जिस प्रकार शरीर का मध्य भाग भोजन पा कर सारे शरीर में उस का रस पहुँचाता है उसी प्रकार वैश्य लोग व्यवसाय द्वारा धन कमा कर देश की सेवा में लगा दें । रहे शूद्र वर्ण, उनका कर्तव्य है कि अपनी अनन्य सेवाओं द्वारा समाज की सेवा करें।

अब ध्यान रखिये ! बात यह है कि इन चारों वर्णों में कोई छोटा अथवा बड़ा नहीं है। सब अपने २ कर्मों में श्रेष्ठ हैं । कोई भी यदि अपने कर्तव्य को नहीं करेगा तो वह दोष का भागी होगा। चाहे ब्राह्मण हो अथवा शूद्र, देश वा जन समाज के लिये सब की समान रूप से आवश्यकता है। शरीर का यदि कोई भाग न रहे अथवा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निकम्मा हो जाए तो दूसरे का काम नहीं चल सकता, सारा शरीर निकम्मा हो जाएगा। इस प्रकार चारों वर्णों का भी यही हाल है। यदि कोई कहे कि शूद्र छोटा है तो यह उस की बड़ी भारी भूल है। क्योंकि यदि शरीर अपने पांव की सेवा न करे, लापरवाही से काम ले और उसे कष्ट दे तो अपने ही पैर पर कुल्हाड़ा मारेगा। देश को विद्या, बल, धन तथा श्रम सेवा इन चारों की ही समान रूप से आवश्यकता है। इन्हीं चारों का सम भाव और परस्पर सम्मान जब से इस धर्म प्रधान देश से उठ गया है तभी से यह देश पीड़ित हो रहा है। इस लिये चारों वर्णों को एक दूसरे का सम्मान करते हुए अपने धर्म अथवा कर्तव्य का पालन निरन्तर करते रहना चाहिये। भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी ने कहा है कि—

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्ति रार्जव मेव च। ज्ञानं विज्ञान मास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम्॥

अर्थात्—यह ब्राह्मण का स्वाभाविक धर्म है कि शम अर्थात् अपने मन को वश में रक्खे, दम—इन्द्रियों को अपने वश में रक्खे, तप—अर्थात् पवित्रता, क्षमा, सरलता, शास्त्र-ज्ञान अनुभवज्ञान और आस्तिकता परायण हो।

जब पूर्व समय के ब्राह्मण की ओर ध्यान जाता है, तो मन में उत्साह पैदा होता है कि किस प्रकार राजे-महाराजे उनके चरणों में सिर झुका देते थे।

जिज्ञासुः—भगवन्! किसी ऐसे बलवान विप्र की क्षमा का उदाहरण देकर इस सन्देह को दूर कीजिए।

महात्माः—सुनिए! महाभारत में एक कथा आती है। द्रोण तथा द्रुपद दोनों महर्षि भारद्वाज के आश्रम में विद्या अध्ययन करते थे। एक समय द्रुपद ने अपने मित्र द्रोण से प्रतिज्ञा की कि जिस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समय मैं राज्य अधिकार प्राप्त करूँगा तो आधा राज्य तुम को दूँगा। हम दोनों भाई प्रजा का पालन पोषण करेंगे।

समय पाकर द्रोण तो परशुराम के पास विद्या अध्ययन को चले। और द्रुपद राज सिंहासन पर बैठ गए और अपनी प्रजा का पालन पोषण और शासन करने लगा। द्रोणाचार्य भी विद्याध्ययन कर गुरु से आज्ञा पाकर घर लौट आए। कुछ दिनों के पश्चात् अपने मित्र द्रुपद से मिलने के लिए उन के घर पर गए। राज सभा में बैठे द्रुपद से कुशल प्रश्न आदि के पश्चात द्रुपद से कहने लगे—हे राजन्! मैं द्रोण हूं, आपके बाल्यकाल का मित्र हूँ। आप को स्मरण होगा कि आपने मुझ से प्रतिज्ञा की थी कि जब आप राज्य के मालिक बनेंगे तो आधा राज्य मुझे दे देंगे। अतः अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए अपना आधा राज्य प्रदान कीजिये।"

द्रोण के इन दो शब्दों को सुन कर अभिमान अहंकार के समुद्र में डूबे हुए द्रुपद उच्च स्वर से हंस पड़े, किसी महात्मा ने कहा है—

ऐसा को न जान्यो जग मांहि। प्रभुता पाए जासु मद नांहि।

अर्थात्—बहुत कम मनुष्य संसार में ऐसे हैं जो बड़े बन कर भी अभिमान से बचे रहते हैं। अभिमान में आकर मनुष्य ऐसे पाप कर बैठता है जिन का फल उस को कई जन्मों तक भोगना पड़ता है।

प्यारे! बारह सिंगा एक पशु है जब वह अपने सींगों पर दृष्टि डालता है तो गदगद हो उठता है। दिल ही दिल में सोचता है कि शोक! यदि मेरे पैर भी सुन्दर होते तो संसार में मेरे जैसा कोई सुन्दर न होता। समय आया बारह सिंगा के पीछे शिकारी ने घोड़ा दौड़ाया। प्राणों की रक्षा के लिये बारह सिंगा खूब दौड़ा। थक कर एक झाड़ी में छुपने का प्रयत्न किया तो झाड़ी में उसके सींग उलझ गए। अतः शिकारी ने उसे आ कर पकड़ लिया तब वह बारह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सिंगा बिलख-बिलख कर रोता है और कहता है कि जिन सींगों को देख कर मैं अभिमान करता था आज उन्होंने ही मुझे बन्दी बनवा दिया और जिन पाओं को मैं तुच्छ समझ कर घृणा की दृष्टि से देखता था उन्होंने ही मुझे बचाने का भरपूर यत्न किया।

अब पछताए क्या होत है जब चिड़ियां चुग गईं खेत।

विनाश काले विपरीत बुद्धिः ।

महाराजा द्रुपद अभिमान में डूबे हुए थे । कहने लगे—इस रङ्क को देखो, जो फटे पुराने कपड़े पहने हुए मुझ से अपनी मित्रता जताता है । भला सोचो क्या कभी एक नपुंसक की एक योधा से मित्रता हो सकती है ? मूर्ख और विद्वान् का क्या योग ? मित्रता का आधार समानता है । किसी विद्वान् का कथन है किः—

मृगा मृगैः सङ्ग मनु व्रजन्ति,
गावश्च गोभि स्तुरगास्तुरंगैः ।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधिया सुधिभिः,
समान शील व्यसनेषु सख्यम् ।। (नीति शतक)

अर्थात्—मृग, मृगों के साथ चलते हैं, गौयें गौओं से, घोड़े घोड़ों से, मूर्ख मूर्खों से तथा विद्वान विद्वानों से मिल कर चलते हैं। मित्रता वहीं होती है जहां पर सब समानताएं मिल जाएं । इस को महात्मा जन इस प्रकार कहते हैं—

आशा, इष्ट, उपासना, खान, पान, पहिरान ।
यह छः लक्षण जहां मिलें तहां एकता जान ।।

अर्थात—मित्रता वहां होती है जहां पर इष्ट, खानपान, पूजा, वेषभूषा, विचारादि समान हों ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सभासदो ! यह भूखा ब्राह्मण राज्य लोभ में आकर मुझ से

मित्रता प्रकट करता है। जाईये कङ्गाल (द्रोण की ओर देख कर) किसी अपने जैसे के पास जाईये। मैं तुम्हें नहीं जानता कि तुम कौन हो ?

प्रियवर ! जिस समय मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उस की बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है। ऐसे ही द्रुपद की बुद्धि का नाश हुआ, जिस से उसने अपनी भरी सभा में एक विद्वान् ब्राह्मण का निरादर किया। द्रोण इन अपमान जनक शब्दों को सुन कर चुप चाप वहां से चल पड़ते हैं परन्तु द्रुपद से कुछ नहीं कहते। वह समय की प्रतीक्षा करते हुए हस्तिनापुर की एक कुटिया में रहने लग जाते हैं।

एक समय ऐसा आया कि कौरव पुत्रों की गेंद खेलते खेलते कूएं में जा पड़ी। और वे उसे निकालने में असफल होकर द्रोण की कुटिया में आ गए। द्रोण के पूछने पर कहने लगे—भगवन् ! हमारी गेंद खेलते खेलते इस सामने वाले कूप में गिर पड़ी है। अब निराश हो कर आप की सेवा में आए हैं कृपया कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे हमारी गेंद कूप से निकल सके। बालकों की मधुर वाणी तथा दुःखित अवस्था को देख कर द्रोण बोले--अरे बच्चो, तुम क्षत्रिय कुमार होते हुए भी इतनी विद्या नहीं जानते कि कूप से गेंद निकाल सको। लो आओ हम तुम्हें एक उपाय बताते हैं जिससे तुम्हारी गेंद बाहर निकल सके।

द्रोण अपना धनुष बाण सम्भाल कर कूप पर आ जाते हैं। एक बाण कूप में उस गेंद पर फैंकते हैं। वह गेंद को बींध देता है इस पर दूसरा बाण फैंकते हैं जो पहले बाण के दूसरे सिरे को बींध देता है, इसी प्रकार अन्य बाण फैंकते चले जाते हैं। अन्त में जब बाण ऊपर तक आ गए तो द्रोण धनुष छोड़ कर खिंचे हुए बाणों द्वारा गेंद को बाहर निकाल देते हैं। और गेंद बालकों को दे देते हैं। बालक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ऋषि द्रोण का धन्यवाद करते हुए प्रसन्न चित्त हो कर आचार्य को प्रणाम करते हैं और उन से सेवा के लिये प्रार्थना करते हैं।

गुरु द्रोण ने उन बालकों से कहा कि तुम जाकर भीष्म पितामह से कहना कि वह मुझ से मिलें। बालक भीष्म जी की शरण पहुंच कर गुरु द्रोण का सब समाचार विस्तार पूर्वक सुन कर कहते हैं कि वह आप को याद करते हैं। बालकों के कहने पर भीष्म जी द्रोणाचार्य के आश्रम पर पहुंच कर नत मस्तक हो नमस्कार करते हैं। और निवेदन करते हैं "हम सब के सब कुरु आप के श्रद्धालु हैं। यह समस्त राज्य आप का ही है। प्रभु देव ! आज्ञा कीजिए कि आप की क्या सेवा करें। आप जैसे विद्वान जनों का मिलना बड़ा कठिन है। हमारे अहोभाग्य हैं जो आप हमारे नगर में पधारे हैं।"

भीष्म की इन प्रेमभरी बातों को सुन कर द्रोण कहते हैं, भीष्म जी। "मुझे न राज्य की इच्छा है न धन की। मैं ब्राह्मण हूँ—मुझे राज्य और धन से क्या प्रयोजन ? मेरे पास शस्त्रविद्यारूपी धन है। अतः अब मेरी इच्छा है कि मैं आपके १०६ राज कुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा दूं ताकि वे सब क्षत्रि कुमार शस्त्रविद्या में प्रवीण हो जाएं; अतः आप इन सब को मेरे सुपुर्द कर दीजिए।

भीष्म जी ने सभी राज कुमारों को आचार्य द्रोण के सपुर्द कर दिया और वे इन्हें प्रीतिपूर्वक शस्त्र विद्या सिखाने लगे। गुरु कृपा तथा अपने पुरुषार्थ से राजकुमार थोड़े ही समय में धनुर्विद्या में निपुण होगए। और ब्रह्मचर्य भी पूर्णतया पालन करते रहे। जिस समय विद्या सम्पूर्ण हो जाती है तो उन की परीक्षा के लिये एक रंगभूमि की रचना होती और सब राजकुमार परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते हैं। तब भीष्म जी ने हाथ जोड़ कर आचार्य जी से प्रार्थना की कि महाराज, गुरुदक्षिणा लीजिए—ताकि आप के द्वारा पढ़ाई गई विद्या सफल हो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आचार्य जी कहते हैं—भीष्म जी। गुरुदक्षिणा मैंने आपसे नहीं किन्तु इन ब्रह्मचारियों से लेनी है। आप इस की चिन्ता न करें। मैं दक्षिणा अवश्य लूंगा। इतना कह कर गुरु जी ने अपने शिष्यों को पास बुलाकर आज्ञा दी—पुत्रो! चलो—पांचालदेश के राजा द्रुपद पर आक्रमण करदो। अपनी पठित विद्या का सत्यरूप से परीक्षण करो और मेरी गुरुदक्षिणा को चुका दो।

वे सब गुरु की आज्ञा मान कर अपने सैनिक एकत्रित करके राजा द्रुपद पर आक्रमण करने के लिये उद्यत हो जाते हैं। गुरुचरणों में नमस्कार कर अर्जुन पूछते हैं कि भगवन् क्या आज्ञा है। गुरु देव अपने प्रिय शिष्य की वाणी सुन कर कहते हैं कि आप द्रुपद को पकड़ कर मेरे सामने उपस्थित करें। भीम के लिये यह आदेश है कि वह सेना की रक्षा करे तथा शेष कार्य अन्य राजकुमारों को बांट दिया जाए। गुरु की आज्ञानुसार द्रुपद पर चढ़ाई करदी। द्रुपद भी इस समाचार को पाकर अपनी सेना एकत्रित कर शत्रुओं के सम्मुख आजाते हैं। दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध हुआ। अन्त में अर्जुन ने द्रुपद को पकड़ कर श्री गुरु चरणों में ला उपस्थित किया। तथा हाथ में नंगी तलवार लिये द्रुपद से कहा यह तलवार तेरा सर काटेगी। यदि बचना चाहते हो आचार्य जी के चरणों पर शीश झुका दो। द्रुपद अर्जुन के इन भयानक शब्दों को सुन कर अपने प्राण रक्षणार्थ गुरु चरणों पर सिर रख देता है और इस समय द्रुपद का अङ्ग—अङ्ग काम्पने लग जाता है। द्रुपद की इस बुरी अवस्था को देखकर द्रोणाचार्य कहते हैं:—

मा भैः प्राणभयाद् वीर ब्राह्मणाः क्षमिणो वयम्।
वरं ददामि ते राजन् राज्यस्यार्द्धमवाप्नुहि॥

आचार्य के शब्द हैं—राजन् भय मत कर। मैं तेरे प्राणहरण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नहीं करूंगा, क्यों कि मैं वीर विप्र हूं। विप्र के लिये शास्त्र में क्षमा बतलायी है। अतः मैं तुझे क्षमा प्रदान करता हूँ और तुझे वर देता हूँ कि तू आधे राज्य को ले क्यों कि मैं ने तुम्हारे सारे राज्य को जीत लिया है। राजन् सचेत होकर देखो—मैं कौन हूँ। मैं पूर्वपरिचित द्रोण हूँ! जिसका तुमने राज्यसभा में निरादर किया था। तू ने तो अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया परन्तु मैं उसको पूरा करता हूँ। अर्थात् गंगा के परले किनारे का राज तुझे देता हूँ तथा आधा मैं स्वयं गुरु दक्षिणा में लेता हूँ। इतना कहकर द्रुपद को वंधनमुक्त कर अभय दान देते हैं।

जिज्ञासु—महाराज! आप की अपार कृपा से मुझे ब्राह्मण के विशिष्ट धर्म का बोध हो गया है। और मुझे विश्वास होगया है कि यदि ऐसे ऐसे धर्मात्मा संसार में हों तो यह संसार मंगलधाम बन सकता है क्यों कि जिस देश के गुरु जन ज्ञानी तथा तत्त्व वेत्ता होते हैं वह देश सदा फलता फूलता रहता है। जिस देश के ब्राह्मण अथवा गुरु जन कर्तव्यहीन हो जाते हैं तो उन का नाश हो जाता है और तत्पश्चात् उस देश का भी नाश हो जाया करता है महाराज! यह जो कहा जाता है कि गौ ब्राह्मण संसार के सुधार का कारण होते हैं। इस का क्या अभिप्राय है ? कृपया युक्तियुक्त रूप में समझाने का कष्ट करें।

महात्मा—देश की उन्नति तब हो सकती है जिस समय लोगों के शरीर बलवान हों और कोई भी निर्बल न हो। दूसरे आत्मिक उन्नति अर्थात् देशवासियों की आत्माएं इतनी उच्च हों कि वे कठिन से कठिन संकट प्रसन्नतापूर्वक सहन कर सकें तथा घबराएं नहीं।

तीसरी सामाजिक उन्नति है। अर्थात्. देश में फूट का नाम न हो। और मनुष्य एक दूसरे के सहायक हों। ऐसा ही देश सुखी और उन्नतिशील हुआ करता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दुर्गति उस परिवार की, जहां परस्पर वैर ।
कोई अपना क्या बने, घर के जब सब गैर ॥

सो इन तीनों प्रकार की उन्नतियों के कारण गौ—ब्राह्मण ही हैं। अर्थात जिस देश के गो वंश का नाश हो जाता है। उस देश के शारीरिक बल का भी ह्रास हो जाता है क्योंकि शारीरिक बल बढ़ाने के लिये अच्छा भोजन घी तथा दूध चाहिये तभी शरीर बलवान् बनते हैं। और दूध—घी गौ वंश की वृद्धि पर ही निर्भर है । आज से सौ वर्ष पूर्व इस देश में दूध—घी की नदियां बहती थीं । कोई पानी मांगता तो उस की जगह दूध पिलाते थे। गृहस्थियों के द्वार पर पाँच पाँच सौ गौएं होती थीं। और केवल मुख का स्वाद बदलने के लिये मनुष्य रोटी खाते थे अन्यथा सदैव दूध—घी अथवा इन से बने पदार्थों पर ही निर्वाह करते थे । दूध—घी का बेचना पाप समझा जाता था। सम्वत् १९०० बिक्रमी की बात है जब लोग पूर्ण नीरोग और स्वस्थ होते थे उस समय यदि कोई व्यक्ति साठ वर्ष की आयु में मृत्यु पाता तो लोग कहते थे कि अब क्या ठिकाना है अब तो नव युवक भी मरने लग गये हैं उस समय चारे के लिये खुले स्थान होते थे। लोगों को पशु पालन करने में कोई कष्ट न होता था। गौ हत्या भी न होती थी क्योंकि लोग वैदिक आदर्शवादी थे। वेद में लिखा है: —

ओ३म् यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पुरुषम् ।
ते त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥

अ० १-१६-४

जो कोई हमारे गौ घोड़े तथा मनुष्यों को मारता है उस को तुम गोली से मारदो। क्यों कि जिस देश के गौवंश का नाश हो जाता है उस देश के रहने वालों की शारीरिक शक्ति का ह्रास हो जाता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है। मनुष्यों की शक्ति का नाश होने से देश की अधोगति हो जाती है। और बिना गौ रक्षा के देश की रक्षा नहीं हो सकती। इसी लिये लोग आजकल अल्पायु में मर जाते हैं। इसी प्रकार ब्राह्मणों का नाश होजाने से देश की आत्मिक तथा सामाजिक शक्तियों का ह्रास होजाता है। क्यों कि वैदिक धर्म की उच्च शिक्षा के बिना आत्मिक शक्ति बलवती नहीं हो सकती। जिन दिनों इस देश में वेदानुकूल आचरण था उस समय इस देश के वासियों की आत्माएं बलवान् होती थीं। उदाहरणार्थ प्रल्हाद भक्त का जीवन हमारे सन्मुख है। पिता द्वारा आवश्यकता से अधिक क्लेश पहुँचाने तथा तलवार निकाल कर भय दिलाने पर भी वह वीर बालक अपने उद्देश्य से तनिक भर भी विचलित नहीं हुआ अपितु अपने लक्ष्य पर और भी दृढ़ होगया। यह महत्व ब्राह्मणों की सच्ची वैदिक शिक्षा का फ़ल था।

जिज्ञासु—भगवन्! प्रल्हाद तो एक ही दिन पढ़ने गया था और उसी दिन उसके साथ विद्यालय के अध्यापकों का झगड़ा होगया था। आप कहते हैं वैदिक शिक्षा का प्रभाव था। तो क्या एक ही दिन में और वहभी पहिले ही दिन उस पर वैदिक शिक्षा का प्रभाव जम गया था? इस के अतिरिक्त उस को वैदिक शिक्षा मिली कहां से वह तो वेद तथा शास्त्रों के कट्टर विरोधी पिता का पुत्र था। तब ऐसी अवस्था में वह दृढ़ आस्तिक कैसे बन गया? कृपया इस पर प्रकाश डालने का कष्ट करें।

महात्मा:—वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ तो माता और पिता के संस्कारों से गर्भावस्था में हो जाता है। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है:—

मातृमान् पितृवान् आचार्यवान पुरुषो वेद।

अर्थात्—मातावाला, पितावाला तथा गुरु वाला पुरुष ज्ञान वान होता है। जिस की माता विदुषी तथा धर्म [illegible] और [illegible]

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

को उपदेश करने वाली हो वह बालक मातृमान कहलाता है। ऐसे ही जिसके पिता और गुरु धर्म परायण सत्यवादी तथा विद्वान् हों वह पितृवान् तथा आचार्यवान कहलाएगा। अब तुम प्रह्लाद की शिक्षा की कथा सुनो।

प्रह्लाद के पिता राक्षस थे। उन का नित्य प्रति देवताओं के साथ संग्राम रहता था। एक दिन इन्द्र के साथ बड़ा भारी युद्ध हुआ। परिणाम स्वरूप इन्द्र विजयी हुआ और हिरण्यकश्यप (प्रह्लाद का पिता) हार गया। इन्द्र ने उस को राजधानी से निकाल दिया। और प्रह्लाद की माता को बंदीकर साथ ले चला। प्रह्लाद की माता गर्भवती थी। मार्ग पर ऋषि नारद का आश्रम था। नारद ने इन्द्र से पूछा कि आप कहां से पधारे हैं ? और साथ में यह देवी कौन है।

नारद जी के पूछने पर इन्द्र कहते हैं मुनिवर ! आप को पता नहीं कि मैं इन्द्र हूं। और हिरण्यकश्यप के साथ मेरा कई दिनों से युद्ध हो रहा था। आज मैं परम पिता परमात्मा की कृपा तथा आप के आशीर्वाद से उसे जीत कर चला आ रहा हूँ। वह राजधानी छोड़कर भाग गया है। यह उस की गर्भवती महारानी है। इस गर्भ से भी एक दुष्ट ही उत्पन्न होगा। यह विचार कर, कि भविष्य में वह हम लोगों को तथा आप जैसे महात्माओं को कष्ट देगा। मैं इस गर्भ को पूर्ण तथा नष्ट करने का निश्चय कर चुका हूँ क्यों कि महर्षि पतञ्जलि योगदर्शन में लिखते हैं:—

हेयं दुःखमनागतम् ।

अर्थात् जो दुःख आने वाला है उसके नाश का उपाय पहले ही सोच लेना चाहिये। ताकि अवसर प्राप्त कर वह दुःख आप को न सता सके। अतः इस की सन्तान का इसी समय नाश करना उचित है। इस बात को सुन कर नारद अत्यन्त दुःखी हुए और कहने लगे इन्द्र ! तू बड़ा पापी है। तुझे पता नहीं कि इस के गर्भ से कौन उत्पन्न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होगा ? इस के गर्भ से एक प्रभुभक्त उत्पन्न होगा ? अतः इस अवस्था में तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम इसे बंधन मुक्त कर दो। और मेरे आश्रम में पहुँचा दो मैं ही इस के पालन पोषण का प्रबन्ध कर दूंगा। इन्द्र ऋषि के वचन को सुनकर प्रह्लाद की माता को ऋषि आश्रम में छोड़ जाते हैं। मुनि इस बात को जानते थे कि किस भांति उत्तम संतान का निर्माण हो सकता है। शास्त्रों में इस बात का वर्णन किया गया है कि :—

आश्रमे भावतात्मानं धर्मशीलं प्रसूयते

अर्थात्—मुनियों के आश्रमों में जो सन्तान पैदा होती है वह पवित्र आत्मा पैदा होती है। जिस घर में विद्वानों, तपस्वियों तथा महात्माओं के चित्र लगे रहते हैं उस घर में जो संतान उत्पन्न होती है वह धर्मात्मा, तपस्वी, विद्वान और बलवती होती है। शास्त्र के लेखानुसार प्रह्लाद की माता का पवित्र आश्रम में वास होने के कारण तिस पर भी विद्वान् महर्षियों के नित्य सदुपदेश तथा सच्चरित्रता के कारण वेद मर्यादा का पालन करने वाली सात्विक भोजनाहारी इस माता के गर्भ स्थित बालक के शरीर का निर्माण भी उसी प्रकार से सत्यता, धार्मिकता, कर्तव्यपरायणता तथा तपस्विता के सांचे में ढलता गया। क्योंकि शास्त्रकार लिखते हैं:—

अङ्गादङ्गात् संभवसि हृदयादधिजायसे।
आत्मा वै पुत्र नामासि त्वं जीव शरदः शतम् ॥

माता के अङ्गों से बालक के अङ्ग बनते हैं। माता के विचारों से बच्चे के विचार बनते हैं इत्यादि, ठीक इसी प्रकार से गर्भ स्थित में प्रह्लाद के विचार भी परिपक्व होते गये। जिस समय प्रह्लाद का जन्म हुआ, उस समय बालक की जिह्वा पर सोने की शलाका से घृत और मधु मिलाकर "ओ३म" का अक्षर लिखा और कान में ऋषि ने कहा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तू वेदोऽसि । तू वेद है ।

जिज्ञासु:—भगवन् ! बालक तो अबोध होता है। उस को इस संस्कार के तत्त्व का क्या पता चल सकता है ।

महात्मा :— प्यारे ! संस्कारों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। देखो संस्कारों का महत्व क्या है ? ग्रामोफोन की प्लेट पर मसाला लगा कर उसे एक तरफ रख दिया जाता है, एक गायक राग अलापता है। शब्द रिकार्ड पर में आ जाते हैं। जब यह रिकार्ड मशीन पर रख कर बजाया जाता है तो गायक के वे सारे शब्द उसी प्रकार निकलते हैं। प्यारे ! जब जड़ का प्रभाव जड़ पर पड़ सकता है, तो चेतन बालक पर चेतन संस्कारों का प्रभाव क्यों न पड़ेगा ? अर्थात् अवश्य ही पड़ेगा। अतः प्रह्लाद की वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ गर्भ में ही ऋषि के आश्रम में हो चुका था । जब प्रह्लाद के पिता समय पाकर अपने राज्य में आगए तब नारद मुनि ने बालक सहित माता को पति के अर्पण कर दिया। जिस समय प्रह्लाद आठ वर्ष का हुआ उस समय पढ़ने के लिये विद्यालय में भेज दिया गया। जब प्रह्लाद विद्यालय में गया तो अध्यापकों ने उसकी तख्ती पर "हिरण्यकाश्यपवे नमः हिरण्याक्षायनमः" लिख दिया। प्रह्लाद ने इस मंगलाचरण को देखकर कहा :—

मोहे काहे पढ़ावत आल जाल।

मोरि पटिया लिखदियो श्रीगोपाल

पण्डित जी महाराज । आप ने मेरी पट्टी पर एक तो मेरे पिता का नाम दूसरे मेरे चचा का नाम लिख दिया है। यह क्या किया है ? आज तो मेरा पढ़ाई का पहला दिन है। अतः मेरी पट्टी पर उस परमात्मा का मंगलाचरण लिखो। पण्डितों ने उस की बात अनसुनी करदी। जब पण्डित महोदय भोजन करने चले गए तो पीछे से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रह्लाद ने सब बालकों की तख्तियों पर लिख दिया।

ओं परमात्मने नमः।

जिस समय पण्डित जी भोजन करके वापिस लौटे तो उन्हों ने सब बालकों की तख्तियों पर "ओं परमात्मने नमः" । लिखा हुआ देखा तो पूछा यह किसने लिखा है ? सभी ने उत्तर दिया—महाराज ! राजकुमार ही ने लिखा है।

उसी समय बालकों की पट्टियां एकट्ठी कर नौकर के सिर पर रख कर प्रह्लाद को साथ लेकर पण्डित जी महाराज ! के पास पहुंच गए। और उन के सामने एक तख्ती रखकर बोले

सण्डा मर्का जाय पुकारे। प्रह्लाद बिगड़ा सब चाटड़े बिगाड़े ॥

अर्थात्—महाराज। आप का प्रह्लाद तो बिगड़ा ही था परन्तु इसने तो अन्य सब बालकों को बिगाड़ दिया है। पण्डित जी के शब्दों को सुनकर तथा पट्टियों को देखकर महाराज म्यान से तलवार निकाल कर कहते हैं—बेटा ! यह तलवार तेरा शीश काटने वाली है। बतला, कौन तेरी रक्षा कर सकता है ? पिता के इन शब्दों को सुन और म्यान से निकली खड़ग देखकर आत्मिक शक्ति सम्पन्न वह आठ वर्ष की आयु का बालक अपने पिता को वैदिक शिक्षा का परिचय देता है।

मुझ में-तुझ में खड़ग-जगत में जहां दीखत प्रभु व्यापक है।
नाश करे मोहे पकड़ खड़ग पूज्य पिता क्या ताकत है ॥

मेरे पूज्य पिता जी, मैं बाहर सर्वत्र तथा अपने हृदय मन्दिर में उस परमपिता परमात्मा को देख रहा हूं। आपमें भी उसी प्रभु के दर्शन हो रहे हैं तथा आप के इस खड़ग में भी उन्हीं को व्यापक देख रहा हूं। सर्व जगत में ही उस के दर्शन कर रहा हूं। किसी की क्या समर्थ है जो मेरा नाश कर सके क्यों कि गीता में लिखा है:—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नैनं छिंदन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

न चैनं क्लेदयंत्यापो नैनं शोषयति मारुतः ।

अर्थात्—इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकता, न इस को अग्नि जला सकती है, न इस को जल गला सकता है और न ही इस को वायु सुखा सकती है । पिता जी ! मैं अमर हूं अविनाशी हूं आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते । अस्तु–प्रह्लाद सफल हुआ ।

जिस कारण जग ढूंडया, सो तू घर ही मांहि ।

भरम का परदा है पड़ा, तासे दीखत नांहि ॥

प्यारे ! इस का नाम है–आत्मिक बल, आस्था । जिस समय वेदवेत्ता ब्राह्मण विद्वानों का नाश हो जाता है तो प्रजा के आत्म बल का भी नाश हो जाता है । आत्मिक बल के नष्ट हो जाने से शारीरिक बल निकम्मा पड़ जाता है ।

निज माता त्यागी भरत, पिता तजे प्रह्लाद ।

भाई विभीषण ने तजा, सत्य धर्म के काज ॥

धर्म प्यारा जान से यह ही करो विचार ।

धर्म ही सब नर नारी का सब सुख का आधार ॥

३. सामाजिक बल—यह भी प्रजा का जीवन है । सामाजिक बल के नष्ट हो जाने से प्रजा परस्पर लड़ झगड़ कर मिट जाती है । भाई-भाई से लड़ना आरम्भ कर देता है । विद्वान्–तपस्वी आत्माओं के न होने से देश में फूट पड़ जाती है । कोई किसी पर विश्वास नहीं करता । जो सच्चे विद्वान् तपस्वी होते हैं वे सामाजिक संगठन के पक्षपाती होते हैं वे किसी के साथ लड़ाई को देख कर प्रसन्न नहीं होते वे मिलाप के लिये ही अपने प्राणों तक न्यौछावर कर देते हैं ।

हमारे इतिहासों में जो एकता के उदाहरण मिलते हैं जिस के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

लिये दूसरे राष्ट्र सर पीट-पीट कर चीख रहे हैं कि क्या अधिकार है किसी का कि एक धनी हो दूसरा निर्धन, सब को सम्पत्ति एक जैसी होनी चाहिये । इन लोगों ने इस का यह उपाय निकाला है कि धनियों को लूटो और निर्धनों में बांट दो फिर हम सब एक जैसे हो जाएंगे ।

प्यारे ! ऐसा कहने वाले भूल रहे हैं । भला धन में तो हमारी एकता हो जाएगी; परन्तु इस का क्या इलाज होगा कि एक मनुष्य लम्बा है तो दूसरा ठिगना, एक रोगी है दूसरा नीरोग, एक की दोनों आंखें सुन्दर हैं तो दूसरा अन्धा है । बताओ इन विषयों में कैसे एकता हो सकती है ? कार्य अपूर्ण है । आईये-मैं आप को सच्ची एकता बतलाऊं-जो कि पूर्व काल में भारत में प्रचलित थी ।

महारानी सीता जब रावण की अशोकवाटिका में कैद थी तो उस समय त्रिजटा ने सीता से पूछा कि हे बहिन सीते ! तू सर्वदा अयोध्या की महिमा गाया करती है उस में क्या विशेषता है ? और लंका में कौन सी कमी है ? जिस कारण तू निन्दा करती है । सीता ने उत्तर दिया कहां अयोध्या और कहां लंका, दोनों में भूमि और आकाश का अन्तर प्रतीत होता है । त्रिजटा बोली—हां सीते, अपना घर किस को अच्छा नहीं लगता ? और कौन उस की बड़ाई नहीं करता ? यदि तू दोनों की तुलना करके दिखलादे तो मैं तेरी बात मानने को तैयार हूं । सीता उत्तर देती है ।

नगर अयोध्या सब सुखी जहां हमारो राज

छत्र छोड़ सिर एक से सब घर इन्द्र समान ॥

अर्थात्—अयोध्या में सब सुखी हैं जहां हमारा शासन है । जो सामग्री राम के घर में है वही सामग्री राम के सेवक तथा अन्य घरों में है । किसी प्रकार का भिन्न भेद नहीं और सुनो—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चित्र हूं मैं लिखी ना विचित्र चित्रकार तीया ।
पिया से वियोग के न लंका के सो हाल है ॥
मानस की कहां जहां कोकिला-कपोत-मोर ।
चकवा चकोर विन नार ना मराल है ॥
सदा मति ज्ञान में के वेद को पुराण में
के दान सन्मान में सो ऐसी एक ढाल है ॥
दारद को कपट को छल को सदा ही काल ।
पतिव्रत पुण्य यज्ञ अन्न को सुकाल है ॥

हे सखि ! अयोध्या के राज्य में तो कोई मूर्ति भी ऐसी नहीं मिलती जहां कोई दुष्ट किसी पतिव्रता स्त्री को अपहरण करके ले जा रहा हो। अयोध्या के साथ लंका की तुलना कैसे हो सकती है। लंकेश स्वयं मुझे साधु का वेश धारण करके अपहरण कर मुझे यहां ले आये हैं। मनुष्य की तो बात ही क्या कहूं अयोध्या के तो पक्षी गण भी अपने नियम का पालन करते हैं। पुनः त्रिजटा पूछती है कि वहां पुरुषों का समय विभाग कैसा है। सीता उत्तर देती है कि सब नर नारियों का समय विभाग वेद शास्त्रानुकूल अपने २ कर्तव्यों का पालन करते हुए यज्ञ शास्त्र स्वाध्याय दान करते तथा आये गये का आदर सत्कार करते हुए व्यतीत होता है। त्रिजटा ने फिर प्रश्न किया। हे आर्य सीते ! फिर वहां अकाल (दुर्भिक्ष) तो न पड़ता होगा। सीता उत्तर देती है—बहिन ! अयोध्या के राज्य में कोई निर्धन नहीं इस लिए निर्धनता छल, कपट का सदा ही अकाल है। पतिव्रत धर्म पुण्य, यज्ञ तथा अन्न का सदा सुकाल है। ऐसी अवस्था में बहिन लंका की अयोध्या से कैसे तुलना हो सकती है ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्यारे ! यह थी हमारी सामाजिक अवस्था और एकता। जब

कि हमारा धर्म एक था, धन सम्पत्ति मकान, समान थे, क्योंकि दुःख सुख सब अपने किये कर्मों का ही तो फल है। अतः हमारे कर्म तभी समान होंगे जब हम अपनी सन्तान को ब्रह्मचारी बनायेंगे, ब्रह्मचर्य व्रत पालन किये बिना जो हानियां होती हैं वे बड़ी भयङ्कर होती हैं और वर्तमान भारत की अवस्था प्रत्यक्ष है।

सारे जग में विदित है ब्रह्मचर्य का मान,
बल आयु आरोग्यता, सर्व गुणों की खान।
धर्म आयु आरोग्यता और मोक्ष का द्वार,
ब्रह्मचारी को ही मिले, व्यभिचारी दुःख भार।
ब्रह्मचर्य सुख खान है, धारण करो सुजान,
विद्या, बल, जीवन बढ़े, रोग होय सब हान।
बिन आचार मनुष्य को, कहें पवित्र न वेद,
आचार हीन नर नीच दशा, देख करे अति खेद।

वर्तमान भारत की सामाजिक अवस्था।

भला देखो क्या है हमारी हालत।
खुद इन्सान को इन्सानियत खा रही है॥
और इन्सानियत भी है ऐसी कि खुद का भी।
गुनाह के गढ़े में गिरी जा रही है॥
जहां थीं मुहब्बत की ठण्डी हवायें।
वहां गन्दगी नाच नचवा रही है॥
रहा है न हमदर्द भाई का भाई
जुदाई की कैंची चली जा रही है॥
मजहब का मकसद था मिल जुल के रहना॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मगर रस्म इस की लड़वा रही है ।
मिटा नाम ईमानदारी का ऐसा ।
कि मक्कारी हर सू नज़र आ रही है ॥
भुलाया है हम ने पुराने सबक़ को ।
नज़र क़हरे यज़दान की बल खा रही है ॥
भुलाया है ईमान का ख़ौफ हम ने ।
खुदा की खुदाई मिटी जा रही है ॥
वह इन्सान का इन्सान दुशमन बना है ।
हमें तो यही कहते शरम आ रही है ।

तीर्थ तुल्य घर ।

पद्म पुराण का यह कथन सर्वथा सत्य है कि जिस घर के भीतर सामने या आंगन में तुलसी की वाटिका है उस घर में यम के दूत (मलेरिया के मच्छर रोग उत्पादक कीटाणु तथा दूसरी प्राण नाशक व्याधियां) नहीं घुस सकते और वहां के रहने वाले अकाल मृत्यु के पंजे से बचे रहते हैं। तुलसी को घोल कर पिचकारी से मच्छरों पर छिड़कने से जो परीक्षण किए गए हैं उन से पता चलता है कि मच्छर इस की गन्ध से बहुत डरते हैं और इधर उधर भागते हैं। महाराष्ट्र में कई लोग तुलसी के गमलों को बिस्तर के पास रख कर सोते हैं और उन का कहना है कि इस से मच्छरदानी की आवश्यकता नहीं पड़ती। तुलसी का रस शरीर पर चुपड़ लेने से मच्छर नहीं काटते। रात्रि को बिस्तर पर जाने से पूर्व विना ढके हुए मुख पर तुलसी के पत्तों को मल कर सोने से मच्छर निकट नहीं आते और बिस्तर पर तुलसी के पत्ते छिड़क कर सोने से भी मच्छर निकट नहीं आते।

CC-0. In Public Domain. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चौथा उपदेश

सन्त समागम

ओ३म् को देवानाम वेसद्या वृणीते क्ा आदित्यां आदितिं ज्योतिरिह ॥ ऋ० म० ४ सू० २५ मं० ३

भावार्थ—जो विद्वानों की संगती करते हैं वह सूर्यादि के सदृश सम्पूर्ण कामनाऊं को प्राप्त कर सकते हैं ॥

प्रश्नः—गुरु और ग्रन्थ की आवश्यकता क्यों होती है ।

उत्तरः—अपने कर्तव्य का यथार्थज्ञान प्राप्त करने के लिये गुरु तथा ग्रन्थ की आवश्यकता होती है ।

प्रश्नः-क्या गुरु और ग्रन्थ के बिना कर्तव्य का ज्ञान नहीं हो सकता ।

उत्तरः—गुरु और ग्रन्थ के विना भी कर्तव्य का ज्ञान हो सकता है, यदि कर्ता को कर्तव्य के ज्ञान के लिये सच्ची व्याकुलता उत्पन्न हो जाए । जिस को व्याकुलता नहीं उत्पन्न होती उस को बाहरी सहायता लेनी आवश्यक है । व्याकुलता अग्नि के समान है अतः वह सब प्रकार के विकारों को जला देती है और हृदय आदि को शुद्ध कर देती है हृदय के शुद्ध होने पर कर्तव्य का यथार्थ ज्ञान हो जाता है। जिस प्रकार शुद्ध की हुई मिट्टी अर्थात् दूरबीन के शीशे से बहुत दूर की वस्तुएं दिखाई देती हें किन्तु अशुद्ध मिट्टी द्वारा नहीं। उसी प्रकार अन्तः करण आदि के शुद्ध होने पर कर्तव्य ज्ञान स्पष्ट हो जाता है, ऐसे विचार शील महापुरुष को गुरु और ग्रन्थ की आवश्यकता नहीं होती है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्र०:—कर्तव्य के पालन करने से क्या लाभ होता है ।

उ०:—कर्तव्य के पालन से कर्ता अभय हो जाता है अर्थात् बन्धन मुक्त हो जाता है और किसी प्रकार का दुःख शेष नहीं रहता। निर्धनता सदा के लिये मिट जाती है मोह करने से छूट जाता है, सीमितभाव का अभाव हो जाता है।

प्र०:—वैराग्य क्या है ?

उ०:—संसार से सच्ची निराशा आजाने पर जीवन में ही मृत्यु का अनुभव हो जाता है। वास्तव में यही वैराग्य है। वैराग्य उसी समय तक जीवित है जब तक किसी न किसी प्रकार का। राग है।

प्र०:—राग क्यों होता है।

उ०:—सुख से राग का जन्म होता है। क्यों कि यदि बिषयों में सुख प्रतीत न हो तो राग नहीं हो सकता। विषयों में सुख भाव अविचार से होता है, अविचार ज्ञान की कमी से होता है, ज्ञान की कमी अपने को शरीर समझने पर होता है। इन्हीं सकल कारणों से राग का जन्म होता है।

प्र०:—त्याग का स्वरूप क्या है।

उ०:—संसार की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता पर विश्वास का अत्यन्त अभाव ही सच्चा त्याग है। क्यों कि अनुकूलता से राग और प्रतिकूलता से द्वेष होता है। राग—द्वेष का अभाव हो जाना ही त्याग है।

प्र०:—सत्य को कौन पा सकता है।

उ०:—जिस का कोई आधार नहीं है। और जो किसी का आधार नहीं है। वह सत्य से अभिन्न हो जाता है, अर्थात् वह अपने प्रियतम को अपने से अभिन्न नहीं पाता।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

जिज्ञासुः— प्रार्थना में सफलता क्यों नहीं होती ?

महात्माः—ज़रा विचार करो, क्या प्रार्थना करने वाला प्रेमी तब प्रार्थना करता है जब करनी चाहिये। यदि प्रार्थना सफल नहीं होती तो उस का कारण यही है कि प्रार्थना—कर्त्ता अनधिकार चेष्टा करता है। प्रार्थना करने का अधिकार तब होता है जब कर्त्ता अपनी सारी शक्ति समाप्त करदे। क्यों कि शक्ति रहते हुए प्रार्थना होती ही नहीं। प्रार्थना वास्तव में दुःखी हृदय की आवाज़ है। दुःखी की आवाज़ सुन कर दुःख निवारक अवश्य दुःख हर लेते हैं। इस में लेश मात्र भी सन्देह नहीं। किन्तु मस्तिष्क से प्रार्थना करते हैं और हृदय में सन्देह रखते हैं अथवा कुछ अन्य ही सोचते हैं (अर्थात् जब सफलता हो तब ही दुःख हारी की सत्ता स्वीकार करेंगे—अथवा यूँ कहो कि उन की सर्वसामर्थ्य पर सद् भाव नहीं) ऐसे प्रार्थी प्रार्थना कर नहीं पाते। यदि उन की सामर्थ्य का सद् भाव होता तो क्या प्रार्थना वाणी तथा दिमाग से करनी पड़ती ? क्या उन को प्रार्थी की रुचि का ज्ञान नहीं है ? यदि है तो प्रार्थी को वाणी से कहने से क्या लाभ ? अथवा चिन्तन करने से प्रार्थी के बार २ चिन्तन करने का यही अर्थ हो जाता है कि या तो प्रार्थी—अपने को बचा कर प्रार्थना करता है अथवा अपने इष्ट देव की सर्व समर्थता पर श्रद्धा नहीं रखता। जो प्रार्थी अपनी सारी शक्ति समाप्तकर सर्व समर्थ इष्ट देव से प्रार्थना करता है। उस की प्रार्थना अवश्य सफल होती है। प्रार्थना की नहीं जाती किन्तु होती है क्यों कि जो अभिलाषा मिटाई जाती नहीं और जिस के पूर्ण करने की शक्ति नहीं है तब जो आवाज़ हृदय से उत्पन्न होती है वही प्रार्थना है।

ऐसी प्रार्थना एक बार उदय हो कर इष्ट में विलीन हो जाती हैं। अर्थात् प्रार्थना प्रार्थी का स्वरूप हो जाती है। या यूं कहो कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रार्थी सर्व समर्थ इष्ट में विलीन हो जाता है। यही प्रार्थना का वास्तविक स्वरूप है जो होने पर सफल अवश्य होती है।

———

जिज्ञासुः—इष्ट-प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ?

महात्माः—इष्ट के अभिलाषी को प्रथम अपना निरीक्षण करना चाहिये कि वह इस प्राप्ति केलिए क्या कर सकता है। प्यारे ? अपना सब कुछ देने पर इष्ट का सब कुछ मिलता है। और अपने को दे देने पर इष्ट प्राप्ति होती है। इस में किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है। अपना सब कुछ दे देने की शक्ति तब आती है जब इष्ट में किसी भी प्रकार का दोष अथवा कमी प्रतीत न हो क्योंकि वह इष्ट हो ही नहीं सकता कि जिस में किसी भी प्रकार की कमी हो अर्थात् पहले इष्ट की निर्दोषता का भली प्रकार अनुभव कर लो।

अपना सब कुछ दे देने का अर्थ यह है कि शरीर, इन्द्रिय, मन बुद्धि आदि अर्थात् अपने से भिन्न सभी वस्तुएं जिन में ममत्व है इष्ट सेवार्थ दे दी जाएं।

अपने को दे देने का अर्थ यही है कि अपना जो माना हुआ स्वभाव है, (कर्तृत्व और अकर्तृत्व) उस का नितान्त अन्त कर दें। अथवा यूं कहो कि मैं और मेरा का दूसरा स्वरूप तू और तेरा हो जावे। यह जीवन का स्वरूप होने पर ही इष्ट प्राप्ति हो सकती है ?

प्रश्नः—त्याग और दान में क्या भेद है ?

उत्तरः—फैंकने को छोड़ने को त्याग कहते हैं विधि पूर्वक स्थापन करने को बोने को दान कहते हैं। फैंकने और बोने में जो अन्तर है वही त्याग और दान में अन्तर है। त्याग से सम्बन्ध टूट जाता है किन्तु दान से सूक्ष्मातिसूक्ष्म सम्बन्ध दृढ़ होता है। अशुभ, असुन्दर का त्याग किया जाता है। शुभ तथा सुन्दर का दान किया जाता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रश्नः—दाता से उऋण कैसे हुआ जाता है ?

उत्तरः—जिस दशा में अथवा अवस्था में तुमने दाता से पाया है उसी अवस्था में जब किसी को दान करो—यही दाता से उऋण होने का उपाय है। (देने की वस्तु, शुद्ध, सुन्दर तथा समयोपयोगी हो)

प्रश्नः—उत्तम कोटि का दान किसे कहते हैं ?

उत्तरः—जिस के पीछे अभिमान न हो, बदले में कुछ लेने की इच्छा न हो, देकर पश्चाताप न हो, किसी दूसरे को कष्ट न हो वही उत्तम कोटि का दान है।

प्रश्नः—दान का योग्य सुपात्र कौन है ?

उत्तरः—जो सन्तोषी हो, पुरुषार्थी हो, उदार हो, तपस्वी हो, दोषों का त्यागी हो। भगवद् भक्त हो तथा आत्म ज्ञानी हो। वही सुपात्र है।

प्रश्नः—तप का क्या फल है।

उत्तरः—दुबर्लता की निवृत्ति, और शक्ति की प्राप्ति तप का फल है।

प्रश्नः—क्या पुस्तक पढ़ कर ज्ञान नहीं होता ?

उत्तरः—बुद्धि की योग्यता के अनुसार ज्ञान होता है और उस ज्ञान का अधिकतर अभिमान होता है।

प्रश्नः—ज्ञानी महा पुरुषों के सत्सङ्ग से भी किसी २ को ज्ञान क्यों नहीं होता।

उत्तरः—ज्ञान शुद्ध साधन न होने से नहीं होता। बुद्धि पूर्वक संग, सात्विक श्रद्धा, जानने की प्रबल इच्छा इन्द्रिय-संयम, आज्ञा पालन रूप सन्त गुरु की सेवा, यही ज्ञान के साधन हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रश्नः–योगी की पहचान क्या है ?

उत्तरः—जो भोगी न हो, जो अपने आप को, परमात्मा को, अपने से अभिन्न देखते हुए सभी दशाओं में समस्थित, शान्त, निर्भय, और निश्चिन्त रहता है तथा जिस का चित्त परमात्मा से जुड़ा हुआ है।

प्रश्नः—सद्‌गुणों की वृद्धि कैसे होती है ?

उत्तरः—अपने प्रति प्रतिकूल व्यवहार का बदला न लेने से तथा निष्काम सेवा से।

प्रश्नः–जानते हुए भी दोषों का त्याग क्यों नहीं होता ?

उत्तर—मस्तिष्क और हृदय में एकता न होने से। (बुद्धि विवेक द्वारा मानव जिसे छोड़ना चाहता है। मन से उस को सुखद-मान कर पकड़े ही रहना)

प्रश्नः—निष्काम सेवा कैसे पूरी होगी ?

उत्तरः—सेवा के बदले में किसी से कुछ न चाहने से।

प्रश्न—भगवान से प्रेम कैसे होता है ?

उत्तर—उन के साथ सुन्दर, शिव स्वरूप का ज्ञान होने पर ही भगवान से प्रेम होता है।

प्रश्न—स्वामी किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो किसी वस्तु तथा व्यक्ति के अधीन न हो।

प्रश्न—सब से अच्छा व्यक्ति कौन समझा जाता है ?

उत्तर—जो बुरे व्यक्ति में भी अच्छाई ही को देखता है।

प्रश्न—सब से बुरा व्यक्ति कौन माना जाता है ?

उत्तर—जो अच्छे व्यक्ति में भी बुराई की खोज निकालता है।

प्रश्न—निर्दोष कौन है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उत्तर—जिसे अपने को ढूंढने की ज़रूरत नहीं पड़ती अथवा जो नग्न (जो अपना कोई रहस्य न छुपाए) रह सकता है।

प्रश्न—जन्म क्यों लेना पड़ता है ?

उत्तर—सांसारिक सुख भोग की वासना रहने के कारण ।

प्रश्न—साधन भजन में उन्नति के क्या लक्षण हैं ?

उत्तर—जब बीती हुई बातों का स्मरण नहीं आता । आगे की कोई चिन्ता नहीं रहती । भगवत्स्मरण के साथ मिलने की व्याकुलता बढ़ती जाती है । मन की वृत्तियां बाहर खुली नहीं रहतीं । ये ही साधन भजन में उन्नति के लक्षण हैं ।

प्रश्न—भगवत शरण को भूलने के क्या लक्षण हैं ?

उत्तर—जब साधक अपने साधन भजन को दूसरे से प्रकट करने लगे । मानप्रतिष्ठा में मनरस लेने लगे ।

प्रश्न—सुयोग्य साधक किसे ? कहना चाहिए ?

उत्तर—जिस में नम्रता हो, सरलता हो, कष्ट सहिष्णुता हो, सदा प्रसन्न रहता हो । जिस की इन्द्रियां अपने वश में हों । जो आज्ञा पालन में सदा वीर हो ।

प्रश्न—भगवान को कैसा भक्त प्यारा है ?

उत्तर—जो संसार तथा भगवान से कुछ नहीं चाहता ।

प्रश्न—परमार्थी किसे कहते हैं ?

उत्तर—संसार से विरक्ति तथा परमात्मा की भक्ति चाहने वाले को परमार्थी कहते हैं ।

प्रश्न—अपराधी के प्रति सज्जन पुरुष का क्या कर्तव्य है ?

उत्तर—जिस से अपराधी का हित हो और वह अपराध करना छोड़ दे । वही कर्तव्य है ।

प्रश्न—जीव का पतन क्या है ?

उत्तर—सत्य—तथा परमेश्वर से विमुखता ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रश्न—जीव का उत्थान क्या है ?

उत्तर—परमेश्वर को सम्मुख समझ कर प्रत्येक काम करना ।

प्रश्न—परमेश्वर विमुख व्यक्ति कौन हैं ?

उत्तर—जो देह अभिमानी, लोभी, तथा मोही है ।

प्रश्न—यह जीव माया में क्यों लिप्त (बद्ध) है ?

उत्तर—माया पति को भूल कर जो माया का स्वामी बनना चाहता है । उसी को माया बान्धती है और संसार में नचाती है । यही माया जिस जीव को अपने स्वामी परमेश्वर का भक्त देखती है उस को अलौकिक प्यार करती है तथा बन्धन-मुक्त कर देती है ।

प्रश्न—जीव जानते हुए भी क्यों गिरता है ?

उत्तर—ज्ञान का अनादर करने से ।

प्रश्न—जीव का मित्र कौन है ?

उत्तर—जो उसे परमात्मा के सम्मुख करता है ।

प्रश्न—बानप्रस्थ आश्रम क्या ?

उत्तर—जीवन की वह अवस्था है कि जिस समय विषयों से अरुचि हो जाती है । अर्थात् दुःख मालूम हो । फिर मन इन्द्रिय आदि का तपश्चर्यपूर्वक संयम करना और पारिवारिक जीवन त्याग कर विश्व के साथ एकता करना ही बानप्रस्थ आश्रम है ।

प्र०—संन्यास आश्रम क्या है ?

उ०—अवस्था भेद मिटा कर सब प्रकार से अभय हो जाना अर्थात् अपने में स्थायी भाव से सत्य का अनुभव कर लेना संन्यास आश्रम है । स्मरण रहे जीवन की पूर्णता सिद्ध करने के लिये संन्यास परमावश्यक है ।

प्र०—अच्छाई-बुराई कैसी होती है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उ०—ऐसी कोई बुराई नहीं जिस का जन्म राग, द्वेष से

न हो। अर्थात् सभी बुराईयां राग अथवा द्वेष से होती हैं। ऐसी कोई अच्छाई नहीं जिस का जन्म त्याग अथवा प्रेम से न हो। अर्थात् सभी अच्छाई त्याग व प्रेम से होती है।

प्र०—सत्य क्या है ?

उ०—सत्य वह है जो प्रत्येक काल में एक सा रहे और असत्य को प्रकट करे।

प्र०—सत्य की अभिलाषा उत्पन्न करने का साधन क्या है ?

उ०—प्रत्येक सत्य के अभिलाषी को अपनी सभी कामनाओं को विचार पूर्वक भली प्रकार देखना चाहिए कि वास्तविक कामना कौन सी है ? यदि उसने अपनी कामनाओं का यथार्थ अनुभव कर लिया है तो फिर सत्य की अभिलाषा उत्पन्न हो जाएगी। वास्तविक कामना वही है जो किसी भी प्रकार मिटाई न जा सके। जो कामनाएं किसी भी प्रकार मिटाई जा सकती हैं उन के मिटाने से ही सत्य की अभिलाषा उत्पन्न हो जाती है अथवा सत्य की अभिलाषा होने पर और सब कामनाएं मिट जाती हैं।

प्र०—प्रार्थना क्या है ?

उ०—अभिलाषा का प्रबल हो जाना ही सच्ची प्रार्थना है।

प्र०—उपासना क्या है ?

उ०—प्रबल अभिलाषा को अर्थात् की हुई प्रार्थना को समर्पण कर देना ही उपासना है।

प्र०-स्तुति क्या है ?

उ०-उपासना पूर्ण होने पर जो अनुभव में आवे उस का बुद्धि आदि से गान करना ही स्तुति है।

प्र०—भोग की इच्छा क्यों होती है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उ०—विषयों के राग के कारण। स्थायी प्रसन्नता की कामना के लिये ही भोग की प्रवृत्ति होती है। यद्यपि सफलता नहीं होती ?

प्र०—योग की इच्छा क्यों होती है ?

उ०—विषयों का राग मिटने पर स्थायी प्रसन्नता के अभिलाषी को योग की इच्छा उत्पन्न होती है। यद्यपि बिना ज्ञान के सफलता नहीं पाते।

भोग से शक्तियों का विनाश होता है ? और योग से शक्तियों का विकास होता है। योगाभ्यास के लिये स्वतन्त्रता आवश्यक है। और भोगविलास के लिये परतंत्रता। क्यों कि भोग के लिये सांसारिक साधनों की, तथा योग के लिए संसार के त्याग की आवश्य कता होती है।

प्र०—सदा चार क्या है ?

उ०—विलासिता की भावना से क्रियाओं का न होना ही सच्चा सदाचार है। क्योंकि ऐसा कोई दुराचार नहीं जिसका हेतु-राग द्वेष न हो। राग-द्वेष तथा विलासिता बीज और वृक्ष के समान हैं। सुख और दुःख इस के फल हैं। यथा अविचार रूपी भूमि में राग रूपी बीज अपने आप उत्पन्न होता है और पुनः विलासिता रूपी वृक्ष हराभरा होकर सुख-दुःख रूपी फल देता है और विषयों के चिन्तन रूपी जलसे सदैव सुरक्षित रहता है। अविचारों को विचार से मिटा कर विराग रूपी बीज को बो कर त्याग-रूपी वृक्ष से आनन्द रूपी फल उत्पन्न होता है।

प्र०—सेवा और कर्म में क्या भेद है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उ०—सेवा स्वामी से मिलती है अर्थात् अपने लक्ष्य तक

पहुँचाती है और कर्म फल में बाँध लेता है। सेवाभाव से की हुई अनेक क्रियाओं का एक ही अर्थ होता है। यथार्थ सेवा करने पर मन में किसी प्रकार का राग नहीं रहता। सेवा करने वाले की दृष्टि में सृष्टि नहीं रहती। और सब ओर उसे अपना प्रेमपात्र ही दृष्टि-गोचर होता है। यही मानसिक उन्नति की परकाष्ठा है। सेवा का भाव गल जाना ही सच्चा त्याग है। त्याग से आत्मि-कोन्नति प्राप्त होती है और तब वह अपने से भिन्न और कुछ नहीं पाता। सेवा आस्तिकता के बिना किसी प्रकार नहीं हो सकती। किन्तु कर्म नास्तिकता के होने पर भी हो सकता है।

प्र०—नास्तिक-आस्तिक भाव का क्या अर्थ है।

उ०—संसार से परे और कुछ नहीं है। ऐसा भाव ही नास्तिक का भाव है। संसार से परे अनन्त सत्य हैं यही आस्तिकता का भाव है।

प्र०—शरणागति का साधन क्या है?

उ०—शरणागत होने वाले महानुभाव को यह भली प्रकार जान लेना चाहिये? किस को शरणागत होना चाहिये (२) किस के शरणागत होना चाहिये? (३) किस लिये शरणागत होना चाहिये?

प्रश्न—शरणागत होने वाले का स्वरूप क्या है?

उत्तर—जो स्वतंत्र न हो, जिस में कर्त्तापन हो। जिस में भोक्तापन हो।

प्रश्न – शरणागत किस के होना चाहिए?

उत्तर—जो स्वतंत्र हो, नित्य हो, अखण्ड हो अनन्त हो, सब प्रकार से पूर्ण हो तथा अनन्त ज्ञानी हो। अर्थात् जिस में किसी
CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri
प्रकार की कमी न हो उस ही की ही शरण होना चाहिए। यदि

किसी प्रकार दोष प्रतीत हो तो उसकी शरण नहीं जाना चाहिए।

प्र०—शरणागत किस लिए होना चाहिए ?

उ०—जिस की शरणागत होना हो उस से अभिन्न होने के लिए शरणागत होना चाहिए।

प्र०—शरणागत हो जाने का स्वरूप क्या है ?

उ०—शरणागत होने वाला (कर्ता तथा भोक्ता) शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्ध आदि विषयों का त्याग कर परमतत्व सच्चिदानन्द घन की शरण होकर उससे अभिन्न हो जाता है। अर्थात् दृष्टा, दर्शन, दृश्य-त्रुटि का अभाव हो जाता है। यही शरणागत का स्वरूप है।

जिस प्रकार पानी का बहाव रोक देने पर जहां से पानी निकलता था वहां अपने आप चढ़ जाता है। उसी प्रकार विषयों का त्याग करते ही विषयों का भोक्ता स्वयं अपने निजस्वरूप परमतत्व में स्थायीभाव से विलीन हो जाता है।

प्रश्न—संयम क्या है ?

उत्तर—जो सुनाने वाले की प्रसन्नता के लिए सुनता है। जो मिलने वाले की प्रसन्नता के लिए मिलता है। जो खिलाने वाले की प्रसन्नता के लिए खाता है। जिस की आँख रुप की सार्थकता के लिए देखती है जिस के कान शब्द-सार्थकता के लिए सुनते हैं। जिस की नाक गन्ध सार्थकता के लिए सूंघती है। इस न्याय के अनुसार सभी क्रियाएं होती हैं अर्थात उन क्रियाओं से कर्ता प्राप्त कुछ नहीं करता, अर्थरहित क्रियाओं से राग मिट जाता है और राग मिटते ही त्याग हो जाता है। त्याग होने पर धारणा-ध्यान और समाधि अपने आप हो जाती है। तथा इन तीनों का एक हो जाना ही सच्चा संमय है। (संयम पूरा हो जाने पर व्याकुलतापूर्वक सत्य की कामना उत्पन्न होती है जो सत्य का मार्ग है)

CC-0.Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रश्न–भलाई बुराई क्यों होती है ?

उत्तर–बुराई चिन्तन करने से बुराई और भलाई का चिन्तन करने से भलाई अपने आप हो जाती है। इस लिए भूलकर भी किसी की बुराई का चिन्तन नहीं करना चाहिए। ऐसा चिन्तन करने से बुराई कर्त्ता में आती है और उसका भी अनहित होता है कि जिस की बुराई की जाती है और भलाई करने से भी भलाई का चिन्तन अधिक भला है।

मनुष्य के हृदय में नेकी, बदी, भलाई, बुराई, इच्छा, घृणा, अपनापन, परायापन, स्वभावता, उत्पन्न किए गए हैं। जिन वस्तुओं या जिन मनुष्यों को वह अपना समझता है उन से प्यार करता है और जिन को वह पराया समझता है उन से दूर हटता है। परन्तु प्रायः मानव की बुद्धि इतनी शुद्ध नहीं होती कि वह इस बात का ठीक निर्णय कर सके कि इस के अपने कौन हैं और उस के पराए कौन हैं ?

कई बार मनुष्य अपनी प्रशंसा करने वालों को अपना समझ लेता है और अपना दोष प्रकट करने वालों को बुरा समझता है। परन्तु बुद्धिमानों का कथन है कि वही हमारा सच्चा मित्र बन्धु है जो हमारी त्रुटियों और दोषों को जितलाने में तनिक भी संकोच नहीं करता और जो शुभभावना तथा हमारे हित और सुधार के लिए ऐसा करे। एक दवाई विक्रेता ने एक दिन क्या अच्छा कहा था कि यदि तुम स्वस्थ रहना चाहते हो तो कड़वी-औषधी से घृणा मत करो। मैं उस मनुष्य के सिवाए किसी को अपना मित्र नहीं समझता जो मेरा दोष मुझ पर प्रकट करे। शुभभावना से दोष जितलाने वाला दर्पण की भान्ति होता है क्योंकि दर्पण में प्रत्यक्ष अपने मुख के दोष नज़र आते हैं। संत तुलसी दास जी ने कहा है—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वचन परम हित सुनत कठोरे। सुने जे कहिते नर प्रभु थोरे॥

भावार्थ में लिखा है—हे राजन! सदा प्रशंसा-चापलूसी करने वाले मनुष्य तो बहुत हैं परन्तु सच्ची और हित चिन्तक बातें कहने और सुनने वाले बहुत कम हैं। कड़वी औषधी के प्रयोग के बिना रोग का नाश होना कठिन है।

सब से अधिक हमारे हित चिन्तक माता-पिता अथवा कोई कोई गुरु या कोई कोई सच्चा मित्र होता है। माता-पिता प्रायः जो भी बात कहते हैं इस से सन्तान का हित भलाई और कल्याण ही होता है। चाहे उन का कहना कड़वा ही प्रतीत हो। जिस के माता पिता जीवित हों वह आयु में कितना ही बड़ा क्यों न हो गया हो, चाहे वह पोते-पोतियों वाला भी हो गया हो फिर भी उन को अपने माता पिता की बातों को श्रद्धा तथा विश्वास से सुनना चाहिए क्योंकि उन में बड़ा अनुभव होता है। अनमोल रत्न होते हैं परन्तु जवानी हैवानी होती है। जवानी की मस्ती में अन्धा होने के कारण इन की बातों पर ध्यान नहीं देते। परन्तु वे मनुष्य बड़े भाग्यशाली हैं जिनके माता पिता जीवित हैं और अपनी संतान को नेकी-बदी निःसंकोच जितलाते हैं। माता-पिता सच्चे हितचिंतक होते हैं। केवल माता पिता ही वे व्यक्ति हैं जो सदैव यह चाहते हैं कि उन की सन्तान उन से अधिक उन्नति करे तथा फले फूले। इन के अतिरिक्त कोई व्यक्ति इस बात को सहन नहीं करते। माता पिता सदा चाहते हैं कि उनकी सन्तान नेक हो, उन का नाम संसार में विख्यात हो। इस में उनकी अपनी नेक नामी होती है। साथ ही जब वे यह देखते हैं कि जिस सन्तान के लिए उन्होंने इतने कष्ट उठाए, रातों जाग जाग उन की पालना की, पेट काट कर उन्हें पाला तथा प्रत्येक वस्तु अपने मुँह पर पट्टी बाँध कर उन्हें खिलाई, यदि वह सन्तान विपरीत मार्ग पर चल कर अपनी और उनकी बदनामी का कारण बनती है तो उन को बड़ा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दुःख होता है। अतः वे अपनी सन्तान में कोई दोष देखकर सहन नहीं कर सकते। और कोई-कोई नेक गुरु या मित्र भी होते हैं जो भलाई की बातें कह देते हैं। ये तो हैं हमारे बाह्य मित्र अमित्र। परन्तु हमारे अन्दर भी मित्र अमित्र विद्यमान हैं। साधारण रूप से यह कहा जा सकता है कि शुभ गुण, शुभ विचार तथा शुभ कर्म हमारे मित्र हैं। और दुर्गण,कुविचार और कुकर्म हमारे शत्रु अथवा अमित्र हैं। यहां इन सब का सविस्तार वर्णन न करके केवल एक ही अन्दर के मित्र-अमित्र के सम्बन्ध में लिखकर सचेत किया जाता है। वह है काम तृष्णा। यह मनुष्य की भयंकर शत्रु है। अर्जुन ने जब श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज से प्रश्न किया, "वह कौन सी वस्तु है जो मनुष्य को खैंच कर पाप की ओर ले जाती है? मनुष्य न चाहता हुआ भी पाप की ओर आकर्षित हो जाता है उसे कौन धकेल कर ले जाता है—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पाप चरति पुरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥गीता३-३६॥

भावार्थ—यह मनुष्य स्वयं न चाहता हुआ भी बलात्कार से लगाए हुए की भांति किस से प्रेरित हो कर पापाचरण करता है! श्रीकृष्ण जी महाराज उत्तर देते हैं—

काम एष क्रोध एष रजोगुण समुद्भवः।
महाशनो महा पाप्मा विद्धयेनमिह वैरिणम ॥३-३७॥

भावार्थ—रजो गुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है। यह बहुत खाने वाला अर्थात् भागों से कभी भी तृप्त न होने वाला बड़ा पापी है। इस विषय में तू इस को ही शत्रु जान। इस से यह भाव दिखलाया गया है कि सारे अनर्थों का कारण यह काम ही है। मनुष्य को बिना इच्छा पापों में नियुक्त करने वाला न तो प्रारब्ध है न परमेश्वर ही है। यह काम ही इस मनुष्य को नाना प्रकार के भोगों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

में आसक्त करके उसे बलपूर्वक पापों में प्रवृत्त करता है। इसलिए यह महापापी है। ईश्वर तो परम दयालु है और प्राणियों के सुहृद हैं। वह किसी को पापों में कैसे नियुक्त कर सकते हैं। और प्रारब्ध पूर्वकृत कर्मों के भोग का नाम है। इस में किसी को पापों में प्रवृत्त करने की शक्ति ही नहीं है। इसलिए पापों में प्रवृत्त करने वाला शत्रु काम के अतिरिक्त अन्य और कोई नहीं।

सुना यह तो भगवान कहने लगे।
हवस और ग़ज़ब दो हैं दुश्मन तेरे॥
रजोगुण की ये दोनों औलाद हैं।
ये लोभी हैं पापी हैं जल्लाद हैं॥

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥ (गीता ३-३८)

भावार्थ—जिस प्रकार धूएं से अग्नि और मैल से दर्पण ढका जाता है तथा जिस प्रकार जेर से गर्भ ढका रहता है वैसे ही उस काम द्वारा यह ज्ञान ढका रहता है।

इस में यह दिखलाया गया है कि यह काम ही मल, विक्षेप, आवरण इन तीनों दोषों के रूप में प्रेरित होकर मनुष्य के ज्ञान को आच्छादित किये रहता है। यहां धूएं के स्थान पर विक्षेप को समझना चाहिए। जिस प्रकार धूआं चंचल होते हुए भी अग्नि को ढक लेता है उसी प्रकार विक्षेप चंचल होते हुए भी ज्ञान को ढके रहता है। क्योंकि बिना एकाग्रता से अन्तःकरण में ज्ञानशक्ति प्रकाशित नहीं हो सकती। वह दबी रहती है मैल के स्थान में मल दोष को समझना चाहिए। जैसे दर्पण पर मैल जम जाने से इस में प्रतिबिम्ब नहीं दिखता उसी प्रकार पापों द्वारा अन्तःकरण के अत्यन्त मलीन हो जाने पर उस में वस्तु या कर्तव्य का यथार्थ स्वरूप प्रतिभासित नहीं होता।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इस कारण मनुष्य उस का यथार्थ विवेचन नहीं कर सकता। इसी प्रकार जेर के स्थान में आवरण को समझना चाहिये। जैसे जेर से गर्भ सर्वथा आच्छादित रहता है। उस का कोई अंश भी दिखाई नहीं देता वैसे ही आवरण से ज्ञान सर्वथा ढका रहता है। जिस का अन्तः करण अज्ञान से आवृत (मोहित) रहता है वह मनुष्य निद्रा और आलस्य आदि के सुख में फँस कर किसी प्रकार का विचार करने में प्रवृत ही नहीं होता।

यह काम ही मनुष्य के अन्तः करण में नाना प्रकार के भोगों की तृष्णा बढ़ाकर उसे विक्षिप्त करता है। यही मनुष्य से नाना प्रकार के पाप करवा कर अन्तः करण में मलदोष की वृद्धि करता है। और यही उस की निद्रा आलस्य तथा अकर्मण्यता में सुख-बुद्धि करवा कर उसे सर्वदा विवेक शून्य बना देता है। इस लिये यहां इस को तीनों प्रकार से ज्ञान का आछादन करने वाला बतलाया गया है आगे चल कर श्री कृष्ण जी महाराज ने यहां तक कह दिया है कि यह काम (तृष्णा) न केवल ज्ञान को चमकने नहीं देती किन्तु इस का नाश भी कर देती है।

तस्मात्व मिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञान नाशनम् ॥ गीता ३-४०

भावार्थ—इसलिये हे अर्जुन ! तू पहले इन्द्रियों को वश में करके इस ज्ञान और विज्ञान का नाश करने वाले महापापी काम को अवश्य ही बल पूर्वक मार डाल। काम ही सब अनर्थों का मूल है। पहले यह इन्द्रियों में प्रविष्ट करता है फिर उन के द्वारा मन और बुद्धि को मोहित करके जीवात्मा को मोहित करता है। इसका निवास स्थान मन बुद्धि और इन्द्रियां हैं। अतः पहले इन्द्रियों पर अपना अधिकार करके इस काम रूप शत्रु को अवश्य मार डालना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चाहिये । इस के निवास स्थानों को रोक लेने से ही इस काम रूप शत्रु के मरने में सुगमता होगी । अतः पहले इन्द्रियों को पुनः मन को रोकना चाहिये । इन्द्रियों को वश में करनेका साधन अभ्यास और विराग है । इन ही दो उपायों से इन्द्रियां वश में हो सकती हैं । ये ही दो उपाय मन को वश में करने के लिये बतलाये गए हैं । प्यारे ! यह काम तृष्णा ही मनुष्य को चक्र में डाल कर देश-विदेश फिराती है । यही समुन्दर में जहाज़ों को डुबाती है यही चकमा देकर पहाड़ों पर चढ़ाती है । तथा सारे संसार को ऊँगलियों पर नचाती है । अमीर गरीब सबको भाण्ड बनाती है । गुरु नानक साहिबान ने इस तृष्णा को मारने पर बहुत बल दिया है । गौड़ी महल्ला पाँच में लिखा है:—

जो इस मारे सोई सूरा, जो इस मारे सोई पूरा ।
जो इस मरे ते वडिआई, जो इस मारे तिस का दुःख जाई
जो इस मारे सी धनवन्ता, जो इस मारे सर पतवंता ॥
जो इस मारे सोई जती, जो इस मारे तिस होवे गति
इस मारे बिन थाए न परे, कोई कर्म जापताप करे ।

अर्थात् ! जो मनुष्य इस तृष्णा को मारता है । वही योधा है, वही सच्चा मनुष्य है, इस के मारने वाले का ही सन्मान होता है, वह पूज्य होता है । इस के मारने से ही दुःख की समाप्ति होती है । इसके मारने वाला ही वास्तविक धनवान तथा माननीय बनता है । इस के मारने वाला ही प्रभु भक्त बनता तथा मुक्ति प्राप्त करता है । इस के मारे बिना कोई भी उद्देश्य पूर्ण नहीं होता, चाहे कितनी भी पूजा भक्ति की जावे ।

प्रश्न—तृष्णा को क्या सदा के लिए नष्ट कर देना चाहिए ?

उत्तर--निःसन्देह यदि सदा का सुख चाहते हो तब तो इस का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नाश करना ही होगा। परन्तु जब तक इस का पूर्ण रूप से नाश न होगा तब तक हमारे जीवन का सफल होना असम्भव ही है। कवि लिखता है:—

जो बाग़बाने यह बाग़े हस्ती, बनाया नक़्शो निगार बुलबुल।

है इस चमन में यह तेरा मसकिन,

तू बा ख़ुशी दिन गुज़ार बुलबुल॥

यह सब्ज़ सुर्ख़ो सियाह बूटा,

नज़र जो आए तुझे अनूठा

न रंग पुख़ता है सब यह झूठा,

तू उस पर मत हो निसार बुलबुल॥

न आँख नरगस से तू लगाना,

न देख लालों को दाग़ खाना॥

पड़ेंगे सहने दिलों के अन्दर,

गुलों के बदले, ख़ार बुलबुल॥

ख़ियाल यह भी ज़रूर रखना,

ख़ज़ां का होगा मज़ा भी चखना।

गुलों से इतना न प्यार करना,

जो रोना हो, ज़ार ज़ार बुलबुल।

शजर की डाली जो तुम ने आली,

तो पाँच दिन की फ़क़त रज़ा ली।

हिसाब लेगा ज़रूर माली,

तू ज़्यादा पर मत पसार बुलबुल॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अतः हमें हर प्रकार से सचेत होकर इस संसार में चलने की आवश्यकता है। कामरूपी तृष्णा को निर्मूल कर पुनः ज्ञान प्राप्ति का यत्न करना चाहिए ताकि हमें अपने मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य का बोध हो। तथा नेकी-बदी भलाई-बुराई की परख करके अपना जीवन सफल कर सकें। कवि लिखता है—

परोपकार करने के लिए, घर की ममता त्याग।
जन्म सुधारे अपना, प्रभु की भक्ति लाग॥
जगत-पिता के बिना मिले, मानव तन असार।
शूकर कूकर से गिरे, यदि विषय से प्यार॥

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओ३म्

सन्तों की बाणी का संग्रह

प्रेम-भक्ति ज्ञान वैराग्य सदाचार पर

१. ईश्वर को देखना चाहते हो तो माया को हटा दो।

२. जिस ने तुम्हें यहां भेजा है उसने तुम्हारे भोजन का प्रबन्ध पहले कर रक्खा है।

३. दुष्ट मनुष्य में भी ईश्वर है परन्तु उस का संग करना उचित नहीं।

४. मन सफेद कपड़ा है इसे जिस रंग में डुबोओगे वही रंग चढ़ेगा।

५. संसार में रह कर सब काम करो पर ख्याल रखो कहीं ईश्वर लक्ष्य से मन हट न जाए।

६. डुबकी लगाते जाओ, रत्न अवश्य मिलेगा।

७. धीरज रखकर साधन करते जाओ अवश्य प्रभु कृपा होगी।

८. साधुसंग को धर्म का सर्वप्रधान अंग समझना चाहिए।

९. मरने के समय मन में जैसा भाव होता है दूसरे जन्म में वैसी ही गति होती है।

१०. साधक जब नत होकर पुकारता है तब प्रभु विलम्ब नहीं करते।

११. जिस के हृदय में प्रभु प्रेम हो जाता है उस हृदय से काम-क्रोध अहंकार आदि भाग जाते हैं।

१२. ईश्वर अपने आने से पहले साधक के हृदय में प्रेम-भक्ति विश्वास तथा व्याकुलता उत्पन्न कर देता है।

१३. हृदय स्थिर होने से ही ईश्वर दर्शन होता है।

१४. सच्चे विश्वासी भक्त का विश्वास तथा भक्ति किसी प्रकार कम नहीं होती।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१५. विश्वासी भक्त ईश्वर के सिवाय सांसारिक धन-मान कुछ भी नहीं लेना चाहता।

१६. संसार में केवल ईश्वर ही सत्य है और सभी असत्य है।

१७. जो मनुष्य दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर ईश्वर की प्राप्ति के लिए प्रयत्न नहीं करता उसका जन्म वृथा है।

१८. जो ईश्वर का चरण कमल पकड़ लेता है वह संसार से नहीं डरता।

१९. गुरू लाखों मिलते हैं चेला एक भी नहीं मिलता।

२०. उपदेश देने वाले लाखों मिलते हैं पर उपदेश पालन करने वाले विरले हैं।

२१. जिस के मन में ईश्वर का प्रेम हो गया उसे संसार का कोई सुख अच्छा नहीं लगता।

२२. जो प्रभु प्रेम में बावला हो गया उस का सारा भार प्रभु अपने ऊपर ले लेते हैं।

२३. आप का हृदय भगवान की बैठक है।

२४. साधक के अन्दर यदि कुछ भी आसक्ति है तो समस्त साधना व्यर्थ चली जायेगी।

२५. मन और मुख को एक करना ही साधना है।

२६. कामना लेशमात्र भी रही तो भगवान नहीं मिल सकते।

२७. अहंकारी को प्रभुदर्शन नहीं हो सकता।

२८. जिस का जैसा भाव होता है उसको वैसा ही फल मिलता है।

२९. जिस घर नित्य सन्ध्या, हवन, वेदपाठ होता है। वहां कालयुग प्रवेश नहीं कर सकता।

३०. जब प्रभु-आश्रित हो गया तो यह न हुआ वह न हुआ आदि चिंताएं मत करो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

३१. संसार के सब काम करो परन्तु मन हर घड़ी संसार से विमुख हो।

३२. एक ईश्वर को पकड़े रहने से लौकिक और पार-लौकिक दोनों लाभ होते हैं।

३३. व्याकुल हो कर उस के लिये रोने से ही वह मिलता है।

३४. ईश्वर के पाने का उपाय केवल विश्वास है। जिस को विश्वास हो गया उसका काम बन गया।

३५. मुंह में राम-बगल में छुरी मत रक्खो।

३६. एक ईश्वर ही सब का गुरु है।

३७. जब तक अज्ञान है तब तक चौरासी का चक्र है।

३८. पर निंदा पर चर्चा कभी न करो। विश्वास तारता है अहंकार डुबोता है।

३९. साधक में बाहरी दिखावे का भाव तनिक भी नहीं रहता।

४०. तत्वज्ञान होने से मनुष्य का पूर्व स्वभाव बदल जाता है।

४१. प्रपंच में मनुष्य का आत्मिक पतन हो जाता है।

४२. सब दानों में श्रेठ अन्नदान है और उससे श्रेठ ज्ञानदान है।

४३. परद्रव्य और परदारा को अछूत मानो इस से बढ़ कर कोई निर्मल तप नहीं।

४४. भगवान् मुझे ऐसी प्रेमभक्ति दे कि मुँह से तेरा ही नाम अखण्ड रूप से लेता रहूं।

४५. अपनी स्तुति और दूसरों की निंदा प्रभु! मैं कभी न सुनूं।

४६. सन्त सेवा मुक्ति का द्वार है। भगवान् स्वयं सन्त के घर में घुस कर अपना डेरा ज़माते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

४७. सद्‌गुरु का सहारा जिस को मिल गया कलिकाल उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

४८. जिस वाणी में प्रेमरसना, प्रभुभक्ति है वही सरस है।

४९. प्रेम के बिना श्रुति, स्मृति, ज्ञान, ध्यान, पूजन, श्रवण कीर्तन सब व्यर्थ हैं।

५०. सच्चा विरक्त उस को कहना चाहिए जो मान के स्थान से दूर हो।

५१. अभिमान का त्याग ही सर्वथा त्याग का मुख्य लक्षण है।

५२. प्रभु की प्राप्ति में सब से बड़ा बाधक अभिमान है।

५३. भक्त भगवान् की आत्मा है यह भगवान् का जीवन है, प्राण है।

५४. प्रभु पूर्णतः भक्त के अन्दर है और भक्त पूर्णतः भगवान् के अन्दर है।

५५. मन ही मन का बोधक, मन ही मन का साधक, मन ही मन का घातक, मन ही मन का बाधक है।

५६. सन्तों की मामूली बातें महान् उपदेश होतीं हैं।

५७. वह कुल पवित्र है वह देश पावन है जहां भगवद् भक्त जन्म लेते हैं।

५८. दुर्लभ हैं वे जो अपनी सन्तति के लिये भगवद्‌भक्ति सम्पत्ति छोड़ जाते हैं।

५९. सच्चा प्रेम कभी मरता नहीं। काल भी उसे मार नहीं सकता, प्रम तो भक्तों के भाग्य में होता है।

६०. भगवान् भक्त को गृह प्रपंच करने हीं नहीं देते। सब गृह कष्टों से अलग रखते हैं।

६१. वैराग्य परमार्थ की नींव है भगवान् जिन पर अनुग्रह करते हैं उन्हें पहले वैराग्य दान करते।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

६२. भगवान् का भजन ही जीवन का सुफल है।

६३. जिस संग से भगवत् प्रेम उत्पन्न होता है वही सत्संग है।

६४. कीर्तन का अधिकार सब को है इस में वर्ण या आश्रम का भेदभाव नहीं।

६५. भाव के नेत्र जहां खुलें वहां सारा विश्व कुछ निराला ही दिखाई देता है।

६६. जैसा भाव वैसा फल। भगवान् के आगे और कोई बल नहीं चलता।

६७. भाव न हो तो साधना का कोई विशेष मूल्य नहीं।

६८. यदि तुम भगवान को चाहते हो तो भाव से उन के गीत गाओ।

६९. हृदय का भाव भगवान् जानते हैं। उन्हें जानना नहीं पड़ता।

७०. वासना का मूल काटे बिना यह कोई न कहे कि मेरा उद्धार हो गया।

७१. निन्दा और वाद सर्वथा त्याग दो।

७२. चित्त शुद्ध करके भगवान् के गीत गाओ।

७३. प्रभु जिसके लिए जो मार्ग ठीक है वही दिखा देते हैं। वह बड़ा दयालु है।

७४. उस बड़प्पन को आग लगे जिस में भगवद् भक्ति नहीं।

७५. कथा कीर्तन करके जो पुष्प द्रव्य देते या लेते हैं वे दोनों ही भूले हुए हैं।

७६. सन्त का लक्षण प्राणिमात्र पर दया करना है।

७७. भगवान् भक्त के उपकार मानते हैं भक्त के ऋणी हो जाते हैं।

७८. भक्त के पुकारने की देर है भगवान् के पधारने की नहीं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

७६. भगवद् भक्ति के बिना जो जीना है उस को आग लगे।

८०. भगवान् कल्प वृक्ष है चिंतामणि है, चित्त जो जो चिंतन करे उसे पूरा करने वाला है।

८१. गुरु कृपा के विना कोई साधक कभी कृतकार्य नहीं हुआ।

८२. सद्गुरु शिष्यों के नेत्रों में ज्ञानांजन लगा कर उसे दृष्टि देते हैं।

८३. कौन किस को बाँधता है और किस को छोड़ता है? यह सब संकल्प की माया है।

८४. उत्तम गति और अधोगति देने वाला मन है।

८५. यह मन संसार की बातें ही सोचता रहता है।

८६. परधन और परदारा की इच्छा पामरों के ही चित्त में उठा करती है।

८७. नाम और मान के पीछे दुनिया तबाह हो रही है।

८८. घर बाहर की सब आधि-व्याधि दूर करने के लिए एकान्त वास ही सर्वोत्तम है।

८९. केवल एकान्त ही आधी समाधि है।

९० धन-मान साधक को धरती पर पटक कर उस के परमार्थ का सत्यानाश करने वाला है।

९१. वही अन्न पवित्र है जिस के सेवन से प्रभु स्मरण हो।

९२. नर जन्म की सार्थकता भगवान् के मिलने में ही है।

९३. भगवान् की भक्ति से ही भगवान् का रूप दिखाई देता है।

९४. भक्तिमार्ग पर चलने वाले के रक्षक स्वयं भगवान् होते हैं।

९५. भगवान् अपने भक्त को दुःखी नहीं करते। अपने दास की चिन्ता अपने ही ऊपर उठा लेते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

९६. बहुत बोलना छोड़ दो और सावधान हो कर कुसंग से बचते रहो।

९७. पर उपकार करो, पर निन्दा मत करो।

९८. जो जी जान से भगवान् को चाहते हैं वे अपने प्रेम को सावधानी से बचाए रक्खें।

९९. प्रतिष्ठा को शूकर विष्ठा समझ लो। वृथावाद में न उलझो।

१००. अहंकारी तार्किकों के संग से दूर रहो, कोई ढौंग-पाखण्ड न करो।

१०१. जो छोटे २ प्राणियों से प्यार नहीं कर सकता वह ईश्वर से क्या प्यार करेगा।

१०२. हृदय में अभिमान आते ही सभी साधन नष्ट हो जाते हैं।

१०३. सदा सर्वत्र और सब अवस्था में प्रभुस्मरण करते रहना चाहिए।

१०४. मानसिक पूजा ही श्रेष्ठ पूजा है।

२०५. जहां तक हो विषयी-धनिक पुरुषों के अन्न से बचना चाहिए।

१०६. सदाचार के पालन से मनुष्य दीर्घायु वाली मनचाही सन्तान और सम्पत्ति पाता है।

१०७. जिस के चित्त से राग द्वेष नाश हो गया है वही ज्ञानी गुणी, ध्यानी और दानी है।

१०८. जो तेरे लिए कांटे बोए तू उन के लिऐ फूल बो।

१०९. अच्छी अवस्था में सभी बन्धु, बुरी अवस्था में दुर्लभ।

११०. वही पुरुष सज्जन है जो मन लगा कर भगवान् की भक्ति करता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१११. साधु की जाति न पूछो उस से तो ज्ञान उपदेश लो, तलवार का मूल्य करो, म्यान से क्या काम है।

११२. तन मन और वचन की एकता रखनी चाहिये।

११३. स्वार्थ हि सारे अपराधों की जड़ है।

११४. जहां तक हो चुप रहो आवश्यकता पड़ने पर उतना बोलो जितना काम हो।

११५. शरीर द्वारा दुष्कर्म करने से वृक्ष की योनि मिलती है।

११६. वाणी द्वारा दुष्कर्म करने पर पशु-पक्षी की योनि मिलती है।

११७. मन द्वारा दुष्कर्म करने से चाण्डाल की योनि मिलती है।

११८. दान, पश्चात्ताप, संतोष, संयम, दीनता, सत्य और दया ये स्वर्ग के द्वार हैं।

११९. तप करने से स्वर्ग प्राप्त होता है।

१२०. दान देने से ऐश्वर्य मिलता है।

१२१. ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति होती है।

१२२. क्रोध मनुष्य का बड़ा भारी वैरी है लोभ अनन्त रोग है।

१२३. सब प्राणियों का हित करना साधुता है।

१२४. निष्काम भजन से भगवत् प्राप्ति होती है।

१२५. कामना न रखकर भजन करने से उसका फल मिलता है।

१२६. भगवान का नाम ही 'भू' रोग की दवा है।

१२७. जिन का मन परमात्मा में रहता है परमात्मा उनकी सम्भाल लेते हैं।

१२८. बदला लेने का विचार छोड़ कर क्षमा करना, अन्धकार से प्रकाश में आना है।

१२९. मांगना और मरना दोनों समान हैं बल्कि मांगने से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मरना भला है ।

१३०. हाथ के ऊपर हाथ करो पर हाथ के नीचे हाथ न करो ।

१३१. विषय विष हैं इन का त्याग ही सुख की जड़ है ।

१३२. जिस ने काम को जीत लिया उस ने सब कुछ जीत लिया ।

१३३. जल में डूबा आदमी बच जाता है पर विषयों में डूबा नहीं बचता ।

१३४. जितना प्रेम जगत के रूपों में है उतना जगदीश में हो तो फिर क्या कहना ।

१३५. यह जीवन सुपने समान है ।

१३६. जो अपनी गर्दन ऊँची करता है वह मुँह के बल गिरता है ।

१३७. लोग दुनियां को नहीं छोड़ते, दुनियां ही भले उनको निकम्मा करके छोड़ जाए ।

१३८. तृष्णा विषयों के संग से बेहद बढ़ती है ।

१३९. हे मनुष्य ! मौत से डर अभिमान को त्याग ।

१४०. अपने प्रबल शत्रु अभिमान का नाश कर ।

१४१. जो कुछ मांगना चाहो सर्वशक्तिमान भगवान से मांगो ।

१४२. यह जीवन क्षण भंगुर है ।

१४३. संसार में दो काम करो—भूखे को भोजन दो, भगवान का नाम लो ।

१४४. भगवान को जानने के लिए चरित्र की शुद्धि अत्यन्त आवश्यक है ।

१४५. ध्यान करने वाला न शरीर को हिलावे न किसी की तरफ देखे ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१४६. जो अहंकार करता है वह बुरी तरह गिरता है।

१४७, चंचल मन से सिद्धि दूर भागती है।

१४८. जगदीश से मिलने के लिए स्थिर चित्त दरकार है।

१४९. खाली पेट भरने के लिए कौवे की तरह पराया मुँह मत ताको।

१५०. जिसे सन्तोष है वह सदा सुखी है।

१५१. उसे कोई सुख नहीं जिस की इच्छाएं बड़ी हैं।

१५२. जो परमात्मा दे उसी पर सन्तुष्ट रहे।

१५३. जिस प्रकार अञ्जली में जल नहीं ठहरता उसी प्रकार लक्ष्मी भी किसी के हां नहीं ठहरती।

१५४. गफलत की नींद त्यागो मौत तुम्हारा द्वार खटखटा रही है।

१५५. इस जगत में न कोई अपना है न पराया।

१५६. भगवान कहता है जो मेरा अनुकरण करता है वह अन्धकार में नहीं भटकता।

१५७. वास्तव में बड़ा वही है जो उदारता में बड़ा है।

१५८. वह वास्तव में बड़ा है जो अपने को छोटा समझता है।

१५९. विद्वान वही है जो अपनी इच्छा को त्याग परमात्मा की इच्छा से कार्य करता है।

१६०. नम्रता और आत्म-विश्वास सफलता की कुँजी है।

१६१. अभिमानी, लोभी शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता।

१६२. दीन और विनम्र हृदय पूर्ण शान्ति में सदा रहता है।

१६३. हृदय की सच्चा शान्ति वासनाओं के दमन से मिलती है।

१६४. शासन करने की अपेक्षा आज्ञा-पालन करना अधिक जरूरी है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१६५. एकान्त हृदय वाले धन्य हैं जो उन्हें बहुत शान्ति मिलेगी।

१६६. साधक-मार्ग में मनुष्य की ऐसी परीक्षा होती है जैसी आग में सोने की।

१६७. विद्या के समान संसार में कोई नेत्र नहीं।

१६८. यदि मन निश्चल, वचन निर्मल, करनी भली हो तो वह साधक है।

१६९. काम करते समय याद रक्खो कि जो काम कर रहा हूँ उसे ईश्वर देख रहा है।

१७०. सच्चा साधक वह है जिसे ईश्वर-विचार के सिवा दूसरी बात प्रिय नहीं लगती।

१७१. जो ईश्वर को सर्वस्व मानता है वही असली धनवान है।

१७२. दुनिया को अपनी सम्पत्ति मानने वाला तो सादा गरीब ही रहेगा।

१७३. जो ईश्वर से डरता है उस से दुनिया डरती है

१७४. जो प्रभु से नहीं डरता उससे दुनिया भी नहीं डरती।

१७५. आहार में लालसा बढ़ने से साधना से दूर हो जाता है।

१७६. सन्त समागम, हरि कथा प्रभु में श्रद्धा उत्पन्न करते हैं।

१७७. जिस का जीवन अन्दर-बाहर से एक नहीं उसका संग मत करो।

१७८. मनुष्य मनसूबे बांधता है और परमात्मा उन्हें मिटा देता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१७९. वास्तविक आनन्द उसको मिलता है जिसका अन्तःकरण शुद्ध और पवित्र है।

१८०. शान्ति और मौन से धर्मात्मा पुरुष धर्म ग्रन्थों के रहस्यों को सीखता एवं लाभ उठाता है।

१८१. मन में चिन्ता और शोक का न होना वास्तविक एकान्त है।

१८१. धीरज और प्रेम से व्यवहार शुद्ध होता है।

१८३, सदा विनय और प्रेमपूर्वक ईश्वर का भजन करो।

१८४. सेवा और सन्मान पूर्वक साधु जनों का संग करो।

१८५. सभी प्राणियों का आहार भगवान से आता है।

१८६. प्रार्थना एकाग्रता पूर्वक होनी चाहिए।

१८७. तर्क के बीज बो कर स्वर्ग के फल की इच्छा करना मूर्खता है।

१८८, ईश्वर पर निर्भर रह कर ही दुनिया की गुलामी से छूटा जा सकता है।

१८९. ईश्वर-आज्ञा पालन करने पर ही सच्चा आनन्द मिलेगा।

१९०. भगवान् अपने भक्त को कभी अज्ञानी नहीं रहने देते।

१९१. गुरु का काम शिष्य को अपने सदृश बना लेना है।

१९२. भगवत् साक्षात् करने वाले का नाम विद्वान् है।

१९३. बन्दगी जो सम्पूर्ण हृदय के साथ न हो निष्फल है।

१९४. भगवान् की पूजा छोड़ कर जो दूसरों की पूजा करता है वह महा मूर्ख है।

१९५, मैं और मेरा इन दो शब्दों में ही सारे जगत के दुःख भरे हैं।

१९६. प्रिया क्या है ? करना और न कहना और अप्रिय क्या है ? कहना और न करना।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१९७. सच्चे धर्मात्मा की बोली धीमी होती है।

१९८. मन पांच प्रकार के होते हैं—(१) मुरदामन, जैसे, नास्तिकों का। (२) रोगी मन, जैसे पापियों का। (३) अचेत मन जैसे पेट भरों का। (४) उल्टा मन जैसे व्याज खाने वालों का। (५) स्वस्थ मन, जैसे सन्तों का।

१९९, स्वाध्याय, सत्संग, योगाभ्यास और नित्यकर्म परमोन्नति के साधन हैं।

२००. अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ो।

सेवा धर्म सब से उत्तम धर्म है।

दर असल दरदे दिल ही, इबादत खुदा की है ।
यह फ़ैज़े करदगार है, रहमत खुदा की है ।
हर दरदेमन्द दिल पर, खुदा मेहरबान है ।
यह दरदे दिल ही अस्ल में: इन्सान की जान है।
इन्सान हज़ार साल इबादत किया करे ।
दिल उसका सुबहो शाम रियाज़त किया करे ।
ज़िकरे खुदा के वास्ते, गो ज़िन्दगी हैं वकफ़ ।
महरूम है रजाए खुदा से, वह बदनसीब ।
गर उसका रहमो लुतफ़ की नेयमत नहीं मिली ।
हरगिज़ न जानिये, उसे भगवान के करीब ।
हर इक सांस ख्वाह करे जिन्दगी में सरफ़ ।
गर उसके दिल को दरद की, लज्जत नहीं मिली ।

—विनीत ब्रह्मानन्द—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri